"चुनौती" मलयालम भाषा के प्रगतिशील उपन्यासकार तकषी शिवशङ्कर पिल्ला के क्रांतिकारी उपन्यास 'ताट्टीयुटेमकन' का हिंदी अनुवाद है।

"ऐसे उपन्यास बहुत ही कम देखने में आते हैं, जिनमें कि मानव-जीवन के उन उपेक्षित अंगों के, समाज के उन अँधेरे हिस्सों के जीते-जागते चित्र हमें देखने को मिलें, जो हालाँकि यों सड़े-गले होते हैं; और जिनकी ओर झाँकने में भी जरा हिम्मत की जरूरत पड़ती है, पर जो हमें मादकता में से खींचकर चेतना की तरफ, और अँधेरे में से निकाल कर प्रकाश की तरफ़ ले जाते हैं।"

"भूले भटके यदि कोई दूसरे प्रकार की चीज,— याने, रास्ता सुझाने वाली—सामने आजाये, तो उसका स्वागत अवश्य होना चाहिये। यह "चुनौती" इसी प्रकार का एक छोटा सा सामाजिक उपन्यास है, मूल पुस्तक मलयालम भाषा में है।"

"चुनौती" भंगी-जीवन की एक सुन्दर कहानी है। लेखक इसे लिखने में काफी सफल हुआ है। भंगी को उसने हृदय की आँखों से, नजदीक से देखा है; और वास्तविकता को उसने अधिक महत्व दिया है।"

'वियोगीहरि'

चुनौती

[मूल मलयालम से अनूदित]

लेखक

तकषी शिवशंकर पिल्ला

अनुवादिका

भारती विद्यार्थी, बी० ए०, एल० टी०

१९५२

आत्माराम एण्ड संस

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

काश्मीरी गेट,

दिल्ली ६

प्रकाशक

रामलाल पुरी

आत्माराम एण्ड सन्स,

काश्मीरी गेट, दिल्ली ।

मूल्य दो रुपए आठ आने

मुद्रक

रामलाल पुरी

यूनिवर्सिटी ट्यूटोरियल प्रेस,

काश्मीरी गेट, दिल्ली ।

दो शब्द

बहुत बड़ी संख्या आज हमारे साहित्य में प्रायः ऐसे उपन्यासों और कहानियों की देखने में आती है, जिनमें निम्नस्तर के प्रेम के ही रंगीन स्वप्न होते हैं—मिलन और बिछुड़न के कुछ चटकीले चित्र। मेरे एक मित्र ने हँसते हुए मुझसे एक दिन कहा कि अगर कहानी लिखनी हो तो उसके लिए किसी खास "प्लाट" की ज़रूरत नहीं, वह बस इतना काफ़ी है कि, 'एक कोई सुन्दरी युवती थी और दूसरा सपनों के हिंडोले पर झूलनेवाला एक युवक; उस सुंदरी को उसने प्यार किया, पर असफल हुआ; और तड़प-तड़पकर उस पागल ने अपने प्राण दे दिये'। हाँ, चित्रों में भरने के लिये कहानीकार बेशक अपनी कल्पना के कुछ हलके और कुछ गहरे रंग चुन सकता है। स्टेशनों पर बिकने-वाली दर्जनों पत्रिकाओं में अकसर ऐसी ही रँगीली कहानियों की भरमार आप पायेंगे।

सचमुच ऐसी कहानियाँ और ऐसे उपन्यास बहुत ही कम देखने में आते हैं, जिनमें कि मानव-जीवन के उन उपेक्षित अंगों के, समाज के उन अँधेरे हिस्सों के जीते-जागते चित्र हमें देखने को मिलें, जो हालाँकि यों सड़े-गले होते हैं, और जिनकी ओर झाँकने में भी ज़रा हिम्मत की ज़रूरत पड़ती है, पर जो हमें मादकता में से खींचकर चेतना की तरफ, और अँधेरे में से निकाल कर प्रकाश की तरफ ले जाते हैं।

लेखक की असमर्थ कल्पना उन अपेक्षित अँधेरे हिस्सों तक उड़-कर पहुँच नहीं पाती, क्योंकि उसके पंख रसिकपन की गोंद से बुरी

तरह चिपक गये हैं, दूसरे उसे उसका प्रकाशक भी मजबूर करता है वैसी ही चीज़ लिखने के लिए, जिसकी बिक्री लाखों की नहीं तो कुछ हज़ारों की तो होनी ही चाहिए।

ऐसी विचित्र और दुःखद स्थिति में भूले-भटके यदि कोई दूसरे प्रकार की चीज़,—याने, हमें रास्ता सुझानेवाली—सामने आ जाये, तो उसका अवश्य स्वागत होना चाहिए। यह "चुनौती" इसी प्रकार का एक छोटा-सा सामाजिक उपन्यास है, मूल पुस्तक यह मलयालम भाषा में है।

"चुनौती" में एक कहानी है एक अभागे भंगी की—दलित वर्ग में भी जिसका स्तर सबसे नीचा है और जिसका पेशा दूसरा कोई अख्त्यार करने को तैयार नहीं, और उस भंगी की कहानी, जिसे शिक्षा के या उद्योग के और राजनीति के क्षेत्र में आगे आने का कभी मौक़ा नहीं दिया जाता। समाज बड़ा चतुर है, क्योंकि वह जन्म से ही अमुक वर्ग के व्यक्तियों को "भंगी बनाना" जानता है। एक तो भंगी साफ़-सुथरा रह नहीं सकता, और अगर वैसा रहे भी तब भी वह भंगी ही रहता है। समाज तो यह चाहता है कि वह मैला-कुचैला, अनपढ़, पियक्कड़ और क़र्ज़दार ही जन्म से लेकर मृत्यु तक बना रहे।

हमारे देश में भंगी सचमुच एक बड़ा जटिल प्रश्न है, जिसका उत्तर हमारे समाज को, हमारे शासन को और हरिजन-सेवक-संघ को देना है—देना ही होगा, साहित्यकार और कलाकार भी इस प्रश्न को छूने से न डरें। हमारी यह उपेक्षा इस महाप्रश्न के प्रति यदि ऐसी ही बनी रही, तो वह हमारे समाज की सारी हरियाली को भस्म कर देगी। कुछ ही दिनों में यह उपेक्षित प्रश्न एक भारी अभिशाप बन जायगा।

यह "चुनौती" भंगी-जीवन की एक सुन्दर कहानी है। लेखक इसे लिखने में काफ़ी सफल हुआ है। भंगी को उसने हृदय की आँखों से, नज़दीक से देखा है; और वास्तविकता को उसने अधिक महत्व दिया है।

अनुवाद भी सुन्दर हुआ है। आशा है कि अगले संस्करण की भाषा कुछ और भी परिष्कृत हो जायेगी। अनुवादिका से मेरा एक अनुरोध है कि इसी प्रकार कृपाकर मलयालम के अच्छे ऊँचे साहित्य का अधिक से अधिक रसास्वादन वे हिन्दी संसार को अवश्य कराती रहें।

हरिजन-निवास, दिल्ली
७—१—५२

वियोगीहरि

अनुवादिका की ओर से

स्वतन्त्र भारत का तकाज़ा है कि एक ऐसे भारतीय समाज का निर्माण हो जिस में जन्म, जाति, धर्म और पैसे पर आधारित उच्च-नीच, अपने पराये और पात्र-अपात्र का भेद-भाव नहीं रहे; जिसमें सब एक देश की सन्तान होने के नाते परस्पर बन्धुत्व, सौहार्द और समानता का व्यवहार करें, जिसमें किसी को कोई अभिमान हो तो भारतीय होने का अभिमान हो और कोई आकांक्षा हो तो राष्ट्र के कल्याण की आकांक्षा हो; और जिसमें देश की स्वतन्त्रता हरेक नागरिक के लिये प्राणों से बढ़कर प्यारी हो तथा जिसमें दुखित और दलित वर्ग कहलानेवाला कोई वर्ग न हो। लेकिन कौन कह सकता है कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद भी तथा मानवता की पुकार और आधुनिक युग की ठोकरों के बावजूद आज भी हम में से अधिकांश मध्ययुग के अनुदार और अर्थहीन विचारों और रूढ़ियों में जकड़े नहीं हैं और अपने व्यवहार से अपने को समाज-द्रोही साबित नहीं कर रहे हैं ?

उस स्वतंत्रता के मानी क्या जिससे हममें न्यायबुद्धि पैदा नहीं हुई और उस न्यायबुद्धि का मोल क्या जिसने दूसरों के दुख-दर्द को दूर करने के लिये हमें प्रेरित नहीं किया ? क्या भारत की स्वतंत्रता विदेशी-शासन से मुक्ति का ही दूसरा नाम होगी या वह नूतन आशा और उत्कर्ष का अग्रदूत होगी ?

पूज्य बापूजी ने भारत की आज़ादी की लड़ाई में साम्प्रदायिक एकता और अस्पृश्यता-निवारण अपने कार्यक्रम के दो प्रधान अस्त्र बनाये थे और उनके लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगाई थी, एक, राष्ट्र की शक्ति का परिचायक थी तो दूसरा, राष्ट्र की आत्मशुद्धि का

द्योतक था। पर क्या यह कहा जा सकता है कि हमने साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता के कुहासे को भेदकर उस मनुष्यता के दर्शन किये हैं जो हमें समाज के कल्याण में जीवन की सार्थकता ढूँढने को प्रेरित करती है ?

चुनौती एक क्रान्तिकारी कहानी है जिसे लेखक की लेखनी की सहज कला और उसके हृदय की गहरी मानवता ने मार्मिकता बना दिया है और जो एक गरीब हरिजन परिवार की तीन पुश्तों की स्थिति और संघर्ष का चित्र हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत करने के साथ साथ हमारे दिलों में एक दर्द पैदा करती है और मन में एक प्रश्न भी कि क्या हमारी लापरवाही, उदासीनता और स्वार्थान्धता से हमारे चारों तरफ़ एक विषाक्त और भयानक वातावरण पैदा नहीं हो रहा है ?

यह पुस्तक मलयालम भाषा के "तोट्टीयुटे मकन" (भंगी का लड़का) पुस्तक का हिंदी रूपान्तर है। इसके लेखक श्री तकरी शिवशंकर पिल्ला केरल के एक सुप्रसिद्ध प्रगतिशील लेखक हैं जिन की रचनाओं में अब तक ६ उपन्यास और ३०० से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आप मानव हृदय की हलचल तथा समाज के उपेक्षित श्रमजीवी वर्ग की स्थिति, आशा, अभिलाषा और संघर्ष का वास्तविक सजीव चित्रण करने में सिद्धहस्त हैं। आपकी भाषा अकृत्रिम, शैली सुन्दर और कहानी हृदयस्पर्शी होती है। आपने अपनी विशिष्ट प्रतिभा से आधुनिक मलयालम साहित्य में अपना एक प्रमुख स्थान बना लिया है और आपकी रचनाओं की तुलना किसी भी भाषा की उच्च रचनाओं से की जा सकती है।

क्या ही अच्छा होता "तोट्टीयुटे मकन" का हिन्दी रूपान्तर किसी अनुभवी लेखक के द्वारा होता। मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि इस पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर करने का साहस मैंने अपने हिंदी ज्ञान के

विश्वास के आधार पर नहीं किया, जिसको कल्पना से मैं पूर्णतः अनभिज्ञ हूँ, वरन् अपनी मातृभाषा की इस हृदयस्पर्शी कहानी से हिंदी जगत् को परिचित कराने के अपने लोभ का संवरण नहीं कर सकने के कारण किया। मुझे भय है, इसमें मूल पुस्तक का प्रसादगुण लाने में पूर्णतः सफल नहीं हो सकी हूँ।

हिंदी रूपान्तर में हिंदी पाठकों की रुचि का ख्याल करके यत्र-तत्र वर्णनों को संक्षिप्त किया गया है, भंगियों के बीच होनेवाले विनोदों के वर्णन करने में भी संकोच से काम लिया गया है। सिर्फ एक स्थल पर मैंने थोड़ा परिवर्तन कर दिया है। मूल ग्रन्थ में मोहन प्रतीकार की भावना से प्रेरित होकर म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट की कोठी को जलाकर खाक कर देता है। इस पुस्तक में दिखाया गया है कि वह कोठी को जला देने के लिये उतावला हो उठता है, पर उसके साथी यह कहकर उसके मन को फेर देते हैं कि "बदला तो लेना ही है, लेकिन कायरों की भाँति बदला लेने का विचार छोड़ दो। आवेश में आकर ऐन मौके पर अपने समाज को धोखा न दो। मेरे प्यारे भाई, अपने कर्तव्य को समझो और हमारा नेतृत्व करो।" मुझे खुशी है कि मूल लेखक ने इस अनुवाद को पसन्द किया है और उक्त परिवर्तन की स्वीकृति दी है।

अन्त में मैं इसका उल्लेख किये बिना नहीं रह सकती कि अगर मुझे अपने पति श्री देवदूत विद्यार्थी से समय समय पर प्रोत्साहन और सहायता नहीं मिलती रहती, तो मैं शायद ही इस अनुवाद को पूरा कर पाती। अखिल भारतीय हिंदी-परिषद के शीघ्रलिपि और मुद्रालेखन शिक्षक भाई अर्जुनराव का भी मैं आभार मानती हूँ जिन्होंने पाण्डुलिपि को टाइप करके तथा कई सलाहें देकर मेरी मदद की।

१, फ़ीरोज़शाह रोड,
नयी दिल्ली.

भारती विद्यार्थी.

चुनौती

पहला भाग

१

रातभर रब्बी को नींद जरा भी नहीं आई। वह बुखार और खाँसी से तंग था। दूसरे दिन सबेरे ठण्डक से उसे सारे शरीर में दर्द और सूजन मालूम हुई। उसने अपने लड़के घूरन को ओवरसियर साहब से ये सब बातें बतलाकर दो दिन की छुट्टी मांगने के लिये भेजा।

जब घूरन ने लौट आकर ओवरसियर साहब का जवाब अपने बाप को सुनाया तब उसे बिलकुल विश्वास नहीं हुआ कि वे ऐसा जवाब दे सकते हैं। वह पिछले तीस साल से गोपालपुर म्युनिसिपैलिटी में भंगी का काम करता आया है। इस अवधि में उसने मुश्किल से कुल ६-७ दिन की छुट्टी ली होगी। फिर भी तबियत ठीक नहीं रहने से दो दिन की छुट्टी मांगने पर यह जवाब मिला कि वे दूसरे आदमी को नियुक्त करेंगे। अपने वेतन का एक तिहाई वह हर महीने ओवरसियर साहब को नजर भी करता रहा है। रब्बी ने बेटे से फिर पूछा, "दूसरे आदमी को नियुक्त करेंगे, क्यों, ऐसा ही कहा है रे ?"

घूरन—"कहा है कि दूसरा आदमी काम करने लिये तैयार है?"

रब्बी—"आज ही नियुक्त करेंगे, ऐसा कहा है ?"

घूरन—"हाँ।"

रब्बी थोड़ी देर चुपचाप बैठा रहा। उसने सोचा, दूसरा आदमी नियुक्त हो जायगा तो अच्छा होने पर वह क्या करेगा ? वह तो चाहता था कि वह अपना काम अपने लड़के को देकर मरे। जितने ओवरसियर आये सबों से वह कहता आया है कि जब वह खुद काम करने में असमर्थ हो जायगा तब उसकी जगह पर उसके लड़के को ही रखा जाय। वह बराबर सबों को खुश रखने की कोशिश में रहता था।

रब्बी ने पूछा—"तुमने अपने को नियुक्त करने को नहीं कहा ?"

घूरन—"नहीं।"

रब्बी को यह सुन कर बड़ा गुस्सा आया। कमरे में पड़ी एक लकड़ी उसे मारने के लिये उठाई। लेकिन घूरन सामने से हट गया। चोट नहीं लगी। रब्बी खांसने लगा। लड़के को खरी-खोटी सुनाई। उसको लगा कि लड़के की ही बदमाशी है। यदि वह कह देता कि बाप की जगह पर वह काम करेगा तो ओवरसियर दूसरे को बहाल करने की बात ही नहीं सोचते। वह झुँझला कर बोला, "बदमाश कहीं का। तुम्हारी ढिठाई ही साहब को पसंद नहीं आई होगी।"

तीस साल से जिन पैखानों में वह काम करता आया है उनके लिये कोई दूसरा आ जाय, यह वह बूढ़ा सह नहीं सकता था। समय-समय पर पैखाने की मरम्मत करने के लिये वह मकान मालिकों को प्रेरित क्यों करता रहा है ? क्योंकि वह चाहता था कि उसके बेटे का काम सुगम हो जाय।

शाम को वह अपनी लाठी के सहारे बाहर निकला। पास में डेढ़ रुपया रख लिया। रात को देर से रास्ते पर बीच-बीच में बैठते,

रुकते अपने पैर घसीटते हुए वह घर लौटा। उसने बेटे को बुला-कर बतलाया, "कल सबेरे से तुम काम पर जा सकते हो। लेकिन तुमको एक महीने का वेतन नहीं मिलेगा।"

रातभर घूरन को नींद नहीं आई। तो क्या आखिर उसे पैखानों की सफ़ाई का काम करने जाना ही होगा ? दो बार उसे सफ़ाई का काम करने का मौका आया था। वह उसे पसन्द नहीं था।

उसी समय से उसका मन तरह-तरह की बातें सोचा करता था। उसे डर था कि एक न एक दिन उसे भी भंगी के काम में लगना ही होगा। कल से ही वह दिन शुरू होने वाला है ? आगे सारी जिन्दगी भंगी के ही काम में बितानी पड़ेगी ?

भंगी का काम शुरू करने पर वह जीवन कैसे बितायेगा, यह घूरन ने तय कर लिया। वह ताड़ी नहीं पियेगा। कुछ लोगों ने इसके पहले भी जब-जब पीने के लिये उसे बुलाया था, उसने इन्कार कर दिया था। आगे भी वह नहीं पियेगा। "क्या भंगी आदमी होकर नहीं जी सकता ?" यह विचार रातभर घूरन के दिमाग़ में चक्कर काटता रहा।

खूब सबेरे रब्बी ने बेटे को जगाया। एक-एक करके सब घरों के बारे में उसको अलग अलग बातें बता दीं और चेता दिया कि व्यवहार में नम्रता दिखाना, धृष्ट नहीं होना और काम सफाई से करना। घूरन ने सब मान लिया। भरे कण्ठ से रब्बी ने पुत्र को आशीर्वाद दिया, "भगवान् तुम्हारी मदद करेंगे। बाप की बाल्टी और कुदाली बेटे को मिल गयी। इसी से मेरे बेटे का गुज़ारा हो जायगा।" रब्बी ने बेटे के माथे को प्यार से चूम लिया। उसकी आँखें सजल हो गईं।

पिता का हार्दिक आशीर्वाद पाकर घूरन जब बाल्टी और कुदाली उठा कर निकलने लगा, बूढ़े ने भीतर से कहा, "उस कोने

से हांडी भी ले लो बेटा। उसमें अपने बाप के लिये थोड़ा मांड़ ले आना। तुम अपना पेट उधर ही भर लेना।"

घूरन ने जवाब में कुछ नहीं कहा। उसके चलने की आहट पाकर रब्बी ने पूछा, "हंड़िया ले ली बेटा ?"

घूरन ने "हाँ" कर दिया। रब्बी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, "हे भगवान्! मेरे बेटे को जीवन भर यह कमाई खाने का भाग्य होवे।"

इस तरह गोपालपुर के चन्दनवनवार्ड की सफ़ाई के काम में उस दिन एक युवक भंगी प्रविष्ट हुआ। वह वार्ड एक चौराहे पर से शुरू होता है। उस चौराहे पर एक होटल है। उस होटल से काम शुरू करने का रब्बी का आदेश था। वहाँ के पैखाने के जितने खाने थे सब साफ़ करके जब घूरन बाहर निकला, होटल का नौकर हाथ में दो रोटियाँ लेकर आया और घूरन से कहा, "उस स्नानघर के बाहर ताख पर एक मग है। उसे ले आओ। थोड़ी चाय भी देता हूँ।"

घूरन बिना जवाब दिये ही जाने लगा। नौकर ने उसे बुलाया, "रे तुम्हीं को कह रहा हूँ।"

घूरन ने जवाब दिया, "मुझे नहीं चाहिये।"

नौकर को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह भीतर चला गया। होटल के मैनेजर ने पैखाना से आकर जब भंगी के खाली हाथ ही चले जाने की बात सुनी तब कहा, "लेकिन उसने पैखाना खूब साफ़ किया है।" उस दिन भंगी का चाय और रोटी नहीं लेना एक विचित्र बात थी। थोड़ी देर तक उसी के बारे में चर्चा होती रही। इस घटना से लोगों ने नये भंगी को पहचान लिया।

बारह बजे के पहले उसे दो दिन का काम खतम करना था। वह भी सफ़ाई के साथ। काम के लिये जाते समय ओवरसियर से
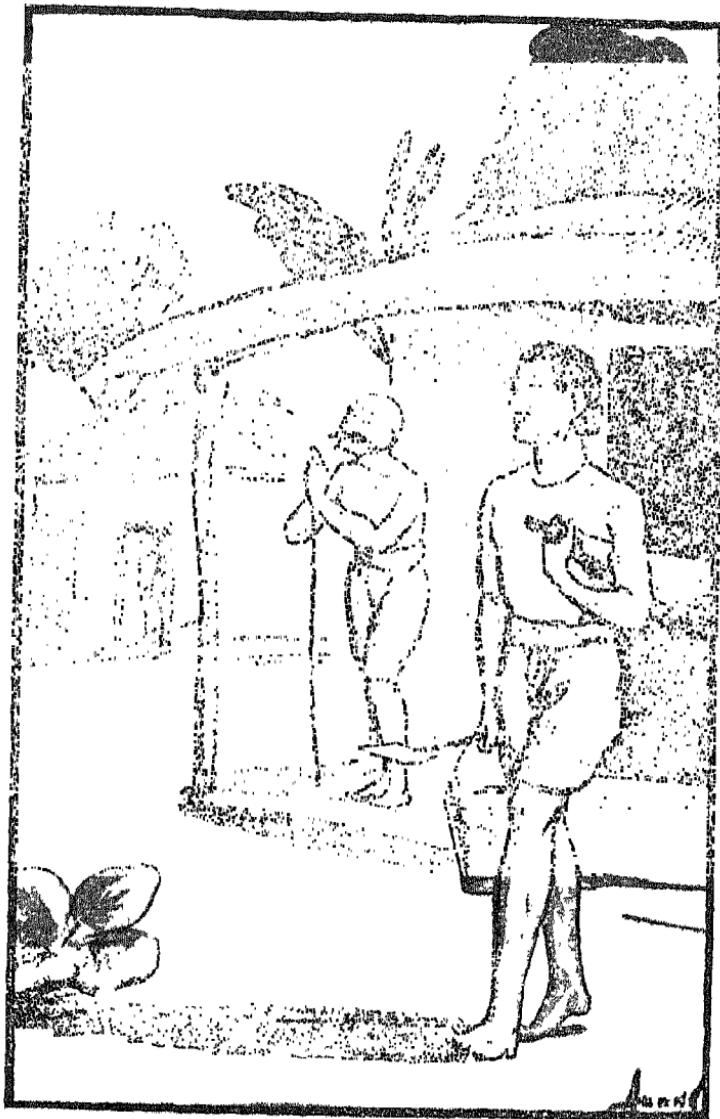
दो बार मुलाकात हुई। साहब ने दोनों बार चेताया कि ठीक से सफ़ाई नहीं करेगा तो काम से हटा दिया जायगा।

बारह बज गये। अभी उसका काम बहुत बाकी था। कई जगहों पर उसको बासी भात मिला। पत्ते पर डालकर कई लोगों ने उसे खाने के लिये बुलाया भी। मानों उसको कुछ खिलाने के लिये बड़े आतुर हों। घूरन को उनका यह भाव अच्छा नहीं लगा। उसने कुछ नहीं खाने का ही निश्चय किया।

किसी की चाय या भात उसे नहीं चाहिये। एक घूँट पानी पीने के लिये मिल जाय तो काफ़ी है। एक लड़की रास्ते पर के नल से पानी ले जा रही थी। घूरन बहुत भूखा-प्यासा था। बोला, "जरा पानी पिला दो।"

लड़की भंगी को देख कर अपनी नाक बन्द करती हुई चली गई। घूरन को प्यास बुझाने को पानी नहीं मिला। काम देर से खतम हुआ। उसकी गाड़ी भर गई। उसको ठेलते हुए ले जाकर शहर के बाहर डिपो में गिराना था। गाड़ी इतनी भरी थी कि रास्ते पर कहीं-कहीं पर मैला गिरता जाता था। वह उसे भी उठाकर गाड़ी में फिर डालता जाता था।

सब काम से छुट्टी पाकर घूरन थका मांदा घर पहुँचा। बूढ़ा भीतर पड़ा खाँस रहा था। कलेजा मुँह को लाने वाली उसकी खाँसी सुनते ही घूरन घबड़ा गया। वह बाप के लिये कुछ लेकर नहीं लौटा था। रब्बी बिना कुछ खाये पिये उसकी राह देख रहा था। बाहर पैर की आहट सुनते ही बूढ़े ने पुकारा, "बेटा!"

घूरन ने डर के मारे जवाब नहीं दिया। बाप ने पूछा, "कुछ लाया है रे? गला सूख रहा है।" घूरन बाहर ही खड़ा रहा। बूढ़े ने भीतर से पूछा, "तूने क्या खाया है?" उसका भी जवाब नहीं। घूरन के लिये वहां रहना ही असह्य हो गया। ऐसा लगा

मानो वह आग से घिरा हुआ हो। रब्बी दरवाजे की तरफ खिसकते हुए बोला, "जज साहब ने मेरे बारे में कुछ पूछा है क्या? तुमने कहा नहीं कि मैं बीमार पड़ा हुआ हूँ?"

घूरन तब तक वहाँ से चल चुका था। रब्बी ने दरवाजे से बाहर देखा, "हाय रे, लड़का नहीं आया है। ओह, मेरे प्राण निकले जा रहे हैं।" रब्बी कान खड़े करके पड़ा रहा। सोचने लगा, "आज काम ज्यादा होने से उसके लौटने में देर हो रही है। लेकिन मैं भूखा प्यासा पड़ा हुआ हूँ, यह उसको मालूम नहीं है क्या?"

२

होटल में ग्राहकों की भीड़ के समय मैनेजर को जरा भी फुरसत नहीं है। घूरन जाकर ऐसी जगह पर खड़ा हो गया जिससे मैनेजर उसे देख सके। एक घण्टा बीत गया। लेकिन उसको किसी ने भी नहीं देखा। देखे भी तो कोई पहचानेगा नहीं। भंगी को याद करना या पहचानना यह सबेरे ही होता है। भंगी को पहचानने के लिये उसे अपने निश्चित रास्ते से आना चाहिये। लेकिन पीछे का वह दरवाजा इस समय बन्द है। घूरन ने आवाज की, पुकारा। लेकिन किसी ने सुना ही नहीं। सबेरे का समय थोड़े ही था जब कि लोग भंगी की इंतजार में रहते हैं और जरा आहट पाते ही दरवाजा खोल देते हैं!

घूरन होटल की चहारदीवारी लांघ करके पीछे के दरवाजे से आकर खड़ा हो गया। बहुत देर के बाद एक नौकर आया। उसने पूछा, "तुम कौन हो? यहाँ क्यों खड़े हो?" वही नौकर उसको सबेरे-सबेरे रोटी दे रहा था और अब उसको पहचान भी नहीं रहा है।

घूरन ने कहा, "मैं रब्बी का बेटा हूँ।"

इतने में एक और आदमी आया। पूछा, "रब्बी कौन है?"

घूरन—यहाँ का भंगी।

आदमी—तुम इस समय क्यों आये हो?

घूरन—बापू ने अभी तक कुछ खाया नहीं।

आदमी—इस समय यहाँ क्या मिलेगा? उस जूठन के डब्बे के पास जाकर खड़े हो जाओ। लोग जूठे पत्ते उसमें फेंकते हैं। कुछ बचाखुचा मिले तो निकाल लेना।

जूठन के डब्बे में जिसमें पत्ते फेंके जाते थे, कुत्ते छीनाझपटी कर रहे थे। घूरन वहाँ से चुपचाप चला गया। पास ही में जज साहब की कोठी थी। उसने सोचा, "चल कर देखूँ। कोठी पर कुछ मिल जाय।" लेकिन फाटक पर सिपाही था। उसने पूछा, "कौन है?"

घूरन—रब्बी का बेटा।

सिपाही—रब्बी कौन?

घूरन—यहाँ का भंगी।

सिपाही—क्या चाहते हो?

घूरन—थोड़ा मांड। मेरा बाप यहाँ तीस साल से भंगी का काम करता है। जज साहब उसको मानते हैं। वह बिना कुछ खाये पिये बीमार पड़ा है। जज साहब को जरा खबर कर दीजिये।

सिपाही—सब लोग अभी प्रार्थना कर रहे हैं। इस समय कुछ नहीं हो सकता।

घूरन—प्रार्थना कब तक खतम होगी?

सिपाही—एक घण्टा लगेगा।

घूरन ने सोचा, बाप उसको सूखे कण्ठ से पुकार रहा होगा। घर में ताजा ठण्डा पानी तक नहीं है। दो दिन पहले लाकर रखा

हुआ पानी होगा। लेकिन उसे भी लेकर क्या वह पी सकेगा?

घूरन वहाँ से निराश होकर जज साहब की कोठी के बगल-वाले घर में गया। वहाँ एक बूढ़ी एक दीप के सामने बैठे रामनाम जप रही थी। घूरन चिल्लाया, "माई जी, बहुत भूखा प्यासा हूँ।"

बूढ़ी ने डाँटा, "यह चौथा आदमी है जो आया है संध्या के समय भीख माँगने।"

घूरन बूढ़े बाप के लिये कुछ लेकर ही लौटने के विचार से कई घरों में कुछ पाने की उम्मीद में गया। अब बड़े-बड़े घरों में जाकर माँगने के बदले उसने छोटे-छोटे गरीब लोगों के घरों में जाकर मांगने का निश्चय किया। वहाँ उसे सफलता हुई। हर जगह से थोड़ा बहुत मिल ही गया। और काफ़ी रात तक घूमते रहने से हाँडी आधी भर गई। बाप का काम इससे चल जायगा, ऐसा सोच कर वह घर की तरफ़ चल पड़ा।

यह था पहले ही दिन का अनुभव। घूरन ने आज बहुत कुछ सीख लिया। वह समझ गया कि पैखाना जब भरा पड़ा रहता है तब घर वालों को भंगी का बहुत ख्याल रहता है और सब उसे थोड़ा बहुत खुशी से देना चाहते हैं। पर सबेरे की सफ़ाई हो चुकने के बाद कोई भंगी की तरफ़ आँख उठाकर ताकता भी नहीं।

म्युनिसिपैलिटी की गाड़ी के ऊपर रखकर लाया हुआ खाना खाकर ही वह इतना बड़ा हुआ है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आगे भी उसे वही खाना खाना चाहिये। अपना काम ठीक से करके अपनी कमाई से साफ़ सुथरा खाना क्यों नहीं खाया जाय? लेकिन यह इच्छा पूरी हो सकेगी? तो क्या गन्दगी साफ़ करनेवाला भंगी गन्दा खाना ही खाय, यही नियम है? सबेरे ही हाँड़ी लेकर निकलने से बूढ़े के पेट के लिये तो काफ़ी मिल जायगा। फिर अपने लिये?

साफ़ सुथरे कपड़े पहने तीन चार आदमी बातें करते जा रहे थे। विचारहीन घूरन उन लोगों के बीच से निकला। उनमें से एक आदमी ने डाँटकर कहा, "ज़रा हटकर के नहीं चल सकता है ? छिः, कैसी दुर्गन्ध है ?"

घूरन ने कुछ जवाब नहीं दिया। जवाब तो उसके मन में उठा। लेकिन उसने उसे दबा लिया। दूर हटकर चलना ही ठीक है। बाबू लोगों को दुर्गन्ध आती है लेकिन अपने भीतर ही जो दुर्गन्ध रखे घूम रहे हैं सो ? इसका उन्हें ख्याल ही नहीं होता।

एक कोठी से संगीत की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। एक दूसरे घर से तरकारी बघारने की सुगन्ध आ रही थी। सड़क के दोनों तरफ़ के घर रोशनी से प्रकाशपूर्ण हो मानो प्रकट कर रहे थे कि उनमें भाग्यवान् लोग निवास करते हैं। घूरन ने सोचा, ये सब आनन्द और सुख उन लोगों का पैखाना साफ़ करनेवाले भंगियों की वजह से ही तो हैं ? यदि भंगी न रहें और कोई भंगी का काम करना स्वीकार ही न करे तो क्या होगा ? सब अपनी नाक पकड़कर भागने लगेंगे। नगर में सब जगह गन्दगी, कचड़ा और दुर्गन्ध भर जायेगी। सब शोभा नष्ट हो जायगी। नगर उजड़ जायगा। मगर हाँ, वे भंगी बनाना जानते हैं। भंगी ज़रूर रहेंगे।

वह एक सुहावनी चाँदनी रात थी। दूरी पर जो चहारदीवारी दिखाई देती है वह नाइट सौइल डिपो है (Night soil depot)। उससे भी आगे काली काली नज़र आनेवाली भंगियों की झोंपड़ियाँ हैं। टूटी फूटी बेमरम्मत हालत में वे उजड़ी-सी दीखती हैं। उनमें से उत्तर की आख़री झोंपड़ी में उसका बाप, पड़ा-पड़ा बेटे की रट लगाता होगा।

घूरन तेज़ी से चलने लगा। मन में ख्याल आया कि बाप माँड लेकर कितनी अधीरता से पीने लगेगा, पीकर कितना तृप्त

होगा और उसे कितनी शान्ति मिलेगी। वह उस दिन का अपना सारा अनुभव और लोगों ने जैसी सहानुभूति उसे दिखाई, सब बाप को सुनायेगा।

वह जल्दी घर पहुँचने के लिये नाइट सोइल डिपो से होकर निकला। उस दिन का गिराया हुआ मल चाँदनी में दिखाई दे रहा था। वह गढ़ा भी पार करके घूरन घर पहुँचा। लेकिन भीतर से कोई आवाज़ सुनायी नहीं पड़ी।

उसने पुकारा, "बापू!" कोई जवाब नहीं। उसने फिर से पुकारा। फिर भी कोई जवाब नहीं। घूरन भीतर घुसा। पूछा, "क्या सोये हो? माँड भात लाया हूँ, बापू।" फिर भी बाप से कुछ जवाब नहीं मिला। हंडिया नीचे रखकर घूरन ने बाप को टटोला। शरीर ठण्डा हो गया था। उसने घबड़ाकर जोर से पुकारा, "बापू, बापू!" फिर से हिला डुलाकर पुकारा, "बापू!" लेकिन कोई जवाब नहीं। घूरन "बापू, बापू" कहकर जोर से रोने लगा। उसका बापू इस दुनियाँ से कूच कर चुका था।

३

एक मिट्टी के तेल का दिया उस झोंपड़ी में जल रहा है। बीच में पुराने फटे चिथड़ों से ढककर बूढ़े का मृत शरीर रखा है। चारों ओर कई भंगी बैठकर रामनाम जप रहे हैं। एक कोने में घूरन सिकुड़कर पड़ा है। एक भंगी जो ईसाई बन गया था हटकर थोड़ी दूर पर बैठा है।

नाम-जप के बीच एक ने पूछा, "रब्बी चचा की उम्र क्या थी?"

इसका उत्तर कोई नहीं दे सका। सबों में अधिक उम्रवाले सूरी ने कहा, "जब से मैंने होश संभाला तब से चचा को इसी तरह देखा है। हमारे बीच में कोई भी इतनी बड़ी उम्र तक नहीं

रहा है। और कुछ नहीं तो पेट में दर्द, माता या और कोई दूसरी छूत की बीमारी आ जाती है। ये सब नहीं तो क्षय हो जाता है। चालीस वर्ष तक मुश्किल से कोई जीता है।"

इसके बाद घूरन की माँ का सवाल उठा। वह गोपालपुर की एक भंगिन थी। जब घूरन एक ही साल का था तभी वह मर गई थी।

जप खतम करके अब लोग बातचीत में लगे। सूरी ने कहा कि रब्बी चचा भाग्यवान् था। लेकिन इसका मतलब किसी की समझ में नहीं आया। तब सूरी ने बतलाया कि उसे बीमार होकर पड़े रहना नहीं पड़ा। यह सबों ने मान लिया। सूरी ने आगे कहा, "भाग्य क्या है? आदमी चलते फिरते मर जाय तो यही भाग्य है।"

दूर बैठे हुए जोसफ़ ने कहा, "यह कैसा भाग्य है?"

सूरी—तब भंगी का दूसरा भाग्य हो ही क्या सकता है?

बतहू को जोसफ़ का आशय मालूम हो गया। जब से वह ईसाई बना तब से वह उसका भी मत-परिवर्तन करने की कोशिश में रहता है। बतहू ने पूछा, "तो भाग्य क्या है जी?"

जोसफ़ ने थोड़ा रुष्ट होकर कहा, "हमने जन्म ही क्यों लिया है? भगवान् की स्तुति करने के लिये है। मरने के बाद हमें मोक्ष प्राप्त हो, इसलिये होश में ही धार्मिक विधि स्वीकार करके मरना अच्छा है।"

यह सुनकर सब हँस पड़े। जोसफ़ को गुस्सा आया। उसने कहा, "तुम सब लोग अविश्वासी हो।"

बारह बज गये। महावीर ने पूछा, "इस तरह बैठे रहने से कैसे काम चलेगा?"

सब मिलकर राय करने लगे। मुर्दे को गाड़ने का काम रात को ही खतम करना ठीक होगा। सबेरे सबों को अपने-अपने काम पर जाना है।

सूरी ने घूरन से पूछा, "क्यों रे, मुर्दा कहाँ गाड़ा जाय ?" घूरन पड़ा-पड़ा सिसक रहा था। महावीर उसको सांत्वना देने में लगा था। "एक दिन सब को मरना ही है। दुःखी होने से क्या फ़ायदा ? बिना कष्ट के बूढ़ा मर गया तो भला ही मानना चाहिये।"

लेकिन घूरन के हृदय की व्यथा कौन समझ सकता था ! उसकी एक साल की उम्र से क्या-क्या कष्ट सहकर बूढ़े ने उसको पालपोसकर बड़ा किया था। उसको लगा कि उस दिन बूढ़ा पानी के बिना ही एकाएक मर गया है। उसीने अपने बाप को मारा है।

सूरी ने बतलाया, "मुर्दघट्टी ले जाकर गाड़ने में वहाँ कुछ खर्च पड़ेगा।"

चरिता ने कहा, "जो खर्च पड़ेगा उसका प्रबन्ध करना पड़ेगा। नहीं तो काम कैसे चलेगा ?"

जोसफ़ ने अपनी राय दी, "गिरजे के हाते में क्यों न गाड़ा जाय ? ज्यादा खर्च भी नहीं पड़ेगा। पादरी साहब बहुत अच्छे आदमी हैं। मैं उनसे मिलकर बातें करूँ तो वे प्रार्थना की विधि भी मुफ़्त पूरी कर देंगे।"

पर जोसफ़ की राय पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।

घूरन ने हिसाब जोड़ा। छः रुपये लगेंगे। अपनी वास्तविक स्थिति उसने उन लोगों को बतला दी।

चरिता ने कहा, "कोई बात नहीं। तुम सबेरे निकलो। इतना पैसा मिल जायगा। हाल ही में जो दो तीन शव-संस्कार हुए थे उनकी उसने याद दिलायी। उनका खर्च किसी तरह निभ गया न ? जिन-घरों में काम करता है वहाँ जाकर अपनी हालत बतलानी चाहिये। इस से काम चल जायेगा। लेकिन हाँ, मुर्दा दो तीन दिन पड़ा रहेगा। फिर भी दिल को यह तसल्ली तो होगी कि हमने अन्तिम संस्कार ठीक तरह से पूरा किया।"

घूरन को उस दिन का अपना सारा अनुभव याद आया। सब बातें सविस्तार सबों को सुनानी चाहीं। लेकिन सिर्फ इतना ही कहा, "मैं किसी से कुछ मांग नहीं सकता।"

सब फिर सोचने लगे। कुछ तय नहीं हो पाया। तब सूरी ने कुछ तय करने के लिये जोर दिया।

महावीर ने कहा, "सुबह होने के पहले ही हम अहाते के भीतर ही कहीं क्यों न गाड़ दें ?"

चरिता ने पूछा, "वह एक अपराध होगा न ?"

महावीर—"कौन जानेगा ? हम बाहर किसी से नहीं कहें तो ठीक है।" बतहू ने पूछा, "उस दिन भुजंगी की स्त्री को वहीं बड़े आम के पेड़ के नीचे ही तो गाड़ा था ? चचा को भी वैसे ही गाड़ा जाय तो क्या हर्ज है ?"

सबों को यह प्रस्ताव ठीक जंचा। वैसा ही करने का सबों ने निश्चय किया। इस शर्त पर कि कोई बाहर किसी पर यह जाहिर न करे।

महावीर ने घूरन को उठाया। घूरन ने बाप की ओर देखा। ऐसा लगा मानो वह सो रहा हो। वही उसकी चिन्ता करनेवाला एकमात्र व्यक्ति था। आगे "बापू" कहकर वह किसको पुकारेगा और कौन उसको "बेटा" कहकर पुकारेगा ?

सब मिलकर शव को बाहर उठा ले आये और नहलाया। रब्बी का चेहरा मुस्कराता-सा दीखता था। दुःख से घूरन का हृदय फटने लगा। कफन के लिये उसके पास कपड़ा तक नहीं था। महावीर और बतहू दोनों ने मिलकर कपड़े का इन्तजाम किया।

दो आदमियों ने फावड़ा लेकर गड्ढा खोदना शुरू किया। डिपो में कुत्ते जोर जोर से भूंकने लगे। गड्ढा तैयार होने पर शव उसमें रखा गया। घूरन ने मुट्ठी भर मिट्टी उठाकर तीन बार गड्ढे

में डाली। अति दारुण स्वर में एक बार 'बापू' शब्द उसका कलेजा फाड़ता हुआ निकला।

गड्ढा पूरकर सब लोग हट गये तो वहाँ कुत्ते इकट्ठे हो गये मानो वहाँ का रहस्य जानना चाहते हों।

४

होटल के किराये दार ने मैनेजर से शिकायत की कि भंगी आकर चला गया। लेकिन पैखाना गन्दा रह गया है। उधर जाना भी मुश्किल है।

तब नौकर ने पिछले दिन शाम को भंगी के आकर लौट जाने की बात सुनाई।

सब के घर में भी वही शिकायत थी। भंगी आकर लौट गया। लेकिन पैखाना गन्दा पड़ा था। उस दिन भंगी के बारे में लोगों में खूब चर्चा हुई।

दोपहर को घूरन अपनी गाड़ी ठेलते हुये नाइट सोइल डिपो की तरफ़ जा रहा था। उसने बहुतों को नाक पकड़े हट कर जाते देखा। उसकी गाड़ी में जो थी दुर्गन्ध की चीज़! उसके बाप की नाक तो टेढ़ी थी मानो बदबू से बचने के लिये सिकोड़ते-सिकोड़ते टेढी हो गयी हो। उसका ऊपरी होठ भी मानो इसी कोशिश में ऊपर की तरफ़ मुड़ गया था। शायद जब वह पहली बार पैखाना सफ़ाई के लिये हाथ में कुदाल और बाल्टी लेकर पैखाने में घुसा होगा तभी ऐसा हो गया होगा। शायद उसका दादा भंगी नहीं था। मगर अब तो भंगी की एक जाति ही बन गयी है। शायद उसका भी चेहरा बिना उसके जाने ही आगे चल कर बाप के चेहरे जैसा टेढ़ा हो जायेगा।

नाइट सोइल डिपो में इस समय काफी भीड़ थी। भरी

गाड़ियाँ ला लाकर खाली की जा रही थीं। घूरन भी डिपो में पहुँचा। वह पिछले दिन के उपवास और जागरण से बहुत उदास और थका था। उसकी थकावट देखकर महावीर आगे बढ़ा और उसकी गाड़ी को ठेलकर गड्ढे की ओर कर दिया। उसे खाली करते हुये उसने पूछा, "क्यों जी, आज इतना कम क्यों है ? सब घरों में नहीं गये क्या ?"

घूरन—सब घरों में गया था।

महावीर को एक विनोद सूझा। भंगी का विनोद ! "कल सबों ने कम ही खाया होगा।"

चरिता जो खड़े-खड़े सुन रहा था हँस दिया और बोला कि घूरन गाड़ी बिना पूरा भरे ही खींच लाया है।

जोसफ ने कहा, "गोरों के यहाँ पैखाना सफाई का काम आसान होता है।" इस तरह सब पैखाने के बारे में अपने-अपने अनुभव सुनाने लगे।

घूरन को भी अपने दो दिन के अनुभव की बात कहनी थी। बहुत थके रहने पर भी उसने कहा, "पैखानों में तो इतना भरा पड़ा है कि कुछ कहने का नहीं। थोड़ा बहुत मैंने निकाला। एक एक संडास देखने लायक था। लोगों ने ठूँस-ठूँस कर खाया होगा। लोगों को इसका जरा भी ख्याल नहीं रहता होगा कि एक आदमी को ही यह सब साफ करना पड़ता है। उनका पैखाने में घुसना क्या है, चारों तरफ गन्दा करके छोड़ना है।"

बतहू ने पूछा, "तो क्या एक आदमी को ही साफ करना पड़ता है ऐसा सोचकर लोग बिना खाये ही रहें ?"

दुखी ने उसमें जोड़ा—"खायें। लेकिन मनमाने खाकर पैखाना बेहिसाब गन्दा करके भंगी के ऊपर क्यों बरस पड़ते हैं ?"

सूरी ने कहा, "उन लोगों को सिर्फ खाने की फिक्र रहती है।

पैखाने की सफ़ाई से उन्हें कोई मतलब नहीं। यही तो दिक्कत है।"

एक दूसरे भंगी ने अपना दस साल का अनुभव कहा, "मेरे वार्ड में तीन चौथाई लोगों को अपच की शिकायत रहती है।"

इस पर भी सूरी को कुछ कहना था। "पैसे वाले पेट का ख्याल किये बिना ही खाते जाते हैं, तब पचे कैसे ? और ग़रीब जो भी पाते हैं, खा जाते हैं इसीलिये उनको भी अपच हो जाता है।"

सबों का काम खतम हो गया। सब को अपने-अपने घर जाने पर कुछ न कुछ खाने को मिलेगा। लेकिन घूरन को ? महावीर ने पूछा, "घूरन, घर में तुम्हारे खाने के लिये कुछ है ?" घूरन ने जवाब नहीं दिया। महावीर ने कहा, "तुम चलो, हमारे ही घर।"

दोनों साथ चल पड़े।

५

दो-दो आने, चार-चार आने करके इस तरह घूरन को हरेक घर से आज पैसे मिले। उसने न मांगा, न इन्तजार ही किया। उस दिन लोग खुद उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे।

घूरन को उस दिन काम ज्यादा करना पड़ा। फिर भी लौटते समय उसे थोड़ा सन्तोष था। समझ गया कि ठीक तरह से सफ़ाई करने वाले भंगी की कहीं पूछ नहीं होती। पैखाना गन्दा ही छोड़ दिया जाय और उसकी बदबू घरों में फैल जाय तब लोगों को भंगी की याद अपने आप हो आती है और वे उसे ढूँढ़ने लगते हैं। भंगी में भी कोई गुण है और उससे पैदा होने वाली एक शक्ति है। लेकिन वह उसे पहचान नहीं पाता। जज साहब उसके बाप को मानते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि उसका बाप मर गया तो उन्होंने बहुत सहानुभूति दिखायी और उसको चार आने पैसे दिये। सेठ जी ने पहले तो उसको डाँटा। बाद को उसे खुश

रखने की फिक्र में रहते थे। खैर, भंगी भी एकदम अगण्य नहीं है। लोग उससे भी डरते हैं। पैखाना गन्दा होने पर बड़े लोगों को भी भंगी से मीठी-मीठी बातें करनी ही पड़ती हैं।

घूरन ने कई बातें सीख लीं और अभी बहुत कुछ सीखना बाकी था। और सीखकर उसको बहुत कुछ करना भी था।

घूरन गाड़ी ठेलते हुये डिपो में पहुँचा। अरे, डिपो में कोई दिखाई नहीं दे रहा है। सब काम खतम करके चले गये क्या? मगर मेरे आने में ज्यादा देर भी तो नहीं हुई। कोई खास बात जरूर है। फाटकपर पहुँचते पहुँचते कुछ असह्य दुर्गन्ध उसे आई! दूर पर उसे बड़े आम के पेड़ के पास कोई लाल सड़ी चीज पड़ी दिखाई दी। वहाँ की मिट्टी भी ढीली पड़ी थी। थोड़ी दूर पर कुत्ते खड़े गुर्रा रहे थे। कई भंगी हट कर खड़े-खड़े देख रहे थे। घूरन गड्ढे के पास पहुँच गया।

कुत्तों ने गड्ढे से रब्बी का सड़ा शरीर आधा बाहर खींच कर चेहरा और गर्दन काट कुतर डाला था। आँखें ताकती-सी लग रही थीं। महावीर घूरन को पकड़ कर हटा ले गया। साधारणतः मुर्दा गाड़ देने के साथ साथ दुख भी थोड़ा दब जाता है। लेकिन भंगी मानो उसका भी अधिकारी नहीं है। घूरन को अपने बाप की सड़ी गली लाश को बीभत्स रूप में भी देखना बदा था।

लेकिन दूसरे भंगियों के सामने वह सवाल नहीं था। रब्बी का शरीर कुत्ते खा जायं या कीड़े, उनके लिये दोनों बराबर थे। उनके सामने सवाल यह था कि नाइट सोइल डिपो में मुर्दा गाड़ने की बात प्रकट हो गयी है। उसके लिये क्या जवाब दिया जायगा?

चरिता ने कहा, "मैंने उसे मुर्दघट्टी ले जाने के लिये तभी कहा था।"

जोसफ ने कहा, "मैंने इसीलिये बतलाया था कि गिरजाघर के

हाते में ले जाकर गाड़ा जाय। ऐसा होता तो अब यह सवाल ही नहीं उठता।"

दुखी ने कहा, "मैंने तो जोर देकर कहा था कि गड्ढे की गहराई काफी नहीं है।"

अब इसका जवाब घूरन को ही देना होगा। उसके बाप के कारण सबों पर यह विपत्ति आ गयी है। सब इधर-उधर भागकर छिप गये। वहाँ सिर्फ घूरन और महावीर रह गये। सड़क पर ओवरसियर साहब साइकिल लिये खड़े थे।

घूरन सड़क की ओर चला। महावीर भी साथ चला। ओवर-सियर साहब ने गौर से घूरन को देखा और गंभीर मुद्रा बनाये पूछा, "उधर क्या पड़ा है रे ?" घूरन ने नम्रता से कहा, "मेरे बाप की लाश।"

ओवरसियर साहब—वह इधर कैसे आयी ?

घूरन ने जवाब नहीं दिया। गलती तो हुई ही थी। क्या जवाब देता ! महावीर ने कहा, "बहुत गहरा खोदकर ही गाड़ा गया था।"

ओवरसियर गुस्से से काँप रहे थे। पूछा, "गाड़ने में कौन-कौन शामिल थे ?"

घूरन ने सोचा, अपनी गलती के लिये सबों को क्यों फंसाया जाय ? लेकिन सच्ची बात छिपाई भी नहीं जा सकती थी। वह असमंजस में पड़ गया।

ओवरसियर साहब ने सबों को डाँटा। सबों को उन्होंने भागते देखा था। मन में कहा, "सबों को ऐसा सबक सिखलायेंगे कि हमेशा के लिये याद रखेंगे।"

महावीर और घूरन ने बड़े परिश्रम से फिर से गड्ढा खोद-कर मुर्दा उसमें गाड़ दिया। एक नया सवाल अब खड़ा हो गया। सब भंगी मिल कर एक ओर हो गये। घूरन की मदद के लिये सिर्फ महावीर था। महावीर ने सदा साथ देने का वचन दिया।

घूरन उसके कन्धे पर अपना सिर रख कर रोने लगा। महावीर की आँखों से भी आँसू बहने लगे। घूरन के आँसू पोंछते हुये उसने कहा, "रोओ मत भाई, कोई न कोई उपाय निकल ही आयेगा।"

घूरन—भैया, तुम्हीं मेरे एकमात्र मददगार हो।

महावीर—काम छोड़ना पड़े तब भी मैं तुम्हारा साथ दूँगा।

सब भंगियों ने आपस में सलाह-मशविरा किया कि सूरो, महावीर और घूरन उन लोगों के प्रतिनिधि बनकर ओवरसियर साहब से जाकर मिलें।

६

सड़क के किनारे कई हिस्सों में बंटी हुई एक झोंपड़ी है। वह है वहाँ का ताड़ीखाना। हरेक हिस्से में बिक्री होती है।

ग्राहकों की भीड़ ज़रा कम हो गयी है। रात के दस बजे का समय है। लेकिन ताड़ी-खाने के नियमित ग्राहकों के अभी लौटने का समय नहीं हुआ है। हर हिस्से से जोर-जोर से बातें सुनाई पड़ती हैं।

पश्चिमी छोर की कोठरी के बाहर दरवाजा छोड़कर चरिता, जासफ, दुखी और बतहू गोलाई में बैठे हैं। बीच में चार खाली और दो भरी बोतलें और थालियाँ पड़ी हैं। दूसरे हिस्सों के सामने भी भंगी इसी तरह बैठे हैं।

आज भंगियों को वेतन मिला है। सब आनन्द मनाने आये हैं। कितना भी शोरगुल हो, दूकानदारों को उससे कोई शिकायत नहीं होती।

चरिता ने बतहू से पूछा, "वेतन से तुम्हें कितना मिला है जी?"

बतहू—मुझे आठ मिले, तुमको?

चरिता—साढ़े सात।

चरिता—साढ़े सात ? साढ़े सात क्यों ?

चरिता—जोसफ को नौ रुपये मिले हैं। पिछले महीने में उसको छ: ही मिले थे।

दुखी को एक सन्देह था। उसने पूछा, "तब क्या हम लोगों को ठीक ठीक वेतन नहीं मिलता है ?"

चरिता ने एक प्याली में ताड़ी उंडेलते हुए कहा, "वह तो ओवरसियर साहब ही जानते है।"

जोसफ ने कहा, "लेकिन इस महीने में रब्बी मामा का मुर्दा डिपो में गाड़ने के अपराध में सबों के वेतन से एक अच्छी रकम काटी गयी है।"

दुखी ने कहा, "यह बात सच है।"

बगलवाले हिस्से के सामने सूरी और दूसरे साथी बैठे थे। चरिता ने पूछा, "सूरी भैया, तुम्हारे वेतन से इस महीने में कुछ कटौती नहीं हुई क्या ?"

सूरी—हाँ हाँ, हुई है।

सूरी मित्रों के साथ उठ कर पास आ गया। दूसरे लोग भी जो दूसरी जगह पर बैठे थे उठ कर चले आये। चर्चा का विषय सबों के मन के लायक था। सबों को मालूम था कि रब्बी की लाश डिपो में गाड़ने से इस बार सबों के वेतन से काटा जायेगा।

जोसफ—घाटा हम क्यों उठावें ?

सूरी—तब क्या करना चाहिये ?

किसी ने कहा, "हमारा घाटा घूरन पूरा करे।"

सूरी हँस दिया "घूरन कहाँ से देगा ? उसको काम में लगे ही कितने दिन हुए हैं फिर पहले दो महीने उसको वेतन भी तो नहीं मिलेगा।"

चरिता—मुर्दघट्टी में ले जाने के लिये मैंने उसी समय कहा था। मुझे अपना पैसा मिल जाना चाहिये।

सूरी—देगा कौन ?

चरिता—कोई भी दे।

महावीर थोड़ी दूर पर खड़े खड़े बीड़ी पी रहा था। उसने कहा, "तब ले लेना।"

चरिता—लूंगा, चरिता मर्द है तो लेगा।

महावीर—तुम्हारा बाप भी नहीं ले सकता।

चरिता—मेरे बाप का नाम क्यों लेते हो ?

महावीर—हाँ, लेता तो हूँ। तुम क्या कर लोगे ?

चरिता महावीर की ओर झपटा। एक ने चरिता को और एक ने महावीर को पकड़ लिया। दोनों खूब गाली बकने लगे। कौन किसको गाली देता है किसी को पता भी नहीं चलता था। दूकानदार और बाहरी लोग भी इकट्ठे हो गये।

इतने में पुलिस के सिपाही पहुँच गये। एकदम सन्नाटा छा गया। सिपाहियों ने चरिता, सूरी और महावीर-तीनों को एक-एक थप्पड़ लगाया। सबके सब हाथ जोड़कर खड़े-कांपने लगे।

वेतन की रकम ताड़ी पर स्वाहा हो गयी। इतना ही नहीं अगले महीने फिर कटौती का एक नया कारण पैदा हो गया।

थोड़ी देर की निःशब्दता को भंग करते हुए दुखी ने पूछा, "गत महीने में बतहू भैया को मार खानी पड़ी थी न ?"

किसी ने जवाब दिया, "हाँ।"

दुखी—क्या ये पुलिस वाले हमारे वेतन पाने के दिन की ताक में रहते हैं ? हर महीने ऐसा ही होता है। इस समय कहाँ से आ धमके ?

जोसफ ने कहा, "यह दिन उनको याद रहता है।

"लेकिन क्या किया जाय ? इन पुलिस वालों के घर के पैखानों की सफ़ाई करना छोड़ दिया तब भी मार खानी पड़ती है।" महावीर को जो कुछ कहना था एक ही साँस में कह डाला।

सब भंगियों को लगा कि उनको वेतन बराबर-बराबर मिल जाना चाहिए। तब हरेक का क्या माहवार वेतन है उसका पता चल जायगा। पूरी रकम लेना भी आसान हो जायेगा। पुलिस से डरने की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी। हर महीने वेतन पाने के दिन नियमपूर्वक इस तरह की चर्चा होती थी। आज भी हुई। सबों ने सुनी। निश्चय भी किया कि सबों को मिलकर एक संगठन बनाना चाहिये।

महावीर ने आगे कहा, "मैं पहले ही कह चुका हूँ कि हमें संगठित होना चाहिये। कल ओवरसियर साहब सुनेंगे तो उनसे भी डांट खानी पड़ेगी और आठ आना जुरमाना भी देना पड़ेगा। यह तो हर महीने का दस्तूर-सा हो गया है।"

भाग २

१

हाफ पैंट और गंजी पहने सिर पर एक रुमाल तिकोनाकार में लपेटे एक नौजवान भंगी चन्दन वार्ड के घरों के पैखाने साफ करता हुआ दिखाई पड़ता है। बराबर काटी हुई छोटी छोटी मूछें, सुदृढ़ शरीर, साफ धुली हुई गंजी और हाफपैंट देखकर यह अन्दाज लगाना मुश्किल है कि यह आदमी भंगी हो सकता है। उसके हाथ में यदि भंगी के साधन—कुदाली और बाल्टी—न रहें तो शायद ही कोई उसे भंगी समझे।

वह कोई बड़ी बात सोच रहा है। उसके सोचने के लिये बहुत-सी बातें हैं। वह अच्छा बुरा सब समझने वाला है। वह शाम को पीकर कहीं सड़क के किनारे पड़े रह कर दूसरे दिन काम पर जाने वालों में नहीं है। वह रोज नहाता है, सफाई का ध्यान रखता है और खाना खाकर आराम से सो जाता है।

उसकी आँखों में तथा चेहरे पर भंगियों में पाया जाने वाला दब्बूपन या अपने प्रति तुच्छ-भाव नहीं है। वह स्वतन्त्र विचार रखने वाला और समझ बूझ कर काम करने वाला है। यह है घूरन।

इस तरह के भंगी को लोग क्यों कर पसन्द करेंगे ? जो भंगी रोज़ नहाये, अपनी दाढ़ी बनाये, अपने कपड़े साफ करके पहिने, उस पर लोग अवश्य ही उंगली उठायेंगे और आवाज़ कसेंगे कि यह तो बड़ा शौकीन है।" वे यही चाहेंगे कि उनका भंगी पिय-

क्कड़ हो, कुछ समझने वाला न हो। उसे साफ रहने और साफ कपड़ा पहनने की जरूरत ही क्या है?

घूरन अपना काम ठीक से किया करता था। इसलिये कोई उसे कुछ कहने में हिचकता था। वह खुद सभी घरवालों से नर्मी से व्यवहार करता था। उनके नज़दीक आकर उनसे उसने बहुत कुछ सीखा है। मगर उनकी देखी अभी बहुत-सी बातें उसको अपने जीवन में उतारनी हैं।

ऐसा कोई घर उस मुहल्ले का नहीं था जिसके मालिक को उसने कुछ न कुछ सबक नहीं सिखाया। यहाँ तक कि जज साहब को भी नहीं छोड़ा। जज साहब के पैखाने के किवाड़ का पल्ला टूटा हुआ था। उसे बनवा देने के लिये उसके बार-बार कहने पर भी कोई फल नहीं हुआ। एक रात जोरों से पानी बरसा। झकास से पैखाने का बर्तन भर गया। और बर्तन का मैला बाहर की नाली में गिर कर दुर्गन्ध फैलाने लगा। घूरन भला नाली क्यों साफ करता? उल्टे उसने पड़ोसी से जज साहब पर नालिश करवा दी।

घूरन के काम से किसी को शिकायत नहीं थी। शिकायत केवल इस बात की थी कि वह कहा करता था कि पैखाने का इस्तेमाल करते समय घर वाले सावधानी से काम लें।

इसलिये उसके काम से सन्तुष्ट रहते हुए भी लोग उसे बहुत पसन्द नहीं करते थे। लेकिन निश्चित तारीख को उसे पैसे दे देने की मानों सबों को फिक्र-सी रहती थी। घूरन के मांगने की नौबत नहीं आती थी।

अपने काम की मुस्तैदी और होशियारी से घूरन को एक मनोबल प्राप्त हो गया था जो दूसरे भंगियों में नहीं था। पर एक आदमी था जिसके सामने दूसरों की तरह वह भी भीगी बिल्ली बन जाता था। वह था म्युनिस्पैलिटी का ओवरसियर। उसे सब

लोग एक बला समझते थे। किसी भंगी को अपने ठीक वेतन की बात मालूम नहीं थी। घूरन भी अपने वेतन की बात नहीं जानता था। एक न एक कारण बताकर ओवरसियर साहब सबों के वेतन से कुछ काट करके ही पैसे देते थे।

वेतन पाने के दिन सब ओवरसियर साहब के बारे में अपने अपने दिल का गुबार निकालते थे। हर बार महावीर कहता था कि हम सबों को एक होकर इस अन्याय को दूर करने का उपाय सोचना चाहिये। अब घूरन भी संगठन बनाने के फायदों के बारे में सोचने लगा। उसने सोचा कि अगर सब भंगी संगठित हो जायं तो उनका वेतन हर महीने कटना बन्द हो जायगा और ओवरसियर साहब और दूसरे लोगों के अन्याय का शिकार नहीं होना पड़ेगा। हम लोगों को जरूर संगठित होना चाहिये। यह एक बड़ा काम है। लेकिन बहुत जरूरी है। यह सोचकर उसने एक बार महावीर की बातों का समर्थन करते हुए कहा कि "सब पेशों के लोग आजकल अपना-अपना संगठन बनाकर अपनी उन्नति के लिये कोशिश करते हैं। हम लोगों को भी अपना संगठन बनाना चाहिये।" बस, क्या था, भंगियों में उसका मान था ही। सबों ने उसके कहे अनुसार चलने का वचन दिया और घूरन को ही संघ बनाने का काम सौंप दिया।

घूरन यह देखकर भीतर ही भीतर बहुत खुश हुआ कि भंगियों पर उसका इतना प्रभाव है। उसे ऐसा लगा कि उसके जीवन के लिये एक बड़ा कार्य मिल गया है। संघ का उद्घाटन किससे कराया जाय, इसका भी उसने निश्चय कर लिया। संघ के खर्च के लिये सब चन्दा देंगे। जरूरत पड़ी तो शुरू में वही सब खर्च उठा लेगा। संघ में उसे कुछ महत्वपूर्ण स्थान मिलेगा ही। सब साथी उसके अनुयायी बनेंगे। तब ओवरसियर ही क्यों, सारी

म्युनिसिपैलिटी उससे डर मानने लगेगी। घूरन इस तरह के विचारों में डूबने उतराने लगा।

२

उस दिन शाम को सभा हुई। सभा में जो भाषण हुए वे मानों भंगियों के विचारों की प्रतिध्वनि थे, जोश से भरे हुए थे। वक्ताओं ने "भंगियों का समाज में क्या महत्वपूर्ण स्थान है," यह मार्मिक शब्दों में बतलाया, उनके दयनीय और तिरस्कृत जीवन का रोमांचकारी वर्णन किया, उनके सुप्त आत्माभिमान को जगाया और उन्हें ललकारा कि उन्हें भी समाज में मनुष्य की तरह रहने का अधिकार है। वे संगठित हो जायं तो सारा समाज उनका लोहा मान ले और अपना दुर्व्यहार त्याग दे।

भंगियों में उस दिन संघ बल की भावना पहले-पहल जागृत हुई। उन्होंने एक स्वर में अपनी कुछ मांगें पेश कीं। उनकी मांगों की आवाज विशाल अन्तरिक्ष में गूंज उठी। अधिकारियों का दिल धड़कने लगा। वे सोच में पड़ गये कि भंगियों की आज की ललकार कार्य रूप में परिणत हो गयी तो क्या होगा?

संघ बन गया। एक-एक करके फार्म पर दस्तखत करके सब भंगी सदस्य बन रहे हैं। महावीर, चरिता, बतहू, सूरी, दुखी सबों ने दस्तखत किये पर घूरन? सभा का आयोजन करने वाला घूरन कुछ सोचता हुआ अलग एक कोने में बैठा है। किसी ने उसकी तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया। सब अपने संघ की स्थापना के जोश में फूले नहीं समाते थे।

पर घूरन चिन्तित था। अध्यक्ष की कुरसी के चारों ओर की भीड़ उसे पागलों की भीड़ जैसी लगी। वक्ताओं के भाषणों से वह घबड़ाया। वे भाषण कैसे उत्तेजित करने वाले और भंगी

होने का अभिमान पैदा करने वाले थे। घूरन तो भंगी जीवन से छुटकारा पाना चाहता था। पर वक्ताओं ने सिर्फ भंगियों के हक के लिये लड़ने की सीख दी। उन की बात पर चला जाय तो सब तरफ से झगड़ा मोल लेना पड़ेगा। वे क्या चाहते हैं ? हड़ताल करो, काम बन्द कर दो, नौकरी से बरखास्त हो जाओ, भूखों मरो और हमेशा के लिये भंगी बने रहो।

वक्ताओं का जोर जोर से चिल्लाना और भंगियों का आवेश में आना, घूरन को हास्यास्पद मालूम हुआ । उसने मन ही मन कहा, नहीं, यह संघ खतरनाक है । इससे सब का विनाश निश्चित है।

फार्म पर दस्तखत करके सदस्य बन जाने पर सब नारे लगाने लगे। वे नारे दिल को हिला देने वाले थे। कितनी ताकत थी उनमें ! भूख और मेहनत से थके चेहरे नहीं, पर चमकती आँखें और लाल चेहरे चारों तरफ दिखायी दे रहे थे। हाथ मुट्ठी बाँधे जब ऊपर उठते थे, तो एक अजीब समां बँध जाता था। मानों समुद्र की ऊँची लहरें सामने की सब बाधाओं को लांघकर आगे निकल जाने के लिये मचल रही हों। घूरन को लगा कि वह भी उनमें मिल जाय, वह भी नारे लगाये। पर उसके दिल के कोने में छिपा बैठा एक डर--अपने साथियों के अनियंत्रित आवेश का डर-उसके सामने छा गया और वह उनकी जमात से निकल कर बाहर चला गया ।

नारों की बुलन्द आवाज के बाद पदाधिकारियों का चुनाव करने का काम शुरू हुआ। सभा के अध्यक्ष को ही संघ का अध्यक्ष बनाया गया। बाकी पदाधिकारियों के लिये नाम पेश करते समय किसी ने घूरन का नाम पेश किया। पर घूरन तो हाजिर था नहीं। सदस्यों की सूची में भी उसका नाम नहीं था।

अध्यक्ष को ताज्जुब हुआ। सभा का संयोजक ही ग़ायब। सब आश्चर्य करने लगे। घूरन के जीवन में बाप की मृत्यु की घटना के बाद यह दूसरी प्रधान घटना थी। सभा के नारे और वक्ताओं के उत्तेजनापूर्ण शब्द उसके कानों में गूँजते रहे। उसका दृढ़ विश्वास था कि उसके बाद उसके वंश में कोई भंगी का काम नहीं करेगा। उसे तो भंगी कहलाने तक से घृणा हो गयी थी। फिर इस प्रकार के भंगी संघ का सदस्य वह क्यों बने? बाकी लोग संघ की तरफ से लड़ें। उसका फल तो कुछ उसे भी मिलेगा ही। इस प्रकार वह अपने मन को समझाने लगा। अपने सीधे सादे साथियों वह निबट लेगा। उन्हें जरूरत पड़ने पर पैसा देनेवाला उसके सिवा दूसरा था कौन?

३

दूसरे दिन सबेरे जब घूरन काम पर निकला तब सब से पहले ओवरसियर साहब से भेंट हुई। उन्होंने घूरन को गौर से देखा, और पूछा, "क्यों जी, तुम लोगों का संघ बन गया?" घूरन का कलेजा धड़कने लगा। वह जवाब देने लगा, "मैं उसमें मैं......मैं उस में......।" उसका जवाब मुँह में ही रह गया। ओवरसियर साहब ने आगे कहा, "तुम्हें प्रेसिडेण्ट साहब ने बुलाया है। तुमको नौकरी देने में ग़लती हुई। तुम बहुत ढीठ हो यह मुझे पहले ही मालूम था। फिर भी मैंने तुम्हें काम पर तैनात किया। यह मेरी मूर्खता थी।" घूरन जानता था कि उसको अपनी निर्दोषिता साबित करने के लिये एक लम्बा चौड़ा व्याख्यान देना पड़ेगा। वह कहना चाहता था—"मैं उसमें नहीं था। लेकिन उसके मुँह से आवाज ही नहीं निकली। ऐसा भी मौका आ खड़ा होगा, इसका उसे ख्याल ही नहीं हुआ था। इसलिये

उससे तुरंत कोई जवाब देते नहीं बना। ओवरसियर साहब भी उसके जवाब के लिये ठहरनेवाले नहीं थे। दूसरी तरफ को चल दिये।

घूरन को डर लगा कि नौकरी छूट जायगी। "यह मेरे ग्रहदोष का ही फल है। मुझे कुछ नहीं करना चाहिये था। मैंने कैसी मूर्खता की। कौन जानता था कि भंगियों का संघ बनाने का यह फल होगा। अब म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट को क्या जवाब दूंगा?" उस दिन काम करते समय यही सब विचार बार बार उसके दिमाग़ में उठते रहे। वह सोचने लगा कि प्रेसिडेण्ट साहब के सवालों के जवाब में उसे क्या-क्या कहना चाहिये?

शाम को घूरन ओवरसियर साहब के डेरे पर गया। दूर से ही जमीन पर माथा टेककर उसने माफी के लिये प्रार्थना की। लेकिन साहब ग़ुस्से में थे। उसको निकाल देने का ही निश्चय कर लिया था। प्रेसिडेण्ट साहब से भी मंजूरी मिल गयी थी।

ओवरसियर का विचार जानकर घूरन घबड़ाया। एक लिफाफा जिसमें कुछ नोट रखे थे, निकालकर ओवरसियर के पैर के पास रख दिया। उसे ओवरसियर ने कनखियों से देखा। लेकिन नहीं देखने की-सी मुद्रा बनाकर कहने लगे, "मैं क्या कर सकता हूँ? प्रेसिडेण्ट साहब बहुत नाराज हैं। मैं ज्यादा से ज्यादा इस बार सिफारिश कर सकता हूँ।"

कुछ देर के बाद घूरन प्रेसिडेण्ट साहब के घर गया। प्रेसिडेण्ट साहब कमरे में बैठे थे। घूरन जाकर बाहर खड़ा हो गया। उसने खिड़की से ओवरसियर साहब को प्रेसिडेण्ट साहब से बातें करते देखा। सोचा, उसी के बारे में बातें हो रही हैं। उसकी व्याकुलता बढ़ गई। कभी बैठता, कभी उठता, कभी इधर उधर टहलने लगता। आशा थी कि ओवरसियर साहब जरूर बचा लेंगे।

अन्त में प्रेसिडेण्ट साहब बाहर आये। घूरन का दिल धड़कने लगा। एक एक क्षण उसको असह्य लगने लगा। पीछे खड़े ओवरसियर के चेहरे से वह कुछ भी अनुमान न लगा सका। प्रेसिडेण्ट साहब नाराज मालूम पड़ते थे। उन्होंने ओवरसियर से पूछा, "यही है वह आदमी ?"

ओवरसियर—जी हाँ।

प्रेसिडेण्ट—ठीक, देखने में ही बड़ा ढीठ मालूम होता है।

ओवरसियर—(सिर खुजलाते हुए गिड़गिड़ाकर) फिर भी सीधा आदमी है।

प्रेसिडेण्ट—(घूरन से)—क्यों रे, तुम्हीं ने संघ बनाने के लिये सभा बुलायी थी ?

घूरन के मुँह से आवाज नहीं निकली। पहले से जो जवाब मन में सोच रखा था सब घबड़ाहट में भूल गया। उसे खड़ा रहना भी मुश्किल मालूम होने लगा।

प्रेसिडेण्ट—ऐसे बदमाशों की क्या जरूरत है ? चन्दनवन वार्ड के बहुतों ने मुझ से कहा है कि यह आदमी बड़ा बदमाश है। क्यों रे, तूने ही संघ बनाया है ?

"मैं उसका सदस्य नहीं हूँ।" घूरन के बिना सोचे ही यह वाक्य उस के मुँह से निकल गया। उसको थोड़ी शान्ति मिली।

प्रेसिडेण्ट—तू उसका सदस्य नहीं है ? छपी हुई नोटिस में संयोजक की जगह पर इसी का नाम है न ओवरसियर ?

ओवरसियर—जी हाँ, लेकिन सभा शुरू होते ही मालूम होता है उठकर चला गया।

प्रेसिडेण्ट—क्यों यह ठीक बात है ?

घूरन—जी सरकार।

अब घूरन की हिम्मत बढ़ गयी।

प्रेसिडेण्ट—तू क्यों उठकर चला गया ?

घूरन—सभा में जो बातें हुईं मुझे अच्छी नहीं लगीं।

प्रेसिडेण्ट—सभा में क्या बातें हुईं ?

घूरन—वक्ताओं ने कहा कि सब अधिकारी चोर हैं। हमें पूरी मजदूरी भी नहीं देते हैं। हमें हड़ताल करके अपना हक लेना चाहिये। और भी कितनी ही बातें कहीं।

प्रेसिडेण्ट—(ओ० से)—देखिये, कैसे ये ग़रीब लोग ग़लत रास्ते पर ले जाये जाते हैं।

घूरन की हिम्मत और भी बढ़ गयी। उसने कहा, "उन्होंने यह भी कहा कि बिना लड़े, बिना तोड़े फोड़े कोई हमारी बात नहीं सुनेगा।"

प्रेसिडेण्ट—नोटिस पर भी तो बहुत सी बातें छपी हुई हैं। तूने उस पर दस्तख़त क्यों किया ?

घूरन—मजदूर संघ के अध्यक्ष के कहने से मैंने किया।

प्रेसिडेण्ट—संघ में कौन कौन शामिल हुए हैं ?

घूरन—बतहू, चरिता, दुखी, सब शामिल हुए हैं।

ओवरसियर—घूरन चाहे तो इस संघ को तोड़ सकता है।

प्रेसिडेण्ट—कैसे ?

ओवरसियर—ये तीनों मुखिया घूरन के कर्जदार हैं। सब इससे कुछ न कुछ उधार लेते रहते हैं। और इसकी बात मानते हैं।

प्रेसिडेण्ट—क्यों, यह बात ठीक है ?

घूरन—जी हुजूर।

प्रेसिडेण्ट—तो तुम्हारे पास पैसा बहुत है क्या ?

घूरन—जी नहीं, हुजूर, थोड़ा जमा किया है उसीसे जरूरत पड़ने पर उन सब की मदद कर दिया करता हूँ।

ओवरसियर—पैसा कमाने और बचाने में यह आदमी

होशियार है। दारू, ताड़ी नहीं पीता। कुछ बचाकर अपने लिये घर और जमीन लेना चाहता है।

प्रेसिडेण्ट—क्यों रे ?

घरन—जी हुजूर।

प्रेसिडेण्ट—अच्छी बात है। ठीक रास्ते पर चलना। मैं भी तेरी मदद करूँगा।

ओवरसियर—अच्छा तो यह होगा कि यह आप ही के पास अपना सब पैसा जमाकर दे और आगे भी करता जाय। और बाद को आप ही इसके लिये जमीन और घर का इन्तज़ाम कर दें।

घूरन ने हाथ जोड़कर कहा, "हाँ, हुजूर, बड़ा उपकार होगा।"

प्रेसिडेण्ट—लेकिन सब से पहले तुम्हें यह संघ तोड़ना है।

घूरन—कोशिश करूँगा, हुजूर।

प्रेसिडेण्ट—कोशिश करने की बात नहीं है। उसे तोड़ना ही होगा। ओवरसियर साहब भी इसमें तुम्हारी मदद करेंगे।

घूरन की सब घबड़ाहट दूर हो गई। तरक्की करने का नया रास्ता भी उसे दिखायी देने लगा। वह बहुत खुश होकर वहाँ से लौटा।

४

ओवरसियर ने घूरन के साथ एक कार्य योजना बनायी। घूरन ने वचन दिया कि वह उस योजना के मुताबिक अपना हिस्सा पूरा करेगा। ओवरसियर ने आश्वासन दिया कि ऐसा करना उसके हक़ में लाभकारी होगा। यह तय हुआ कि आगे दोनों मिलकर काम करेंगे।

दूसरे दिन घूरन सवों से पहले नाइट सोइल डिपो जाकर लौटा। इस तरह अपने साथियों से मिलने से बच गया। तीसरे दिन भी ऐसा ही किया। उस शाम को ओवरसियर ने उससे

पूछा, "किस किस से मिले हो, क्या हुआ ?" घूरन इसका जवाब क्या देता ? वह न तो किसी से मिला था और न कुछ कहा ही था। साथियों से मिलने पर उसे उन्हें भी तो जवाब देना था। वह उन के सामने अपना मुँह कैसे खोलेगा ? भेंट होने पर वे जरूर सवाल करेंगे। तब वह क्या कहेगा ? घूरन असमंजस में पड़ गया।

लेकिन कितने दिन तक इस तरह लुकछिपकर काम कर सकता था ? दूसरों से बिना बातें किये कौन रह सकता है ? घूरन ने ओवरसियर साहब से कहा, "बातें करने के मौके की तलाश में हूँ।"

ओवरसियर झुंझलाकर बोले, "मौके की तलाश में ही रहेगा तो संघ के मजबूत हो जाने के बाद क्या कर सकता है ?"

घूरन—अभी सब मुझ से नाराज हैं। दो दिन में सब शान्त हो जायेंगे। तब हमारा काम आसानी से हो जायगा।

इस जवाब को सुनकर ओवरसियर साहब चुप हो गये।

दो दिन बाद डिपो में दो तीन साथी भंगियों से घूरन की मुलाकात हुई। जब घूरन पहुँचा, वहाँ महावीर, सूरी और बतद्दू मौजूद थे। दूर से ही उनको देखकर घूरन का कलेजा धड़कने लगा। हिम्मत बाँध कर उसने डिपो में प्रवेश किया। वह अपने काम में ऐसे लग गया मानों उसने उनको देखा ही न हो। वे सब आपस में कुछ बातें करते रहे। आखिर महावीर घूरन के पास आया और पूछा, "कहाँ थे तुम इतने दिन ? दिखायी नहीं पड़े ?"

घूरन का कण्ठ सूख गया। रुक-रुक कर बोला, "मैं—मैं—यहीं⋯यहीं पर था।"

तब तक सूरी और बतद्दू भी पहुँच गये। सूरी ने आश्चर्य से पूछा, "यह कौन है ? घूरन ! अरे, भले आदमी ! हम लोगों को

संघ में शामिल करा कर खुद निकल भागे ?"

बतहू—भागा कहाँ ? उस दिन चन्दा का पैसा पास में नहीं रहने से मेंबर नहीं बना।"

महावीर—कल परसों तुम काम पर भी नहीं आये ?

घूरन—आया था। लेकिन मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।

महावीर—तुम संघ में शामिल क्यों नहीं हुए ? सभा समाप्त होने के पहले ही कहाँ चले गये ?

घूरन में अब तक बोलने की हिम्मत आ गयी। उसने कहा, "महावीर भैया, मैं सच कहता हूँ। मुझे वह सब पसन्द नहीं आया। वहाँ कैसी विचित्र बातें कही गयीं। हड़ताल और लड़ाई झगड़े की बातें। क्या संघ बनाने का यही मतलब है ?"

सूरी ने पूछा, "क्या लेक्चर की बातें ठीक नहीं थी ?"

घूरन—उनमें पूरी-पूरी बदमाशी भरी थी। हम लोगों को नौकरी से अलग करने की चाल थी। उनके कहे मुताबिक हम करें तो हम सब जेल में ठूंस दिये जायेंगे।

बतहू—तब हमें अपने हक के लिये नहीं लड़ना चाहिये ?

घूरन—लेकिन उसके लिये क्या यही एक तरीका है कि अपने अधिकारियों को मारो, पीटो ? दूसरा कोई तरीका नहीं हो सकता ? संघ में जो-जो शामिल हुए हैं, उनमें से एक की भी अब नौकरी नहीं रहेगी। प्रेसिडेण्ट साहब को सब मालूम हो गया है।

महावीर ने कहा, "लेकिन तुम्हीं तो लेक्चर देने वालों को बुला लाये थे ?"

घूरन—मुझे क्या मालूम था कि वे इस तरह के आदमी हैं।

बतहू को गुस्सा आया, पूछा, "उन्होंने क्या गलत कहा ? वे बहादुर हैं। प्रेसिडेण्ट साहब और ओवरसियर साहब की उनके सामने कुछ नहीं चलेगी। वे हमारे लिये सब कुछ करेंगे। मजदूरों

के लिये कितने दफे वे जेल जा चुके हैं।"

घूरन भी गरम होकर बोला, "पूछते हो कि उन्होंने क्या ग़लत कहा ? लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या उन्होंने कहा कि हमें अच्छा बनना चाहिये ?

बतहू—नहीं तो क्या ?

घूरन—आदमी को अक्ल होनी चाहिये। बात समझने की शक्ति चाहिये। क्या उन्होंने कहा कि हमें भंगी का काम छोड़ कर अच्छे आदमी बनना चाहिये ? जो पैसा मिलता है उसे ठीक तरह से खर्च करना सीखना चाहिये। बेकार खर्च नहीं करना चाहिये। जो सीखना चाहिये सो तो सिखाया नहीं और सिखाया क्या—तो हल्ला मचाओ। मैंने उम्मीद की थी कि हमें ठीक रास्ता दिखलायेंगे। लेकिन हुआ उल्टा।

बतहू—उन्होंने जो कुछ कहा, ठीक ही कहा।

घूरन—हाँ, हाँ, उसी के मुताबिक चलना। प्रेसिडेण्ट साहब एक-एक करके सब को ठीक कर देंगे।

इसके जवाब में किसी ने कुछ नहीं कहा। सूरी और बतहू ने घूरन की बातों को काटना चाहा। लेकिन कैसे काटें, उनको मालूम नहीं था। घूरन की बातें उन्हें अच्छी नहीं लगीं। लेकिन संघ में शामिल होने से नौकरी से ही हाथ धोना पड़ेगा यह उन्होंने नहीं सोचा था।

महावीर ने पूछा, "क्या तुम प्रेसिडेण्ट से मिले थे ?"

घूरन—हाँ मिला था। पहले उन्होंने कहा कि सबों को निकाल देंगे। दूसरे ही दिन सबों को निकालने वाले थे। लेकिन ओवरसियर साहब और मैं—दोनों ने उनसे प्रार्थना की कि ऐसा न करें। हमने कहा, इस बार माफ़ कीजियेगा। सब संघ से अलग हो जायेंगे। नौकरी से निकालने पर सब कष्टों में फंस जायेंगे।

अब तक घूरन अपनी गाड़ी साफ़ कर चुका था। वह चला गया। सूरी, महावीर और बतहू—तीनों ने आपस में चर्चा की। महावीर ने कहा, "यह हो सकता है। ओवरसियर साहब का रुख बहुत कड़ा हो गया है। मालूम नहीं, हमें दण्ड देने के लिये क्या क्या सोच रहे हैं?"

बतहू–लेकिन क्या संघ के प्रेसिडेण्ट को ये बातें मालूम नहीं हैं?

५

भंगी बस्ती के दो भंगी मुअत्तल कर दिये गये। बतहू और सूरी को भी काम से हटाने की अफवाह थी। बाहर से नये भंगियों को बुलाने की बात सुनने में आने लगी। उनके आने पर संघ में शामिल होने वाले सब भंगी निकाल दिये जायेंगे—यह डर सबों के मन में समा गया।

भंगियों को घर में भी शान्ति नहीं मिलती थी। औरतें भंगी संघ बनाने और उसमें शामिल होने की बात को लेकर मर्दों को कोसने लगीं। तनख़ाह पाने का दिन आ गया और चला गया। किसी को एक पैसा भी नहीं मिला। घूरन से लोग थोड़ा बहुत कर्ज ले सकते थे। अब उससे कर्ज पाने की कोई आशा नहीं थी।

घूरन से कोई कर्ज मांगता तो साफ़ कह देता कि प्रेसिडेण्ट साहब का हुक्म है कि संघ में शामिल होने वालों को एक पैसा भी नहीं देना। मैं किसी को पैसा देकर प्रेसिडेण्ट साहब का कोप-भाजन बनना नहीं चाहता।

भंगियों में भुखमरी और असन्तोष बढ़ने लगा। साथ-साथ पैखाने की सफ़ाई भी अधूरी होने लगी। चारों तरफ़ उनके काम के बारे में शिकायतें होने लगीं। बहुतों को निकाल दिये जाने की धमकी दी गयी।

संघ की तरफ़ से प्रेसिडेण्ट साहब के पास एक स्मरण पत्र भेजा गया जिस में भंगियों की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति की मांग की गयी। अखबारों में लेख भी निकाले गये। संघ के प्रतिनिधियों ने प्रेसिडेण्ट से मिलने के लिये दो बार समय मांगा। वे उनके घर पर भी गये। पर प्रेसिडेण्ट से मुलाकात नहीं हुई।

दिन बीतने लगे। स्थिति बिगड़ने लगी। एक दिन लोगों ने सुना कि काम से हटाया गया एक भंगी फिर से काम पर ले लिया गया है। और उसको तनखाह भी मिली है। दूसरे ही दिन संघ से अलग होने का उसका इस्तीफा संघ के दफ़्तर में पहुँच गया। जोसफ़ ने भी इस्तीफा दे दिया। इस तरह तीन चार दिन के भीतर ही भीतर बहुतों ने इस्तीफे दे दिये। म्युनिसिपैलिटी से उन सबों को वेतन भी मिल गया। उधर यह भी खबर फैल गयी कि संघ के प्रेसिडेण्ट की किसी से बलात्कार करने के केस में गिफ्तारी हुई है।

घूरन और ओवरसियर साहब की योजना पूरी हो गयी। संघ के दफ़्तर के कमरे में एक नाई की दूकान खुल गयी। भंगियों के लिये अब संघ नहीं रहा। म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट ने घूरन को एक धोती, एक चादर और दो रुपये इनाम में दिये और कहा, "घूरन, याद रहे, और कोई संगठन कायम न रहने पावे।"

घूरन—नहीं होगा, हुजूर।

ओवरसियर—लेकिन भंगियों में अपना संघ कायम रखने का बड़ा मोह पैदा हो गया है। वह जल्दी दूर नहीं होगा।

प्रेसिडेण्ट—इसके लिये क्या करना चाहिये?

ओवरसियर—मेरी नजर में तो एक ही उपाय है। उन्हें अपना एक संघ कायम करने के लिये उत्साहित किया जाय। लेकिन संघ का पूरा अधिकार हमारे हाथ में रहे।

यह सुझाव प्रेसिडेण्ट साहब को बहुत पसन्द आया। उन्हों ने

ओवरसियर से सब जरूरी कार्रवाई करने को कहा और खर्चा भी म्युनिसिपैलिटी से देने की बात कही।

एक महीने के अन्दर टाउन थियेटर में भंगियों के एक दूसरे संघ का उद्‌घाटन हुआ। उस दिन शहर के तमाम भंगियों को पहले एक भोज दिया गया। और सबों को नया कपड़ा भी। लेकिन उस दिन के वक्ताओं की बातों का भंगियों पर ऐसा कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा जैसा कि पहली सभा में पड़ा था। किसी ने कहा—"ताड़ी नहीं पीनी चाहिये।" पर वे तो पहले ही से यह जानते हैं कि ताड़ी पीना बुरा है। किसी ने कहा कि "ईश्वर का भजन करना चाहिये।" यह भी श्रोताओं के लिये नयी बात नहीं थी। किसी ने कहा कि "अधिकारी वर्ग भंगियों की स्थिति से सहानुभूति रखता है।" तो उन्होंने कहा कि यह भी बहुत दिनों से सुनते आ रहे हैं। मतलब यह है कि उस दिन की सभा में न तो उनमें जोश पैदा करने वाली कोई बात सुनने को मिली, न प्रसन्न करने वाली। फिर भी पहला संघ टूट जाने से उनको जो दुःख हुआ उसकी जगह अब एक नया संघ बन जाने से उन्हें कुछ तसल्ली हुई। सब इस नये संघ के सदस्य बन गये। चन्दे की रकम प्रेसिडेण्ट साहब की कृपा से म्युनिसिपैलिटी की तरफ से ही दे दी गयी। संघ का अध्यक्ष ओवरसियर साहब को ही बनाया गया। राष्ट्रीय गीत के साथ सभा विसर्जित हुई।

सभा बड़ी व्यवस्था और शान्ति से हुई थी। भोज में सबों को खीर और मिठाइयाँ मिली थीं। बिजली के पंखे के नीचे बैठ कर सबों ने जी भर कर भोज उड़ाया। नारे लगाने का श्रम भी किसी को उठाना नहीं पड़ा था। फिर भी वहाँ से लौटते समय सब मौन थे। सब उदास थे। वे एक प्रकार की नैतिक पराजय अनुभव कर रहे थे। कोई किसी से बातें करना नहीं चाहता था। मानो कोई

प्रिय वस्तु गंवाकर लौट रहे हों। आत्म सम्मान खोकर मानो लज्जा में गड़े जा रहे हों और किसी को मुँह दिखाना नहीं चाहते हों।

पिछली सभा में उनमें जो एक नवीन चेतना, एक नये उत्साह, संकल्प और आशा का संचार हुआ था उसका अनुभव इस बार नहीं हुआ। उल्टे इस दूसरे संघ का सदस्य बनने के साथ साथ उनके मन में एक तरह की ग्लानि पैदा हुई।

म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट और ओवरसियर अपनी योजना की पूर्ण सफलता पर बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर बातें करते हुए घर की तरफ गये। घूरन भी उनके पीछे-पीछे गया, पर चुपचाप, भारी दिल, उतरा चेहरा और मन में एक प्रकार की झुँझलाहट लिये हुए। उसे लग रहा था कि उसकी नयी कोशिश की कामयाबी का वह दिन उसकी गिरावट का और अपने समाज के साथ उसके विश्वासघात का भी दिन है।

भाग तीन

१

मध्याह्न का समय हो रहा है। दो ही भरी गाड़ियाँ डिपो में पहुँची हैं। बाकी गाड़ियों के पहुँचने में अभी थोड़ी देर है।

अहाते के एक कोने में एक छायादार आम का पेड़ है। उसके नीचे उन दोनों गाड़ियों को खींचकर लाने वाले दोनों व्यक्ति आकर खड़े हैं। एक है घूरन और दूसरी का नाम है खजनी। दोनों पास-पास खड़े हैं। घूरन आँख गड़ाकर एकटक खजनी की तरफ देख रहा है। खजनी दूसरी तरफ देखती है। सिर्फ बीच-बीच में कनखियों से घूरन की तरफ देख लेती है।

घूरन—शरीर से मजबूत, साहसी और बोलने वाला—चुप खड़ा है, पर दिल में एक तरह की धड़कन लिये। उसने आज खजनी से क्या क्या कहने का निश्चय किया था। पर कुछ कहने में अपने को असमर्थ पा रहा है। खजनी उसकी तरफ देख कर ज़रा मुस्कुरा देती है। घूरन के मुँह से निकल पड़ता है, "मुझे एक बात…।" खजनी उसकी बात सुनने के लिये उसकी तरफ मुँह करके देखने लगती है। घूरन फिर कहता है, "मुझे तुमसे एक बात कहनी है।"

घूरन के मुँह से बात नहीं निकल रही है। उसके होठ हिलते हैं पर कोई आवाज नहीं निकलती। खजनी उसकी परेशानी देख कर हँस देती है।

घूरन हिम्मत करके कहता है, "मैं एक घर बसाना चाहता हूँ।"

खजनी—बस, यही कहना चाहते थे ? तो इसमें क्या कठिनाई है ? बसा लेना।

घूरन पहले से सोची हुई सारी बातें भूल गया। क्या कहना चाहिये—उसको कुछ नहीं सूझा। किसी तरह कह पाता है, "नहीं, एक जमीन और मकान खरीदने का निश्चय किया है।"

खजनी—ठीक है, खरीद लेना।

घूरन—वह तुम्हारे लिये होगा।

खजनी—मेरे लिये ?

घूरन—हाँ, वह तुम्हारे लिये होगा।

खजनी की आँखें नीचे झुक जाती हैं। उसकी श्वास क्रिया तेज हो जाती है। उसके मुहँ से कोई बात नहीं निकलती पर उसके वक्षस्थल की गतिशीलता उसकी प्रतिक्रिया और दिल की धड़कन को प्रकट कर रही है। वह चुपचाप खड़ी है। घूरन ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों की आँखें चार हो गयीं। घूरन उसे हृदय से लगाकर चूम लेता है। उसी समय आम के पेड़ की डालियों और पत्तों से मर्मर ध्वनि निकलती है। नाइट सोइल के गड्ढे के पास मंडराते हुए कौए भी कांव-कांव कर उठते हैं। मानों वे सब घूरन और खजनी के प्रणय बन्धन का समर्थन कर रहे हों।

घूरन ने कहा तो सही कि जो घर और जमीन वह खरीदना चाहता है वह खजनी के लिये होगा। लेकिन उसका मन तो बहुत आगे दौड़ रहा है। खजनी उसके सुखस्वप्न का केन्द्र बिन्दु होगी। लेकिन उसका क्षेत्र तो और भी बड़ा होगा। वह स्पष्ट कर देना चाहता था, बोला, "वह घर तुम्हारे लिये ही नहीं होगा।" खजनी ने उसका अभिप्राय नहीं समझा। घूरन ने आगे कहा,

"हम दोनों को मिलकर बहुत बड़ा काम करना है। वह घर एक कोठी का रूप धारण करेगा।"

खजनी ने मुस्करा दिया। घूरन फिर बोला, "वास्तव में वह घर हम दोनों के लिये नहीं होगा।"

खजनी—तब किसके लिये होगा?

घूरन—हमारे बच्चों के लिये होगा।

घूरन को अब भी सन्देह था कि खजनी की समझ में उसकी बात आयी नहीं होगी। उसको अपने कहने ढंग के से सन्तोष नहीं हो रहा था।

सड़क की पगडंडी पर जाने वालों को डिपो की इस प्रणय लीला का कोई अनुमान भी नहीं होगा। यह चाँदनी रात में एक मनोहर वाटिका में किया जाने वाला एक सुसंस्कृत युवक और युवती का प्रेम विनिमय नहीं था। वह तो नाइट सोइल डिपो में मध्याह्न में एक श्रमिक भंगी युवक का एक भंगी युवती से वंश-वृद्धि के लिये प्रस्ताव था। पर हृदय की भूख और दिल की धड़कन का जहाँ तक सम्बन्ध है, उनमें और इनमें कोई भेद नहीं था।

दूर से अन्य भंगियों की गाड़ियां आती दिखायी पड़ीं। घूरन और खजनी अपनी-अपनी गाड़ी की सफाई में पूर्ववत् लग गये, मानों कुछ हुआ ही नहीं। पर उनके दिलों में उत्साह और प्रसन्नता की लहर दौड़ रही थी और भुजाओं में एक नयी शक्ति आ गयी थी।

२

घूरन की खजनी के साथ शादी हो गयी। भंगियों के लिये वह एक बड़े उत्सव का दिन था। सबों ने खजनी के भाग्य की सराहना की। खजनी के माँ-बाप बचपन में ही चल बसे थे। उसकी बुआ ने उसका पालन-पोषण किया था। बुआ गोपालपुर म्युनि-

सिपैलिटी में सड़क बहारने का काम करती थी। खजनी बीच बीच में उसकी मदद करती रहती थी।

शादी के बाद खजनी घूरन की झोंपड़ी में भंगी बस्ती में ही आकर रहने लगी। झोंपड़ी की मरम्मत और सफाई की गयी। देखने में वह झोंपड़ी दूसरे भंगियों की झोंपड़ियों से भिन्न, नई और सुन्दर थी।

घर छोटा ही था। पर उसमें खाट, सन्दूक, बर्तन आदि सब सजाकर रखे गये थे। एक कोने में श्रीकृष्ण जी का चित्र भी सजावट के साथ रखा था। खजनी अभिमान से फूली नहीं समाती थी। उस बस्ती में ही नहीं, दूसरी बस्ती में भी, जहाँ उसकी बुआ रहती थी, किसी भंगी का घर इतना साफ-सुथरा नहीं था। घूरन को छोड़कर और किसी भंगी के घर में फूल और तांबे के बर्तन न थे। खजनी ने अनुभव किया कि अब उन सब चीजों की मालकिन वही है। पति के पास धन भी था। सब लोग उसको मानते थे।

उस दिन शाम को खजनी ने घर बुहारा और घूरन के कहे मुताबिक दीप जलाकर कृष्ण के चित्र के सामने रखा। बाहर दूसरे घर में बच्चे झगड़ा और गाली गलौज में लगे थे, तब इधर पति-पत्नी भगवान की प्रार्थना में लीन थे। घूरन ने कहा, "मैं भजन गाऊँगा और तुम उसे ध्यान से दुहराना।" खजनी अपनी जिन्दगी में पहली बार प्रार्थना करने बैठी थी। आँखें मूंदकर हाथ जोड़कर बैठे हुए पति को बहुत देर तक वह निहारती रही। सोचती, "यह सब इन्होंने कहाँ सीखा ?" घूरन ने भजन गाना शुरू किया। खजनी दुहराने लगी। दुहराने में जब गलती करती तब घूरन उसे सुधार देता। थोड़ी देर बाद पड़ोस की एक झोंपड़ी से हल्ला और फिर रोने चिल्लाने की आवाज़ आई। खजनी ने

कहा, "पीट रहा है। जाकर ज़रा देखो न ?"

घूरन—क्यों ?

खजनी—पीटते पीटते मार डालेगा।

घूरन—मारने दो। इन शैतानों के पास रहना ही बुरा है। कहीं और जगह जाकर रहना चाहिये।

खजनी—कहाँ जाओगे ? दूसरी बस्ती में भी तो यही सब होता है।

घूरन—अच्छे लोगों के बीच जाकर रहेंगे।

खजनी को सन्देह हुआ। भंगियों को छोड़कर दूसरे लोगों के बीच जाकर कैसे रहा जा सकता है ? वह बोली, "भले आदमी हम लोगों को अपने बीच में रहने देंगे ?"

घूरन—तो क्या हमेशा भंगी बने रहना है ?

खजनी की समझ में नहीं आया। भंगी तो हमेशा भंगी ही रहता है। वह और कुछ कैसे बन सकता है ?

रात को घूरन ने खजनी को अपने हौसले की सब बातें कह सुनाईं। उसने कहा, "हमको बहुत बड़ा काम करना है। धीरे-धीरे सब हो जायगा। जब मैं काम पर जाता हूँ, बाबू लोगों का रहन-सहन ध्यान से देखता हूँ, और सोचता हूँ कि मुझे भी उनकी तरह क्यों नहीं रहना चाहिए ?"

खजनी—बाबू लोगों की तरह हम कैसे बन सकते हैं ?

घूरन—देखती रहो। हम लोगों को सुख भोगने को क्यों नहीं मिलेगा। दस दिन आनन्द कर लो।

खजनी—उसके बाद ?

घूरन—खूब परिश्रम करना पड़ेगा। किफायत से रहना होगा।

खजनी जरा सोचकर बोली, "हम प्रेम से रहेंगे तो कष्ट में भी सुख मालूम होगा।"

यही खजनी का विश्वास था। उसके सुख की कल्पना भी यही थी। एक दूसरे से प्रेम करने में सुख ही सुख है। लेकिन घूरन के सुख की कल्पना कुछ और ही थी। उसने कहा, "नहीं खजनी, इस तरह से हम सुखी नहीं हो सकते। जी तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी।"

खजनी ने स्वाभाविक ढंग से कहा, "उससे क्या, खूब काम करेंगे।"

घूरन—तभी अपनी सन्तान को हम सुखी बना सकेंगे।

खजनी समझती थी कि जीने के लिये आदमी को काम करना पड़ता है। काम करना उसे कोई भारी कष्ट की बात मालूम नहीं हुई। बिना काम किये वह रह नहीं सकती थी। बच्चों को पालना होगा, उनके लिये थोड़ा कष्ट उठाना और त्याग करना होगा। यह तो ठीक ही है। पर उससे सुख नहीं होगा, यह कैसे कहा जायेगा?

घूरन ने उसे समझाया कि बच्चे होंगे तो उन्हें कैसे पाला जायेगा। हमें उन्हें भंगी नहीं बनाये रखना है।"

खजनी ने कुछ समझा, कुछ नहीं समझा। घूरन ने दस दिन की अपनी छुट्टी में कहीं बाहर जाकर "मधुविधु" (हनी मून) मनाने में बिताने का अपना निश्चय सुनाया और खजनी को तैयारी कर लेने को कहा। ग्यारहवें दिन लौट कर काम पर हाज़िर हो जाना है और आगे की तैयारी में लग जाना है।

२

दस दिन की छुट्टी खतम हो गयी। "मधु-विधु" के आनन्द का कार्यक्रम समाप्त करके दोनों लौट आये। खजनी ने क्या क्या देखा, उसको कैसा अनुभव हुआ? उसने एक नयी दुनिया देखी, कितनी सुखदायी, कितनी दिलचस्प। भंगी भी बढ़िया चीजों के

स्वाद और सुगन्ध का आनन्द ले सकते हैं। उन्हें भी अच्छी चीजों के स्पर्श और मीठी ध्वनि के सुनने से सुख प्राप्त हो सकता है। खजनी ने जो-जो देखा था उसका वर्णन सूरी और महावीर आदि की पत्नियों को सुनाने का निश्चय किया था। जब वह साफ़ भड़कीला कपड़ा पहन कर शहर के पार्क में घूरन के साथ घूमने निकली थी तब उसे कितना आनन्द आया था। चांदनी रात में नाव पर जल विहार का भी उसने आनन्द लूटा। "मधु-विधु" के ये चन्द दिन कितने आनन्ददायक, कितने असाधारण थे। क्या जिन्दगी में ऐसे दिन फिर आयेंगे?

वह पड़ोसिनों से मिलकर सब बातें सुनाने के लिये अधीर हो रही थी। पर घूरन ने उसे दूसरों से मिलने-जुलने से मना कर दिया। नयी दुनिया के अनुभव से उसे भंगियों के गन्दे जीवन की दुखदायी हालत तो समझ में आने लगी। पर भंगियों से सन्बन्ध रखने से, घूरन के मना करने पर खजनी सन्देह में पड़ गयी। "अगर भंगियों से बातें न करूँ तो फिर करूँ किससे? बिना किसी से मिले जुले और बात किये कैसे रहा जायगा?" यह प्रश्न उसके मन में उठकर रह गया।

उन दिनों के आनन्द का नशा जैसे २ कम होता गया, खजनी घूरन की बातों पर सोचने लगी। "मधु-विधु" की तड़कभड़क और मनोरंजन के बीच कोई नहीं कह सकता था कि वह भंगिन है। यह ख्याल कि फिर भंगियों के बीच लौट कर आना पड़ेगा, उसे कष्टदायक लगा था। पर वह जानती थी कि "मधु-विधु" का जीवन तो स्वप्न की तरह अस्थाई है। जब वह सजधज कर घूमने निकलती या सिनेमा में जाकर बैठती तो उसके मन में डर लगा रहता था कि कोई उन दोनों को भंगी होने के कारण डांट न दे। भला भंगियों को छोड़ और कौन उन्हें अपना सकते थे?

शादी के बाद उसने अपनी बुआ को अभीतक नहीं देखा था। तीन सप्ताह बीत गये। बुढ़िया बेचारी क्या क्या आशा लेकर बैठी होगी। सोचती होगी, बेटी आज आयेगी, कल आयेगी आदि। उसने उसको पाल पोसकर बड़ा किया था। लेकिन उसने एक शाम के लिये तम्बाकू तक की भेंट बुढ़िया को नहीं भेजी। बुढ़िया अब भी झाड़-बुहार का काम करके गुजारा करती है। अगर खजनी उसे अपने साथ रखने की बात उठाती तो घूरन भला क्यों मानता ?

उधर बेटी की राह देखते-देखते बुढ़िया थक गयी तो वह एक दिन खजनी के घर आ पहुँची। दो-चार पूड़ियाँ बनाकर साथ लायी थी। खजनी को साफ साढ़ी पहने देखकर बुढ़िया को उसे पहिचानना कठिन हो गया। बुढ़िया का हृदय आनन्द से भर गया। लेकिन उसे देखकर खजनी को भीतर ही भीतर दुख हुआ। उसकी बुआ बहुत कमजोर हो गयी थी। जब बुढ़िया ने कहा कि वह उसकी राह देख रही थी तो खजनी का हृदय फटने लगा। पर उधर उसको यह भी डर हुआ कि बुआ के आने से पति नाराज तो नहीं होंगे ?

खजनी ने बुआ को स्नान कराकर साफ कपड़ा पहनाया और खिलाया। फिर अपने भ्रमण की सारी बातें सुनाईं और यह भी कह सुनाया कि पति के हाथ में पैसा है। थोड़ा और जमा होने पर अपने लिये जमीन और मकान खरीदने का इरादा रखते हैं।

घूरन को दूर से आते देखकर खजनी उसकी ओर गयी और कहा, "बुआ आई है। आते ही स्नान कराकर साफ कपड़ा पहना दिया है।"

घूरन ने सिर्फ कहा, "अच्छा"।

खजनी—मेरे माँ-बाप मेरे जन्म के पहले ही साल मर गये थे।

बुआ ही ने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया है। मेरे सिवा उसके कोई नहीं है।

घूरन ने उदासीन भाव से कहा, "तो ?"

खजनी—कुछ नहीं, बिगड़ना नहीं।

घूरन मान गया। बुढ़िया खुश होकर हँसती हुई बाहर आई और उलाहना देती हुई बोली—"क्यों बेटा, तुम तो उधर आये ही नहीं।"

"आ नहीं सका" कहकर घूरन जरा हँस दिया और नहाने चला गया। उसके ठण्डे व्यवहार का बुढ़िया पर कोई असर नहीं पड़ा। घूरन ने खाना खाकर कहीं बाहर जाने की तैयारी करते हुए खजनी से पूछा—"तुम्हारी बुआ आज जाती नहीं है ?"

खजनी ने उत्तर दिया, "जाना तो है ही।" और पति की ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा।

तब तक बुढ़िया वहीं आगयी। बोली, "तीन मील पैदल चलना है न बेटा। जाती हूँ।"

घूरन—अच्छा।

घूरन इतनी जल्दी मान गया—इससे खजनी के दिल को धक्का लगा। उसकी आँखों से आँसू उमड़ आते, घूरन ने आज पहली बार देखा।

बुढ़िया—बेटा, खजनी को दो दिन बाद उधर भेज देना।

घूरन—यह नहीं हो सकता।

यह निश्चित जवाब था। अपनी निष्ठुरता घूरन को भी बुरी लगी। बुढ़िया का चेहरा उदास हो गया। उसने अपने को सम्भालते हुए कहा, "नहीं, नहीं, मैंने ऐसे ही कह दिया। वहाँ आयेगी तो यहाँ कौन रहेगी ?"

खजनी बुढ़िया के साथ थोड़ी दूर तक गयी। खड़ी खड़ी भरी आँखों से उसको जाते देखती रही।

४

खजनी को अपने घर में भी आजादी मालूम नहीं होती थी। चौराहे पर कुशल क्षेम पूछनेवाले और डिपो में प्रेमयाचना करके उसके हृदय कुसुम को विकसित करनेवाले प्रेमी को वह अपने पति में नहीं पा रही थी। उसकी आकृति पहले ही की तरह बलिष्ठ, बाल पहले ही के जैसे घुँघराले और चेहरा भी वैसा ही पौरुषपूर्ण था। पर क्या ये गुण स्त्री के सुख के लिये पर्याप्त हैं?

घूरन सफाई की कमी के बारे में हमेशा शिकायत किया करता और दोष निकाला करता था। खजनी सोचती, सिर्फ नुक्स निकालने की प्रवृत्ति से शिकायत करते रहते हैं। वह तो रोज घर में झाड़ू लगाती है। स्नान करती है। साफ सुथरी रहती है। फिर उसे क्या गन्दगी नजर आती है? शिकायत सुनते सुनते खजनी थक गयी। अब और कैसी सफाई चाहिये? घूरन स्वयं सफाई के बारे में कोई खास बात नहीं बतलाता था। उसके मन में क्या था वह खजनी की समझ में नहीं आया।

एक दूसरी शिकायत घूरन की यह थी कि वह बहुत ज्यादा खर्च करती है। यह भी उसकी समझ में नहीं आया। पैसा तो घूरन के पास रहता है। वह अपने हाथ से एक कौड़ी भी खर्च नहीं करती। उसके कहने के मुताबिक ही सब कुछ करती है। तब भी वह उसे ज्यादा खर्च करनेवाली कहता है।

वह अपनी झोंपड़ी से बाहर नहीं जाती थी। किसी दूसरी स्त्री से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रखने के घूरन के आदेश का वह अक्षरशः पालन करती थी। यह

जीवन उसको कभी-कभी असह्य मालूम होने लगता था।

वहाँ पर सब लोग उसे बड़ी "पावर" (शक्ति) कहते थे। उसके प्रति किसी का भी सद्भाव नहीं था। यदि कोई स्त्री उससे कुछ पूछे तो क्या उसको जवाब तक नहीं देना चाहिये ? मगर घूरन ने एक बार इसीलिये नाराज़ होकर कहा कि वह कभी सुधरेगी नहीं। उस दिन वह बहुत रोई थी।

वह कहता था कि उसमें ईश्वरभक्ति काफी नही है। वह तो भक्ति करने की कोशिश करती है। बहुत भजन और कीर्तन उसने सीख लिये हैं। रोज़ पति के साथ प्रार्थना करती है। पर इसमें भी उसे त्रुटि दिखायी देती है।

घूरन उसको डाँटता नहीं था। गुस्सा भी नहीं दिखलाता था। फिर भी खजनी उससे डरती थी। मिनट-मिनट में वह दोष निकालता रहे तो वह कैसे सहन हो सकता है ? "तुम्हारा सारा काम ग़लत है" ऐसा कहा जाय तो यह किसको अच्छा लगेगा ?

घूरन बाबू लोगों से रोज कुछ न कुछ सीख आता था और अपने जीवन में उतारने की कोशिश करता था। पर उसका संकल्प और उद्देश्य खजनी की समझ में पूरा पूरा नहीं आता था। इस वजह से उसके उद्देश्य की पूर्ति में वह काफी सहायक नहीं हो पाती।

घूरन को तो बहुत बड़ी बातें सोचनी थीं। पत्नी के साथ बैठने और बोलने का उसके पास समय ही कहाँ था ? लेकिन एक नव विवाहिता स्त्री यह कैसे पसन्द कर सकती है ? "दस ही दिन जीवन में सुख भोगने को हैं" मधुविधु के अवसर पर घूरन का यह कहना खजनी को अब बिलकुल अर्थपूर्ण मालूम देने लगा। ये दस दिन खजनी ने ख़ूब सानन्द बिताये। उसके बाद उससे घूरन ने प्रेम से कभी बात नहीं की। यह नहीं कि घूरन खजनी

को खुश रखना नहीं जानता था। लेकिन उसके व्यवहार में खजनी को एक तरह की नीरसता का अनुभव होने लगा।

हमेशा कौड़ी-कौड़ी का हिसाब जोड़नेवाले पति के जीवन में मानो रसिकता के लिये जगह ही नहीं रही। घूरन का आचार व्यवहार पहले के व्यवहार से भिन्न मालूम होने लगा।

घूरन अपने जीवनोद्देश्य की सिद्धि के मार्ग में एक साथी चाहता था। वह उसे मिल गया। लेकिन अप्रसन्न पत्नी के मन में उसके उद्देश्यों के प्रति सन्देह बढ़ने लगा। जमीन और मकान खरीदने और उस मकान को एक मंजिल से दु-मंजिला बनाने का घूरन का विचार खजनी को बिलकुल असम्भव-सा लगने लगा। एक भंगी "बाबू" नहीं बन सकता। उसके बच्चे कैसे बड़े बनेंगे? भंगियों के साथ ही तो वे रह सकेंगे। घूरन का उद्देश्य कभी सफल नहीं होगा।

घूरन की प्रार्थना खजनी को बनावटी-सी लगी। उसके प्रेम पर भी कभी-कभी खजनी को अविश्वास होता। खजनी सब सहन करती। इसे अपनी किस्मत का फल मानकर धीरज धरने लगी। दिन बीतते गये। उसकी जरूरत की सब चीजें वहाँ मौजूद थीं। एक दो बार उसने पति से कुछ पूछना चाहा। लेकिन पूछ नहीं सकी। उसे एक तरह का डर मालूम होता था।

खजनी ने अपनी स्थिति को दूसरी भंगिनों से भिन्न पाया। उसे सन्देह हुआ कि "क्या बाबू लोगों के घरों में पत्नियाँ पतियों की गुलाम बनकर रहती हैं?"

५

रात बहुत हो गई है। पति पत्नी दोनों अपनी झोंपड़ी में अभी तक जगे हैं। रात्रि की निश्शब्दता को भंग करती हुई खजनी ने पूछा, "मुझसे शादी करके तुम पछता तो नहीं रहे हो?" इस

सवाल ने घूरन के चिन्तन में बाधा डाली। सवाल भी ऐसा जिसका जवाब देना बड़ा मुश्किल था। घूरन ने सुनकर भी अनसुनी करदी। खजनी ने सवाल दुहराया, "क्यों, मेरे साथ शादी करने से तुम्हारी सब इच्छाएं पूरी नहीं हो रही हैं ?"

घूरन—नहीं, मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

उत्तर देने के बाद घूरन को लगा कि ऐसा जवाब नहीं देना चाहिए था। खजनी ने फिर सवाल किया, कभी-कभी ऐसा लगता है न, कि किसी दूसरी से शादी करते तो अच्छा होता ?"

घूरन—तुम ऐसा क्यों सोचती हो ?

खजनी—यह क्यों पूछते हो ? क्या मैंने ठीक नहीं कहा है ?

खजनी के सवालों से घूरन चकित हो गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि खजनी ऐसे ऐसे सवाल करेगी। उसे कोई जवाब नहीं सूझा। आखिर उसने पूछा, "क्या तुम सोचती हो कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता ?

खजनी—नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचती।

घूरन—फिर ऐसा सवाल तुमने क्यों किया ?

अब घूरन को लगा कि वह ठीक रास्ते पर आ गया है। खजनी ने कहा, "नहीं, यों ही पूछ लिया। कभी कभी ऐसा लगता है कि मुझसे ज्यादा साफ सुथरी और धनी कोई लड़की तुम्हें मिलती तो अच्छा होता।"

घूरन—हाँ, ऐसी कोई मिलती तो अच्छा ही होता।

भला, पति के मुँह से ऐसा जवाब सुनकर कोई पत्नी कैसे शांत रह सकती है ? आज पहले पहल खजनी अपने पति से झगड़ने के लिए तैयार हो गई।

खजनी ने पूछा, तब ऐसी किसी को कहीं देख रखा है ?

घूरन—मैंने कब कहा कि देख रखा है ?

खजनी—देख रखा है तो उसको जाकर क्यों नहीं ले आते ?

खजनी ने अब अपना अधिकार पूरा जमा लिया। घूरन ने क्या-क्या वचन उस को दिये थे, सब की उसने याद दिलाई और अन्त में कहा, "तुमने जो-जो कहा था सब मुझे याद है। यदि मुझे धोखा दोगे तो फिर मालूम हो जायगा। मुझ से शादी करने के बाद उसे कहाँ देख रखा है? कैसी भी हो एक भंगी की लड़की ही तो होगी? कहाँ है वह?"

घूरन अब मुश्किल में पड़ गया। खजनी से आकृष्ट होने के बाद उसके मधुर चिन्तन में कैसे उसके दिन बीते थे वह भूला नहीं था। वह कभी भूल ही नहीं सकता था। उसने खजनी को अपने उद्देश्य की सिद्धि का केन्द्र समझा था। खजनी उसको उस समय अप्राप्य-सी लगती थी। उसके सामने जाते उसके पैर काँपते थे। बोलते समय मुँह से आवाज निकलती थी। खजनी का कहना भी ठीक था। उसने उसको अटूट प्रेम का वचन दिया है। लेकिन उसने सोचा, "मेरे जैसे एक महत्वाकाँक्षी आदमी को कभी-कभी ऐसा लगना स्वाभाविक ही है कि उसकी पत्नी और भी योग्य होती तो अच्छा होता। इसमें प्रेम की कमी कहाँ है? पत्नी को त्यागने की बात कहाँ है?"

खजनी ने बार-बार पूछा, "वह कहाँ है? बताओ।" उसको लगा कि घूरन ने जरूर ऐसी कोई स्त्री देखी है। इसीलिये उससे ठीक से बोलता नहीं, बातचीत नहीं करता। खजनी की प्रतिक्रिया जोर पकड़ती गई। वह पागल-सी हो गई, रोने लगी और छाती पीटने लगी। घूरन किंकर्तव्यविमूढ़ होकर सोचने लगा कि अब क्या करूँ? इसे कैसे शांत करूँ? इसका सन्देह

मिटाया नहीं जाय तो सारा कार्यक्रम बिगड़ जायगा। खजनी उस के लिए कितनी जरूरी है यह उसने उसी समय समझा। उसको अब साफ बतलाना पड़ा कि खजनी के बिना वह रह नहीं सकता। इस तरह पति-पत्नी के बीच बढ़ती हुई गैर-समझी आखिर दूर हो गई।

भाग ४

१

इतनी तेज गरमी के दिन पहले कभी नहीं आये थे। वर्षा नहीं हुई। पेड़ पौधे सब पानी के अभाव से मुरझाने लगे भयानक संक्रामक रोगों के आक्रमण की स्थिति पैदा हो गई। फिर चेचक की बीमारी शुरू हुई और वह भी बड़ी खतरनाक किस्म की। आठ दस दिन के भीतर ही रोगी का देहान्त हो जाने लगा। बीमार पड़ने पर कोई बचता नहीं था। चारों तरफ भय का आतंक छा गया।

ऐसी स्थिति में भी दुकानें पहले ही की तरह खुलती थीं। सरकारी दफ्तरों का काम जारी था। सड़कों पर लोगों की भीड़ पूर्ववत् ही रहती थी। यह सब देखते हुए कोई नहीं कह सकता था कि चेचक की बीमारी भयंकर रूप में फैल रही है। लोग आपस में जरूर सवाल करते थे कि शहर की म्युनिसिपैलिटी क्या कर रही है। कुछ टीका करनेवाले इधर उधर जरूर दौड़ते नजर आते थे। बस, इससे ज्यादा लोगों की रक्षा का कोई उपाय नहीं हो रहा था।

शहर के आसपास के गाँवों में भी बीमारी फैलने लगी। अफवाह सुनाई पड़ी कि शहर की सिनेमा कम्पनी का लाइसेन्स थोड़े समय के लिए रद्द कर दिया जायेगा। और रात के समय कोई मनोरंजन वगैरह का कार्यक्रम नहीं होने दिया जायगा। कुछ कारखाने भी जिनके आसपास बीमारी जोरों पर थी, बन्द कर दिए जायेंगे। म्युनिसिपल कौंसिल के एक सदस्य ने इन सब बातों के

लिए एक प्रस्ताव पेश किया था और अगली बैठक में ये सब बातें तय होनेवाली थीं।

इस अफवाह के शुरू होते ही सिनेमा कम्पनी और कारखानों के मालिकों की म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट और सदस्यों के घर पर भीड़ लगने लगी। कौंसिल की जब बैठक हुई तब स्वास्थ्य अफसर ने अपनी रिपोर्ट दी जिसमें कहा गया था कि हालत बहुत खराब नहीं है। एक महीने के भीतर नौ ही व्यक्तियों को चेचक की बीमारी हुई और उनमें दो ही मरे। एक सप्ताह से नये बीमारों की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। स्वास्थ्य अफसर की रिपोर्ट के आधार पर कौंसिल में विचारार्थ रखा हुआ प्रस्ताव गिर गया। लेकिन अध्यक्ष को अधिकार दिया गया कि वे चार और टीका लगाने वालों को नियुक्त करें।

उधर प्रेसिडेण्ट को एक दूसरी स्थिति का सामना करना पड़ा। उनके मकान के चारों ओर बीमारी फैल गई। और लोग मरने लगे। उन्होंने पत्नी को, बच्चे सहित बाहर भेज दिया। और घर बन्द करके खुद एक दूसरे मुहल्ले में रहने लगे। लेकिन सब से कठिन सवाल उनके सामने यह था कि भंगी बस्ती में रोज एक दो मौत के शिकार हो रहे थे और भंगियों की संख्या दिन प्रति दिन घट रही थी। ओवरसियर ने दूसरों की मदद से काम संभालने की कोशिश की। लेकिन यह भी अधिक दिन चलने की नही थी। प्रेसिडेण्ट और ओवरसियर दोनों ने मिलकर विचार विनिमय किया।

प्रेसिडेण्ट—भंगी बस्ती में ही सब से ज्यादा है क्या ओवरसियर ?

ओवरसिवर—जी हाँ, लेकिन उत्तर भाग में अभी तक कोई इस रोग का शिकार नहीं हुआ है।

प्रेसिडेण्ट—फिर भी कभी भी फैल सकती है। उस तरफ बेहद गन्दगी है।

ओवरसियर ने हाँ में हाँ मिलायी। १५ साल पहले ऐसी ही एक घटना हुई थी और उस समय नगर की भंगी बस्ती बिलकुल साफ हो गई थी। उस समय भी वे ही वहाँ के ओवरसियर थे।

प्रेसिडेण्ट—पिछली बार आपने क्या किया था ?

ओवरसियर—किसी तरह काम चलाया था। इतना कहना काफी है। अब भी सोचने पर मुझे ताज्जुब होता है कि कैसे उस समय हालत संभल गई। बहुत रुपया खर्च हुआ था।

प्रेसिडेण्ट—कभी काम बन्द भी रहा ?

ओवरसियर—जी नहीं, ऐसा मैंने होने नहीं दिया। चेचक शुरू होते ही मैं रुपये लेकर मुन्शीनगर गया और वहाँ के कुछ डोमों को ठीक कर ले आया। इधर लौटने के बाद एक ही सप्ताह के अन्दर यहाँ के ज्यादातर भंगी खतम हो गये।

प्रेसिडेण्ट—इस बार भी हमें मुन्शीनगर में देखना पड़ेगा। पहले से ही कुछ इन्तजाम नहीं किया जाय तो मुश्किल हो जायगी।

ओवरसियर—मैं भी यही सोच रहा हूँ।

प्रेसिडेण्ट—कितने रुपये की जरूरत होगी ?

ओवरसियर—उस समय २०००)—ले गया था। एकाएक लोगों को पकड़कर लाना मुश्किल है। पहले ही रुपया दे देना पड़ता है। फिर सफर खर्च भी देना पड़ता है। बड़ी मुश्किल बात है। उनकी माँग भी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

प्रेसिडेण्ट—तब आप जाकर देखिये। एक और बात है। शहर के उत्तर में जो-जो हैं सब को टीका लगवा देना। दूसरों के पहुँचने तक काम चलाना है न ?

ओवरसियर—नहीं-नहीं। ऐसा करने में ज्यादा खतरा है।

टीका लगाने पर बुखार हो आता है। तब काम भी बन्द हो जाता है। कभी-कभी टीका लगाने से भी चेचक हो जाती है।

प्रेसिडेण्ट को यह बात ठीक लगी। ओवरसियर ने आगे कहा, "मैं बहुत दिनों से सोच रहा हूँ कि इन सबों को बदल देना ठीक होगा। दस साल से ज्यादा इन लोगों को नहीं रखना चाहिए। इसके अलावा इन लोगों को अब भी पहला संघ तोड़ देने का मलाल है। मौका पाकर ये अपना स्वतंत्र संघ फिर खड़ा कर देंगे और उत्पात शुरू हो जायगा। इन से अब पहले की तरह काम लेना मुश्किल हो गया है। यह एक अच्छा मौका है।

प्रेसिडेण्ट—क्या सबों को काम से निकाल दिया जाय ?

ओवरसियर—जी नहीं, यह भी कहने का किसी को मौका नहीं मिलना चाहिए कि हम ने उन्हें काम से निकाल दिया।

प्रेसिडेण्ट—तब सब को मर जाने दिया जाय। यही न ? अच्छी बात है। यह कहकर वे हँस पड़े। ओवरसियर साहब भी हँसे और कहा, "नहीं सरकार, इनके साथ मेरा बहुत दिनों का परिचय है। दस पंद्रह साल में इन्हें बदलकर दूसरों को लगाते रहना चाहिये। तभी काम भी ठीक से चलेगा।"

प्रेसीडेण्ट ने "हाँ" कर दी। लेकिन उनके दिल के किसी कोने से एक आवाज़ उठी, "वे भी तो आदमी हैं ? उनके भी बाल-बच्चे हैं। और उन्होंने अपना भाव ओवरसियर पर प्रकट किया।

ओवरसियर चकित हुए और बोले, "ये भी आदमी हैं ! अच्छी बात है।"

प्रेसीडेण्ट के लिये ये सब तुच्छ बातें थीं। बोले, "कुछ भी हो, तुरन्त कार्रवाई होनी चाहिये।" उनको विश्वास हो गया कि नगरपालिका के लिये यह ओवरसियर बहुत ही उपयोगी आदमी है और उसके बिना उसका काम नहीं चल सकता।

२

इस महामारी से मुक्ति पाने के लिये लोग मन्दिरों में, गिरजों में और मस्जिदों में जाकर ईश्वर की कृपा के लिये मनौतियाँ मनाने लगे। जाति-भेद और वर्ग-भेद भुलाकर हिन्दू, गिरजों और मस्जिदों में और ईसाई और मुसलमान हिन्दू-मन्दिरों में खास प्रार्थनायें कराने लगे। सबों की एक ही माँग थी—"किसी तरह इस विपत्ति से छुटकारा मिल जाय।"

प्रेसीडेण्ट की ओर से मन्दिरों में, गिरजों में और मस्जिदों में खास प्रार्थनायें करने और फूल चढ़ाने का इन्तजाम किया गया। भंगियों को इसी सिलसिले में तीन-तीन रुपये दिये गये।

लेकिन सब उपायों के बावजूद बीमारी का प्रकोप बढ़ता ही गया। भंगियों में मृतकों की संख्या बढ़ती गयी। बस्ती के उत्तरी हिस्से में भी डर समाने लगा।

घूरन के नेतृत्व में भंगियों ने आपस में राय की। घूरन के मत में भी ईश्वर की दया के लिये मन्दिरों और मस्जिदों में विशेष प्रार्थना का आयोजन करना जरूरी था। जरूरी इंतजाम का भार सबों ने घूरन को सौंप दिया। घूरन को ओवरसियर साहब के द्वारा ही सब कराना था। दो-तीन दिन में चन्दा वसूल हुआ। रुपये ओवरसियर साहब के जिम्मे सौंपना था। घूरन बैठे-बैठे हिसाब जोड़कर रुपये गिन रहा था। खजनी ने, जो वहाँ देखती हुई खड़ी थी, पूछा, "सबों ने दे दिया?"

घूरन ने उत्तर दिया—'हाँ।' खजनी ने फिर पूछा, "हमारा हिस्सा भी जोड़ा है?" इस सवाल का भी वही जवाब घूरन ने एक शब्द में दिया। खजनी उसको पहचानने लगी थी। उसको मालूम था कि अपना हिस्सा उसने जोड़ा नहीं है और शायद जोड़ेगा भी नहीं। लेकिन उसने अपना विचार प्रकट नहीं किया। इतना

और उसने कहा, "मेरी बूढ़ी बुआ पड़ी है उसके लिये कोई करने धरने वाला नहीं है । इसका भी जरा ख्याल करना और उसका भी हिस्सा जोड़ देना ।"

घूरन—क्यों ?

खजनी—तब यह सब क्यों ?

घूरन के पास इसका जवाब नहीं था । उसने यह कहते हुए कि "मेरे पास पैसा नहीं है" चन्दे का सब-पैसा एक कपड़े के टुकड़े में बान्ध लिया ।

खजनी को बहुत दुख हुआ । वह रोने लगी । उसकी बूढ़ी बुआ बेचारी बीमारों के बीच निस्सहाय पड़ी थी। और यहाँ ईश्वर की दया के लिये जो कराया जाता है उसमें उसकी तरफ से कुछ नहीं किया जाता ।

उसके दिल में बहुत-सी बातें उठीं । रोकने की उसने बहुत कोशिश की । लेकिन बहुत देर तक वह अपने को रोक नहीं सकी । उसने पूछा, "इसमें से कितना खुद अपने लिये लेने का विचार है?"

इस अप्रतीक्षित सवाल को और वह भी अपनी पत्नी के मुँह से सुनकर घूरन जरा घबड़ा गया । एक बार आँख उठाकर उसकी ओर देखा । अपने अधिकार का उपयोग करके वह उसे चुप कर सकता था । लेकिन कहा, "यह सबों के लिये सामान्य रूप से ही किया जायगा । उसका अलग हिस्सा नहीं भी रहे तो क्या हर्ज है ? तुम चाहती हो तो कल उसका हिस्सा भी जोड़ दूँगा ।"

पति-पत्नी के बीच का झगड़ा फिलहाल इस तरह समाप्त हो गया । खजनी की जीत ने उसे और मजबूत कर दिया । उसने आगे कहा, "बुआ उधर अकेली है । इस विपत्ति में उसको उधर अकेली छोड़ना ठीक नहीं है । जब तक संकट टल न जाय उसको यहीं बुलाकर रखना चाहिये ।" घूरन को डर था कि खजनी यह

सवाल उठायेगी। उसने सोचा था कि बुढ़िया वहीं पड़ी-पड़ी मर जाय तो अच्छा है। लेकिन अब क्या किया जाय? आखिर उसको मंजूर करना पड़ा। खजनी की जीत पूरी हो गयी।

दूसरे दिन काम पर से लौटने पर घूरन ने खजनी को खबर दी कि उसकी बुआ को बुखार आया है।

३

दुखी की पत्नी को बुखार आया। तीन चार दिन में उसके सारे शरीर पर चेचक निकल आयी। इस तरह बस्ती के उत्तरी हिस्से की झोंपड़ियों में भी रोग के लक्षण प्रकट होने लगे।

घूरन भी घबड़ाने लगा। या तो वहाँ से कहीं और चला जाय या रोगी को हटाया जाय। मगर कहीं और जाकर रहना तो इतना आसान था नहीं।

सब भंगी महावीर के घर पर इकट्ठे हुए। घूरन भी वहाँ गया। बीमारी पहचानने वाले एक आदमी को बुलाया गया था। उसने रोगी को देखकर राय दी कि रोग खतरनाक है। यह सुनकर दुखी रो पड़ा। जब वह सिर्फ १२ साल की थी तभी उसने उससे शादी की थी। वह उसे बहुत प्यार करती थी। अब पाँच बच्चे भी हैं। अगर वह मर गयी तो उनका पालनपोषण दुखी को अकेला ही करना पड़ेगा। सबसे बड़ा लड़का आठ ही साल का था। बहुत दीनभाव में उसने कहा, "इन बच्चों को लेकर मैं क्या करूँगा?" उस आदमी ने कहा, "अभी कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अभी चेचक देखने में सफेद नजर आती हैं। यदि दो तीन दिन में काली हो जाय तो फिर बचने की उम्मीद नहीं।"

दुखी ने भगवान से प्रार्थना की कि ऐसा न हो। रोगिणी की

चिकित्सा के बारे में अब लोग सोचने लगे। देशी चिकित्सा करानी है तो देख भाल के लिये दो आदमी रखने पड़ेंगे। वैद्य को भी बुलाना पड़ेगा। कम-से-कम ५० रुपया खर्च पड़ेगा। घूरन ने बीच में ही याद दिलाया कि यह तो कम से कम खर्च का हिसाब है ! दुखी इसका कोई जवाब नहीं दे सका। उसके दुःख ने सबों के दिल को हिला दिया। किसी के कुछ कहने के पहिले ही घूरन ने कहा, "मेरी राय से रोगी को अस्पताल भेजना ठीक है।"

चरिता ने इस प्रस्ताव का विरोध किया, "उससे तो यही बेहतर है कि उसे यहीं पर मार डाला जाय।"

घूरन—मारने के लिये ही सरकार ने पैसा खर्च करके अस्पताल नहीं बनवाया है।

बतहू ने चरिता की राय का समर्थन करते हुए कहा, "अस्पताल तो उन्हीं लोगों के लिये ठीक है जिनके पास पैसा है।"

घूरन—जब मरने का समय आता है, तो आदमी कहीं भी हो, मरता ही है। अस्पताल में डाक्टरों की देखरेख में रखा है, दिल को कम से कम यह तसल्ली तो होगी ?

सूरी ने राय दी कि इस बीमारी के लिये देशी चिकित्सा ही बेहतर है। इस तरह उन लोगों में बातें होती रहीं। बेचारे दुखी को कुछ कहना नहीं था।

घूरन ने पूछा, "देशी चिकित्सा के लिये पैसा है ?

निस्तब्धता छा गयी। अन्त में चरिता ने प्रस्ताव किया, "इस मुहल्ले में हम बीस घर वाले हैं। दो-दो रुपया हम चन्दा देकर चिकित्सा शुरू करा दें। हमीं लोगों के आपस की बात है।"

बतहू ने समर्थन किया। सबों ने मंजूर किया। लेकिन घूरन ने कुछ नहीं कहा। दूसरे ही दिन चन्दा वसूल करने का निश्चय हो गया।

घूरन ने कहा, "याद रहे कि यह रोग फैलने वाला है।

चरिता—हाँ मालूम है। अच्छी तरह मालूम है।

घूरन—तब इसको इधर ही रखने से बीमारी फैलेगी। तब कौन कहाँ से पैसा लायगा?

चरिता—ऐसा हो तो सब मर जायेंगे। ऐसे ही तो दस पन्द्रह साल में कुछ न कुछ होकर भंगियों का अन्त होता है?

घूरन को मालूम था कि उसके प्रस्ताव का समर्थन करने वाला कोई नहीं है। थोड़ी देर चुप रह कर कहा, "मैं एक पैसा भी नहीं दे सकूंगा।"

बीच में ही एक आदमी बड़े जोर से चिल्ला उठा, "तुम्हारे पैसे की जरूरत ही नहीं है। ऐसे भी हम तुम्हारा पैसा लेना नहीं चाहेंगे। तुमने ही हमारा संघ तोड़ा था। निर्दयी! तुम क्या हो? आदमी हो कि क्या हो?"

घूरन को गुस्सा आ गया। वह चला गया। आज की हार ने उसे अशांत बना दिया।

सजनी उत्सकता से पूछने लगी। घूरन ने कहा, "ये उसको यहीं पर रखकर सबका नाश करना चाहते हैं।"

सजनी की समझ में नहीं आया। घूरन ने समझाया, "अस्पताल नहीं भेजने से बीमारी के दूसरों को भी लग जाने की संभावना है।" "अस्पताल में तो वह मर जायगी" सजनी ने भी कहा। उसके अनाथ बच्चों के बारे में भी सजनी को चिन्ता थी। घूरन ने अपना विचार प्रकट नहीं किया। लेकिन अपना कार्यक्रम मन में तय कर लिया।

४

यह एक हृदय-विदारक दृश्य था। रोगिणी ने रो रोकर प्रार्थना की कि उसे अस्पताल नहीं भेजा जाय। अस्पताल जाने पर वह मर

जायगी, यही उसका डर था। मरना ही है तो घर में ही पड़ी-पड़ी मरे, यही वह चाहती थी।

सब भंगी निस्सहाय खड़े थे। उसे हस्पताल ले जाने के लिये प्रेसिडेण्ट का हुक्म था। ले जाने वाले आकर खड़े थे। बेचारे भंगी क्या करें? उन्होंने चन्दा उगाह कर उसकी चिकित्सा कराने का निश्चय किया था। कुछ रकम वसूल भी हुई। लेकिन वे अब क्या करें? दुखी ऐसा रोता था मानो उसकी पत्नी का देहान्त ही हो गया हो। पाँचों बच्चे अनाथावस्था में उसके पास ही बैठ थे। क्या हो रहा है उनकी समझ में नहीं आ रहा था। डोली में उस रोगिणी को जब रखा गया तब उसकी रुलाई मृत्यु के समय की रुलाई जैसी लगी। दुखी उसे देखने के लिये दौड़ा। लेकिन लोगों ने उसे रोका। उसकी पत्नी ने रोते हुए विनती की कि बच्चों को एक बार दिखा दें। लेकिन चेचक में लोगों ने वह भी इन्कार कर दिया।

उसे जब झोंपड़ी से निकाला गया तब सब से छोटा बच्चा उसे देख कर रोने लगा था। फिर सब बच्चे मां के लिये रोने लगे थे। बड़े बच्चे ने पूछा, "बाबू, मां को लोग कहाँ ले जा रहे हैं?" किसी ने उसको जवाब नहीं दिया। माँ एक-एक बच्चे का नाम लेकर रोती थी। सब उसको ले जाते देखते खड़े थे। दुखी ने हृदय-भेदक शब्दों में उसको पुकारा, "मेरी नीली?" दूर से उसने जवाब दिया, "ऊँ, ऊँ, ऊँ।"

घूरन और खजनी अपने घर के सामने खड़े सब दृश्य देख रहे थे। खजनी रो पड़ी। घूरन ने कहा, "एक संकट टल गया।" यह निष्ठुरता खजनी के दिल में चुभ गयी। वह बिना जाने ही बोल उठी, "महापापी।"

घूरन डर गया। खजनी ने आगे कहा, "उस बेचारी को मार

डाला। और उसके नन्हें बच्चों को अनाथ करके········" आगे वह कुछ कह नहीं सकी।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद घूरन ने कहा, "उनकी तकदीर ही ऐसी है।"

खजनी—तकदीर! तकदीर! मूर्ति के समान आँखें मून्दकर क्यों बैठते हो?

घूरन को गुस्सा आया। उसने डाँटा, "जाओ, भीतर चली जाओ।" खजनी चली गयी। घूरन ने म्युनिसिपैलिटी में कह सुनकर दुखी की पत्नी को हस्पताल भिजवा तो दिया। लेकिन भंगी बस्ती में चेचक का संकट इससे दूर नहीं हुआ। दूसरे ही दिन एक भंगी को बुखार शुरू हुआ। इस एक सप्ताह के भीतर १५-२० आदमी चेचक के शिकार हो गये। घूरन एक दूसरा घर ढूँढने लगा। दुखी के बच्चे भीख माँगने लगे। कुछ दिन के भीतर सब से छोटा बच्चा खतम हो गया। बाकी बच्चे अलग होकर इधर-उधर हो गये।

उस बीमारी में कितने मरे, कितने बचे, यह कहना मुश्किल था। उधर ओवरसियर ने घूरन की मदद से मुंशीपुर से डोमों को लाकर काम में लगा दिया। और म्युनिसिपैलिटी का काम किसी तरह चलता रहा। धन थोड़ा ज्यादा खर्च हुआ। लेकिन इससे क्या?

भाग ५.

१

चाँदनी रात है। बाहर सोइल डिपो के पास की भंगी बस्ती की एक झोंपड़ी के सामने एक बड़े घड़े के चारों ओर भंगी इकट्ठे हुए हैं। उनमें पहले का हमारा-परिचित एक ही आदमी है। वह है महावीर। बाकी सब नये हैं।

उनके वेतन पाने के दूसरे दिन की बात है। सब झोंपड़ियों में चूल्हे जलाये जा चुके हैं। बच्चों का रोना और माताओं का डाँटना सब जगह सुनायी पड़ रहा है। आदमी बदल गये हैं। पर भंगी बस्ती का दृश्य पहले ही की तरह है।

सब अपना-अपना हिसाब बता रहे हैं। बुद्धन को बारह रुपये मिले। उसका वेतन है, अठारह रुपये। यह बात उसको पिछले महीने ही मालूम हो गई थी।

सुखाड़ी ने पूछा, "यह तुमको कैसे मालूम हुआ ?"

"यह बात झूठ है।" सबों ने कहा। एक ने कहा, "हम सबों का वेतन बराबर ही है।"

लेकिन इस बात का भी सभों को विश्वास नहीं था। फिर भी किसी ने भी डट करके वाद-विवाद जारी रखना नहीं चाहा। क्योंकि वेतन जो भी हो, पूरी रकम किसी को भी नहीं मिलती थी। और मिलने की आशा भी नहीं थी।"

एक ने पूछा, "अच्छा हम लोगों के वेतन से आज उनको कुल कितना मिला होगा ?"

एक ने हिसाब जोड़ना शुरू किया। जोड़ में गलती हुई। फिर

से जोड़ा। "कुल ८०) मिले होंगे !" तब किसी ने कहा, "उधर नदी के किनारे वाले वस्ती से भी कुछ मिला ही होगा।"

एक को कुछ और बात जाननी थी। उसने पूछा, "हम अभी कर्ज लें तो हमें कितना लौटाना पड़ेगा ?"

सुखाड़ी ने पाँच रुपये लिये थे तो उसको पंद्रह दिन के बाद सात लौटाने पड़े थे। इसका रहस्य जानने वाले के तौर पर बुद्धन ने कहा, "इस आमदनी का आधा हिस्सा ओवरसियर साहब को मिलेगा। वे ही तो सब वसूल करते हैं ?"

तब एक ने कहा, "फिर भी घूरन के पास काफी पैसा है।"

महावीर तब तक चुप था। अब बोला, "हाँ, हाँ, बहुत है। ऐसा ही आदमी पैसा जमा कर सकता है जो ताड़ी बीड़ी नहीं पीता। वह अब जमीन खरीदकर मकान भी बनवायेगा।"

सुखाड़ी—वह क्यों हम से अलग रहता है ?

महावीर—इसलिये कि वह अपने बच्चों को भंगी बनने देना नहीं चाहता।

महावीर ने घूरन की सारी कहानी लोगों को सुनायी। उसके बाप का मरना, उसकी शादी आदि सब का वर्णन किया। जब संघ की बात आई तब वह सोचने लगा। उसने कहा, "घूरन मेरा बड़ा दोस्त है। वह मुझ से प्रीति रखता है। लेकिन वह है धोखेबाज। हम उसका विश्वास नहीं कर सकते। मैं जरूर उसको एक सबक सिखाऊँगा। मित्रता और स्नेह सब दूसरी बातें हैं।"

सब संघ की बातें सुनने के लिये उत्सुक थे। महावीर ने सुनाना शुरू किया। संघ के टूटने की कहानी सुनने के बाद एक ने कहा, "तब तो उसने बड़ा धोखा दिया।"

महावीर—"हाँ।"

इन नये भंगियों को भी अपने वेतन के बारे में साफ-साफ

मालूम नहीं था। संघ की स्थापना और उसके टूटने की बात सुन-कर उनमें अपने साथ इन्साफ बरते जाने के लिये अपना संगठन करने की भावना पैदा हुई। एक ने राय दी कि महावीर जो यहाँ का पुराना आदमी है, और सब हाल जानता है, भंगियों का एक संघ फिर कायम करने का उपाय करे तो अच्छा होगा।

महावीर ने मान लिया। लेकिन एक शर्त रखी कि कुछ भी हो जाय, सब को एक होकर रहना चाहिये। उसने यह भी कहा कि घूरन विरोध करेगा। तब एक ने कहा, "कोई भी विरोध करे हम अपना संघ जरूर बनायेंगे।"

सब बाधाओं से लड़ने के लिये तैयार हो गये। कुछ भी हो, उनका संघ जरूर बनना चाहिये।

महावीर एक नेता का गौरव अनुभव करने लगा। उसने सिर हिलाया और कहा, "अच्छा, तो पहले तुम लोगों को यह निश्चय करना है कि भूखों मरने की नौबत आजाय तब भी घूरन से कर्ज नहीं लेंगे। यह मंजूर हो तो संघ बनाने का काम मैं करूँगा।

सबों ने यह बात भी मान ली। जल्दी ही संघ के निर्माण के लिये एक सभा बुलाने की तारीख तय हो गई। महावीर ने चेतावनी दी कि सब बातें गुप्त रहनी चाहिये।

इस तरह भंगियों में संघ शक्ति का ज्ञान फिर जगा और महावीर उनका नेता बना। लेकिन जब ताड़ी का नशा उतर गया तब महावीर के मन में एक तरह के डर ने घर कर लिया। वह सोचने लगा कि घूरन के बारे में यह क्या-क्या बक गया है? उसको लगा कि सत्य होने पर भी उसको घूरन के बारे में ये सब बातें नहीं कहनी चाहिये थीं। अब वह कैसे घूरन के सामने जाएगा! उसको उसने प्यार किया है। उसकी उन्नति में दिल से खुशी मनानेवाला उससे बढ़कर और कोई नहीं है। घूरन को

अधिकारी-पद की ओर बढ़ने में महावीर खुद एक अभिमान का अनुभव करता था। आपत्तिकाल में वही उसका मददगार होकर उसके साथ खड़ा हुआ था। घूरन से महावीर को कोई प्रतिफल नहीं मिला, यह ठीक है। लेकिन उसने घूरन को प्यार किया है। कारण वह नहीं जानता।

अब स्थिति यह है कि उसे घूरन का सामना करना पड़ेगा। उसके लिये उसमें हिम्मत है कि नहीं, इस में महावीर को सन्देह था। पर संघ जरूरी है। इसमें कोई शक नहीं।

२

भंगी कालोनी में जब ये सब बातें चल रही थीं तब घूरन श्मशान घाट के पास अपने किराये के मकान में किवाड़-खिड़की सब बन्द करके बैठकर पैसा गिन रहा है। खजनी भी पास में बैठी है। गिनने के बाद वह मन ही मन हिसाब जोड़ने लगा। बहुत देर तक जोड़ता रहा।

खजनी को बहुत सवाल पूछने थे। अब तक की आमदनी का कुछ जोड़ उसको भी मालूम होना चाहिये। प्रेसिडेण्ट साहब के पास कितना रुपया दिया है, जमीन और मकान खरीदने के लिये कितना रुपया और चाहिए आदि कई बातें वह जानना चाहती है। रुपया गिनते समय और हिसाब जोड़ते समय बातें करने से सब गलत हो जायगा। लेकिन वह मन-ही-मन क्यों जोड़ते हैं? यह भी सुने तो क्या हानि है? इतना छिपाने की क्या जरूरत है?

घूरन ने धीरे से बिना कोई आवाज निकाले ही रुपया सब एक बटुवे में डाल दिया। खजनी ने पूछा, "यह कितना रुपया है?

घूरन—चुप चुप, धीरे धीरे बोलो।

खजनी—क्यों ?

घूरन—कोई सुन लेगा।

खजनी—सुनेगा तो क्या होगा ?

घूरन को गुस्सा आया। कहा, "तब चिल्लाओ कि यहाँ रुपया है।" घूरन बटुवा पेटी में रखकर उठा और खजनी से कहा, मानो वह उतनी चतुर नहीं है जितनी उसने सोचा था, "इससे कुछ नहीं बन सकता। जमीन और मकान लेना है तो इस तरह बहुत दिन बिताने पड़ेंगे। कैसे कुछ होगा ? घरवाली अच्छी हो तभी तो काम पूरा होगा।"

खजनी—अच्छी नहीं तो बुरी हूँ ?

घूरन—अच्छी होती तो यहाँ जो रुपया है उसमें से थोड़ा लेकर उसे खुद बढ़ाती। यहाँ कितने लोग हैं जिनको रुपये पैसे की जरूरत रहती है। तुम भी जरा कोशिश करती तो कितनी जल्द ब्याज से पैसा दुगुना चौगुना होकर बढ़ता। सावधानी चाहिए। लेकिन तुम इस ओर कहाँ ध्यान देती हो ?

खजनी ने ध्यान से घूरन की सब बातें सुनीं। इधर कुछ दिन से उसको खुद अपने ऊपर भी गुस्सा आने लगा था। जब घूरन का कहना खतम हुआ तब उसने कहा, "इस तरह दूसरों को चूस कर जमा किया हुआ पैसा कभी टिकनेवाला नहीं।"

घूरन ने जवाब दिया, "तब हमारे ऊपर के अधिकारी सब क्यों इस तरह अपना पैसा बढ़ाते हैं ?"

इसके बाद घूरन ने बतलाना शुरू किया कि उसने कैसे एक एक सबक सीखा है। पैखाना सफाई के लिये हर जगह जाते आते समय वह सिर्फ भंगी का ही काम नहीं करता। वरन अपने चारों ओर देखता, समझता और सीखता भी है। जो जो उसने इस तरह सीखा है उसे उसने अपनी परिस्थिति के मुताबिक काम

में लाने का निश्चय किया है। इसी तरह वह अपना सुधार कर रहा है। हाँ, उसकी एक ही शिकायत है कि उसकी पत्नी ये सब बातें नहीं समझती है।

उसने पूछा, "क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि मैं तुम को काम करने क्यों नहीं जाने देता ? यदि तुम को भेजूँ तो जरूर ज्यादा आमदनी होती। फिर भी क्यों नहीं भेजता ? और मैं घर साफ सुथरा रहने पर क्यों जोर देता हूँ ? इन सबों के मूल में मेरा एक ही उद्देश्य है। लेकिन, तुम वह समझती नहीं।"

एक बार और घूरन ने अपने उद्देश्य को साफ साफ बतलाया। वह जो कुछ करता है खुद अपने लिये नहीं, भावी सन्तान के लिये ही करता है। वे कभी भंगी न बनें। अब तक कितने रुपये जमा हो गए हैं यह उसने खजनी को बतलाया। ३००) प्रेसिडेण्ट के पास हैं। सब मिला कर ७००) होंगे। अभी पास में जो है उसमें से भी एक हिस्सा अब वह प्रेसिडेण्ट साहब के पास जमा करेगा।

इतना मालूम हो जाने पर खजनी को थोड़ा सन्तोष हुआ। लेकिन उसको गुणहीन जो कहा था, उसका रोष अब तक गया नहीं था। उसने पूछा, "यदि प्रेसिडेण्ट साहब हमारा पैसा नहीं लौटायें तो ?"

यह सवाल सुन कर घूरन का कलेजा सन्न हो गया। "रुपये यदि नहीं लौटायें तो" ! यदि नहीं लौटावें तो वह क्या करेगा ? रुपये की जरूरत किसको नहीं होती ? घूरन का थोड़ी देर के लिये मानो दम ही रुक गया।

खजनी घूरन की परेशानी देखकर मन ही मन जरा खुश हुई।

पहली बार जब प्रेसिडेण्ट साहब के पास पैसा ले जाकर दिया तब घूरन इतना पैसे वाला नहीं था। पैसे के लिये इतना लालची

भी नहीं था। खजनी होशियार निकली। फिर भी प्रेसिडेण्ट जैसे बड़े आदमी एक भंगी के साथ धोखेबाजी करेंगे ?

उस रात को घूरन ने खजनी से कई विषयों पर बातें कीं। बहुत देर तक खजनी की चर्चा की राय ली। पर उसकी सब योजनाओं में खजनी का पूरा समर्थन मिल रहा है यह विश्वास घूरन को नहीं हुआ।

३

महावीर ने संघ का संगठन करने का निश्चय किया है। घूरन से राय तक नहीं ली। भंगियों का निश्चय घूरन को अलग ही रखने का था। उसके साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा।

घूरन को भी लगा कि लोग ऐसा ही करें। वे संघ कायम करें। उसको अलग ही रखें। इसकी उसे कोई परवाह नहीं थी। लेकिन उनके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। उसको मालूम था कि उनका यह निश्चय चलने वाला नहीं था। बिना कर्ज लिये ये लोग क्या अपना गुजारा कर सकेंगे ? अन्य भंगियों को और उसे आपस में बान्ध रखने का कारण वही लेन देन का संबन्ध था।

लेकिन इस तरह अलग रहना भी घूरन के लिये असाध्य हो गया। ओवरसियर साहब ने सुना कि भंगियों का फिर संघ बनने वाला है। प्रेसिडेण्ट ने भी सुना। अब इस संघ को भंग करने की जिम्मेदारी उसकी नहीं होगी तो किसकी होगी ?

घूरन को अब महावीर का सामना करना होगा। इतना ही नहीं। सब भंगी मिल गये हैं। लेकिन अधिकारी वर्ग यह जवाब सुनने के लिये तैयार नहीं था।

ओवरसियर ने पूछा, "महावीर से लड़ने में तुम्हें क्यों संकोच होना चाहिये ?"

घूरन—महावीर भैया से लड़ नहीं सकता । वह लड़ने वाला आदमी नहीं है ।

ओवरसियर यह समझ नहीं सका । घूरन ने कहा, "महावीर भैया को काम से ही क्यों नहीं हटा दिया जाय ?"

यह एक अच्छी सूझ थी । लेकिन उसकी प्रतिक्रिया हो सकती है । महावीर अब भंगियों का नेता है । उसको निकालने से सब एक साथ काम बन्द कर देंगे तो क्या होगा ? ऐसी स्थिति के लिये कोई प्रबन्ध किये बिना ऐसा करना ठीक नहीं होगा ।

दूसरे दिन महावीर से जब घूरन मिला तब उससे बोला नहीं । उसके बाद के दिन नाइट सोइल डिपो में घूरन ने महावीर की गलतियाँ निकालीं । उसके बाद सुनने में आया कि महावीर ने घूरन को गाली दी । उस रात को महावीर ने घूरन के घर आकर बड़े दुख के साथ कहा, "मैंने तुम्हें गाली नहीं दी । मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता । मुझे तो तुम्हारी उन्नति से खुशी ही है ।"

घूरन ने महावीर को खूब डांटा । महावीर आँसू बहाते चला गया । तब खजनी ने आकर पूछा, क्या करने जा रहे हो ? स्मरण रखो, महावीर भाई तुम्हारा कौन था ? और उसने तुम्हारे लिये क्या-क्या किया ?"

बीती बातें घूरन भूल नहीं सकता था । उसको सारी बातें याद आ गयीं । दुनिया में उससे स्नेह रखने वाला वही एक व्यक्ति था । फिर भी उसका विरोध करना जरूरी था । खजनी नहीं समझ सकेगी । कोई भी नहीं समझ सकता ।

उस दिन नाइट सोइल डिपो में घूरन एक समाचार लेकर पहुँचा । दूसरों से उसे कहने के लिए भीतर से कोई शक्ति उसको प्रेरित कर रही थी । डिपो में उसके अलावा सिर्फ बुद्धन आया था ।

और कोई नहीं। विचार संघर्ष से दब जाने का ऐसा अवसर घूरन के जीवन में इसके पहले नहीं आया था। वह अनजाने ही बुद्धन से कह बैठा, "साहूकार के घर में एक चोरी हुई है।" आवाज़ को और धीमी करके उसने आगे कहा, "कहा जाता है कि महावीर भैय्या ने ही चोरी की है।"

बुद्धन ने पूछा, "उस दिन की चोरी की बात कह रहे हो?"

घूरन—हाँ, हाँ। कहा जाता है कि एक बच्चे के गले से हार तोड़ लिया।

बुद्धन—पुलिस को मालूम हो गया?

घूरन—मालूम हो गया होगा। हमने तो कुछ कहा नहीं।

घूरन जल्दी अपना काम खतम करके चला गया। भंगीबस्ती में यह खबर दावानल की भाँति फैल गयी।

४

महावीर ने रो रोकर शपथ खायी कि उसने चोरी नहीं की। लोग उसके घर की तलाशी ले सकते हैं। ऐसा कोई धन पास में होता तो उसका कुटुम्ब क्यों भूखों रहता? कई दिन से दोनों शाम चूल्हा तक नहीं जलाया गया है।

सुखाड़ी ने पूछा, "कुछ दिन के लिये यहाँ से चले जाओ तो कैसा होगा?

इस पर सब एकमत हो गये। सत्य तो बाद में ही खुलेगा। इस बीच में क्या-क्या विपत्ति आ सकती है?

महावीर ने लड़खड़ाती आवाज में कहा, "मेरे बच्चों का क्या होगा?

बुद्धन ने कहा, "तुम इस बात की फिक्र मत करो। उन्हें हम लोग देखेंगे। ऐसे संकट के समय ये बच्चे हमारे ही बच्चे जैसे

रहेंगे । हमारे घरों में चूल्हा जलेगा तो इनको भी खाने को मिलेगा । आज रात को ही चले जाओ । शायद पुलिस खोज में होगी ।"

उस समय एक और सवाल उठा । बिना छुट्टी लिये जाने पर लौटकर जब आयेगा तब काम कैसे मिलेगा ? सुखाड़ी ने ओवर-सियर साहब से मिलकर उसकी तरफ से छुट्टी मांगना स्वीकार किया। पर कम-से-कम पाँच रुपया उनको दिये बिना छुट्टी मंजूर होने की उम्मीद नहीं थी ।

महावीर ने आँसू बहाते हुए कहा, "मेरे पास एक पैसा भी नहीं है ।"

एक मिनट के लिये सब चुप थे । बुद्धन ने कहा, "हम चन्दा करेंगे ।"

छुट्टी का कारण सिर्फ बीमार बतलाने का निश्चय किया गया । घर छोड़ जाने का सच्चा कारण किसी से भी नहीं बतलाने की सबों ने कसम खायी । महावीर ने रोते-रोते अपने कुटुम्ब और अपने मित्रों से विदा ली । बच्चों को चूमकर सबके रोने-धोने के बीच महावीर घर छोड़कर निकल गया ।

दूसरे दिन बुद्धन और सुखाड़ी ने घूरन से समाचार पूछा । घूरन ने कहा कि उसने पुलिस के एक आदमी से ही बात सुनी थी । सुखाड़ी ने कहा, "महावीर ने चोरी नहीं की है ।"

घूरन ने एक मतलब की हँसी हँस दी और कहा, "तुम लोग महावीर भैया को नहीं जानते । आदमी एक नम्बर का है ।"

सुखाड़ी—हाथ में पैसा रहने पर कोई भूखा रहता है ?

घूरन—बड़े चोरों का यही लक्षण है । पकड़े जाने के डर से खर्च नहीं करते ।

इसके जवाब में बुद्धन और सुखाड़ी को कुछ नहीं सूझा ।

शायद घूरन का कहना ठीक ही हो।

घूरन ने आगे कहा, "महावीर भैया के बारे में मैं कुछ झूठ नहीं बोलूंगा। उसने मेरी बड़ी मदद की है। लेकिन वह आदमी ऐसा काम करने से चूकने वाला नहीं है।

बुद्धन—हाँ, हो सकता है। उसने लिया होगा।

सुखाड़ी—हाँ, असम्भव नहीं है।

घूरन—लेकिन चीज़ कहाँ होगी?

बेचारे बुद्धन और सुखाड़ी दोनों को घूरन ने आसानी से विश्वास दिला दिया। महावीर ने उसके लिये क्या-क्या किया है? सबका वर्णन उसने सुनाया। तब पूछा, "ऐसे आदमी के बारे में मैं क्या झूठी बातें कह सकता हूँ?"

दोनों ने सब मान लिया। घूरन से अलग होने पर बुद्धन ने सुखाड़ी से पूछा, "तब हम उसके बच्चों को क्यों खिलायें-पिलायें?"

सुखाड़ी—मैं भी वही सोच रहा हूँ।

घूरन का उद्देश्य सफल हुआ। फिर भी उसका दिल हल्का नहीं हुआ। संघ का संगठन कुछ दिन के लिये रुक गया। महावीर भंगियों की नज़र में पहले की तरह आदर की जगह बनाये नहीं रख सका।

घूरन ने इतना सब नहीं सोचा था। वह जानता था कि महावीर उससे बहुत स्नेह रखता है। वह घर ही छोड़कर चला जायेगा इसकी उसे कल्पना नहीं थी। वह सोचता, क्या महावीर ने सचमुच चोरी की होगी या उसे सिर्फ डराने के लिये ही ओवरसियर ने यह सारी कहानी रची? सब बातों के लिये अपने को जिम्मेदार समझकर वह दुखी भी हुआ। जब महावीर लौट आयेगा तब वह उससे कैसे मिलेगा? और खजनी ये सब बातें जानेगी तो क्या कहेगी? क्या वह नहीं जानेगी?

भंगी फिर से घूरन से पहले की तरह कर्ज लेने लग गये।

५

सब भंगी इकट्ठे थे। उनको कुछ खास बातों पर विचार करना था। महावीर ने चोरी की है। चोरी का माल उसकी पत्नी ने छिपाया है। उस हालत में उस कुटुम्ब का संरक्षण करने की जरूरत नहीं है, बुद्धन ने अपनी राय प्रकट की। बात ऐसी है तो महावीर को या उसके कुटुम्ब को कुछ भी देने की कोई जरूरत नहीं है। सबों ने यह मान लिया।

सुखाड़ी ने कहा, "हम उस औरत को बुलाकर उससे सीधे क्यों न पूछें ?"

एक आदमी महावीर की झोंपड़ी की ओर गया।

बुद्धन—महावीर कहाँ है, किसी को भी नहीं मालूम है। छुट्टी कितने दिन की है ?

एक ने कहा, "पन्द्रह दिन की।"

बुद्धन—तब तो सोलहवें दिन आ ही जाना चाहिये।

"लेकिन उसने चोरी की है तो वह नहीं आयेगा।"

"नहीं आयेगा तो जाने दो।"

महावीर की पत्नी उधर लायी गयी। उससे बुद्धन ने अधिकारपूर्ण स्वर में पूछा, "सच कहना जी, चोरी का माल कहाँ है ?"

उस स्त्री की समझ में कुछ नहीं आया। उसने कहा, "कौन-सा माल भैया ?"

सुखाड़ी ने कहा, "हूँ, कौन-सा माल? साहूकार के घर से लाया हुआ ?"

वह स्त्री रो पड़ी। एक ने कहा, "क्यों जी, छिपाती क्यों हो ? सच कहो। महावीर ने जो चोरी की थी ?"

वह बेचारी क्या कहे ? उसका पति ऐसा काम करने वाला नहीं है । उसने चोरी नहीं की । उसका गवाह ईश्वर ही है । लेकिन कोई यह विश्वास नहीं करता । वह बेचारी रोयी और विश्वास दिलाने के लिये पिछले महीने की अपनी तकलीफों का वर्णन करने लगी, "एक दिन भी पूरा सेर भर चावल नहीं पकाया । पास में कुछ रहता तो बच्चों को कभी भूखों रहने नहीं देता ।"

सुखाड़ी ने अविश्वास सूचक भाव से सिर हिलाया और कहा, "तो यों ही कोई क्यों झूठ बोलेगा कि उसने चोरी की है ? इसमें थोड़ा सत्य जरूर होगा । साफ़-साफ़ कह देना ही अच्छा है ।"

उस स्त्री ने कसम खायी । इसके सिवा और वह कर ही क्या सकती थी ? सुखाड़ी ने एक न्यायाधीश का भाव बनाकर कहा, "आज तक तुम्हें आध सेर चावल का भात हम लोगों ने दिया । मालूम है क्यों ? यही सोचकर कि वह हम ही में से है । आगे से यह नहीं हो सकता । यह कहने के लिये ही तुम्हें बुलाया गया है । जिसने चोरी की है उसके परिवार को सहायता करने से हम भी अपराधी माने जायेंगे ।"

इस तरह महावीर का कुटुम्ब निराश्रय हो गया । बुद्धन का दिल ज़रा द्रवीभूत हुआ । उसने कहा, "महावीर चोरी का माल साथ लेकर गया होगा । इसको कुछ मालूम नहीं होगा ।"

सुखाड़ी ने विरोध किया, "चुप रहो जी, तुमको क्या मालूम ? यह बड़ी मक्कार है । इसी ने माल छुपाया है ।"

फूट फूट कर रोते हुए उस स्त्री ने फिर से कसम खाई । सुखाड़ी ने कहा, "जाओ, अब हम तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकते ।"

वह चली गयी । भंगियों ने निश्चय किया कि उसे मदद देने

की जरूरत नहीं है। उसने चोरी का माल अवश्य छिपाया है।

महावीर को डराने के लिये ओवरसियर ने जो तरकीब सोच निकाली थी, उससे पहले तो घूरन और महावीर में झगड़ा पैदा हो गया। फिर महावीर को भागना पड़ा। इतना ही नहीं, पुलिस महावीर की खोज में भंगी बस्ती में पहुँची। उसकी झोंपड़ी की तलाशी ली। महावीर की पत्नी को थाने ले गयी। उस दिन डर के मारे भोले-भाले भंगी घर ही नहीं लौटे। दूसरे दिन महावीर की पत्नी अपने को घसीटती हुई घर आई। उसके चारों बच्चे भूखे कोने में खड़े थे। पिछले दिन भी कुछ नहीं खाया था। बेचारी क्या करती? उसका शरीर सूजकर मोटा हो गया था। वह बीमार पड़ गयी। बड़ा लड़का भीख मांगने निकला। दूसरा लड़का बीमार पड़ गया।

भंगियों को विश्वास हो गया कि महावीर ने चोरी की। चोर का परिवार सहानुभूति का पात्र नहीं है। इसलिये उन्हें किसी तरह की मदद देने की जरूरत नहीं है। सुखाड़ी की यह राय सबों ने मान ली।

ऐसे ही दिन बीतने लगे। बेचारी दिन गिनती रही। बच्चों को धीरज देती रही कि अब पाँच ही दिन बाकी हैं। पाँच दिन बाद बापू आ जायेंगे। तब सब ठीक हो जायगा। वह चावल, दाल, सब्जी वगैरह लायेंगे और सब को भरपेट खाने को मिलेगा। बच्चे भी प्रतीक्षा करने लगे।

पन्द्रहवें दिन महावीर की पत्नी उठ बैठी। दूसरे दिन पति लौट आयेगा। तब क्या पुलिस उसको पकड़ लेगी? अगर नहीं आवे तो वह और बच्चे क्या करेंगे? ओह! उसको भी साथ ले जाता तो कितना अच्छा होता? रातभर उसको नींद नहीं आई। पति के पैर की आहट पाने के लिये कान खड़े करके पड़ी रही।

सबेरा हो गया। उस दिन भी महावीर नहीं आया।

एक बच्चे ने पूछा, "माँ, बापू क्यों नहीं आते?"

दिन पर दिन बीतता गया। एक सप्ताह बाद ओवरसियर साहब एक नये भंगी परिवार के साथ वहाँ आये। महावीर की पत्नी को अपनी बीमारी की ही हालत में अपना सामान लेकर बच्चों के साथ घर छोड़ कर निकल जाना पड़ा। उस घर में नया परिवार बसाया गया।

भाग ६

१

घूरन घर आया तो खजनी को नहीं पाया। रोज जब काम पर से लौटता तब खजनी को बाहर चबूतरे पर पाता। आज दरवाजा खुला ही पड़ा था। पिछवाड़े से उल्टी होने की आवाज आई। घूरन घबड़ाकर वहाँ पहुँचा।

खजनी उल्टी कर रही थी। उल्टी के जोर से उसकी सांस भी रुक जाती थी। काफी परेशान थी।

घूरन ने पूछा, "क्या बात है ?"

खजनी ने बीच में ही उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

घूरन—जाकर डाक्टर को बुला लाऊँ ?

खजनी—नहीं, जरूरत नहीं है।

थोड़ी देर बाद वह उठी। घूरन की घबराहट भी कुछ कम हुई।

घूरन—तुम्हें क्या हो गया है ?

खजनी ने सिर्फ मुस्करा दिया। भला, लोग बीमारी के बारे में पूछने पर मुस्कराते हैं ?

कुछ दिन से खजनी को एक तरह की कमजोरी मालूम होती थी। जब घूरन उसका कारण पूछता, वह कहती—"कुछ नहीं।" उन दिनों वह इधर-उधर चलने से थक जाती थी। ठीक से खाना भी नहीं खाती। अब उल्टी भी कर रही है। यह कैसी उल्टी है ?

घूरन—तुमको क्या हो गया है खजनी ? जरा बताओ तो सही।

खजनी—मैंने कहा न, कुछ नहीं है।

घूरन—तब उल्टी क्यों हुई ?

खजनी—यह स्वाभाविक है ?

घूरन—स्वाभाविक !

फिर खजनी के चेहरे पर वही मुस्कुराहट !

उस दिन खाना खाने के बाद घूरन कहीं बाहर नहीं गया। शाम को जब वह पौधों की क्यारियाँ ठीक कर रहा था, तब फिर उसने पिछवाड़े में खजनी के उल्टी करने की आवाज सुनी। यह क्या बात है ? वह कहती है कि वह बीमार नहीं है। पूछने पर वह सिर्फ हँस देती है।

आखिर खजनी ने खोल कर कह दिया। बात समझने पर घूरन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसकी मुस्कुराहट का वही मतलब था ! पत्नी जब पति को बतलाती है कि वह गर्भवती है तब भले ही वह उसका दसवाँ गर्भ ही क्यों न हो, उसका शरमाना स्वाभाविक है।

घूरन के लक्ष्य की प्राप्ति का भाग खुलने जा रहा है। उस शाम को पुष्प मालाओं से उसने घर सजाया। प्रार्थना की तैयारी हुई। धूप और अगरबत्ती की पवित्र सुगन्ध चारों दिशाओं में फैलाने लगी। खजनी जब दीप के सामने आँखें मूँद कर हाथ जोड़े प्रार्थना के लिये बैठी तब उसे भी उस दिन लगा कि उसको प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये। उसके बच्चा होने वाला है। उस बच्चे की आयु और आरोग्य के लिये प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये। उस दिन उसने सच्चे दिल से प्रार्थना की। घूरन के, प्रार्थना से उठने के बाद भी खजनी ध्यानमग्न बैठी रही। घूरन खड़ा देखता रहा। सन्तान के अभ्युदय के लिये माँ हमेशा भगवान से प्रार्थना करती है।

उस रात को पति-पत्नी दोनों को नींद नहीं आई। घूरन अपने उद्देश्यों की पूर्ति के बारे में सोचता रहा और खजनी अपने होने वाले उस बच्चे के बारे में, जो बढ़ कर बड़ा आदमी होगा।

दूसरे दिन घूरन ने एक बोतल दवा लाकर खजनी को दी। खजनी ने पूछा, "यह किस लिये ?"

घूरन—तुम्हें इसका सेवन करना है। बाबू लोगों के घरों में औरतें इस हालत में यही दवा पीती हैं। बच्चा होते समय पीड़ा नहीं होगी। और बच्चा भी स्वस्थ होगा।

तब उसने पूछा, "खजनी, तू लड़का चाहती है कि लड़की ?" खजनी ने कहा, "लड़का"। घूरन की भी यही इच्छा थी।

घूरन—क्यों जी, अभी पता चलेगा कि पेट में लड़का है या लड़की ?"

खजनी—शायद जिनके बच्चे हुए हैं वे कह सकें।

रोज कुछ न कुछ नई बातें उनमें आपस में होती थीं। घूरन पता लगाकर आता था कि गर्भवती स्त्री को क्या खाना है, कैसे रहना है, और खजनी का रहन-सहन उसके मुताबिक कर देता था। उन दिनों घूरन पैसा नहीं बचा सका। खर्च बहुत पड़ता था। लेकिन घूरन ने इसकी परवाह नहीं की। आखिर यह सब उसके बच्चे के लिये ही तो था ? लेकिन उसका खुले हाथों खर्च करना खजनी को पसंद नहीं था। घूरन ने उसे समझाया, "अजी, तुम क्यों फिक्र करती हो ? तुमको मालूम है, तुम्हारे पेट में कौन है ?"

खजनी ने मुस्कारते हुए कहा, "हाँ, हाँ, मालूम है, भंगी का लड़का।"

यह सुन कर घूरन अवाक् रह गया। यह उसने सोचा ही नहीं था। ओह ! कैसा अप्रिय सत्य है ? उसका लड़का भंगी का लड़का ही कहलायेगा !

घूरन ने खजनी से कहा, "तुमको ऐसा नहीं सोचना चाहिये। उस दिन पंडित जी ने कहा कि गर्भावस्था में औरतों को अच्छी-अच्छी बातों का ही ध्यान करना चाहिये। तभी बच्चा अच्छा होगा। यदि तुम यह सोचोगी कि वह भंगी का लड़का है तो वह भंगी ही होकर रहेगा।

खजनी—तब उसके क्या होने की बात सोचूँ ?

घूरन इसका निश्चय नहीं कर सका था कि उसका लड़का जज बनेगा, डाक्टर बनेगा या म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट !

खजनी घर में पुत्र के बारे में सोचती रहती। पाँच महीने के बाद वह पुत्र रत्न बाहर आयेगा ही। वह कैसा होगा? उसके जन्म के बाद खजनी को अकेली रहना नहीं पड़ेगा। वह देखने में अपने पिता के जैसा हो तो काफी है।

खजनी ने पुराने कपड़े साफ करके इकट्ठा कर लिये। एक पालना बनवा कर रखा। पानी औटने के लिये एक बड़ा बर्तन खरीद लिया। इस तरह उसने अपनी प्रसूति की तैयारी कर ली।

२

बहुत देर से भीतर से रुआई की आवाज आ रही है। ओह, कैसी जोर की रुआई ! अभी-अभी जन्म लिया। अभी उसे इस तरह रुलाने का क्या मतलब ? इस तरह रोने की उसमें ताकत कहाँ होगी ? घूरन ने पुकार कर कहा, "बच्चे को इस तरह मत रुलाओ।"

इसका जवाब तो भीतर से औरतों की रोकी हुई हँसी थी। घूरन को लगा कि उसने बेवकूफी की। धीरे-धीरे बच्चे का रोना बन्द हो गया। फिर भी वे उसे बाहर नहीं लातीं। बच्चे को पहले देखने का हक उसी का है। नहीं, वह तो माँ का है। मगर कम से

कम वे बच्चे को ज़रा दिखला कर तो ले जायँ ।

घूरन ने दरवाजे के छेद से भीतर देखा । लेकिन कुछ नज़र नहीं आया । ऐसा देखना भी ठीक न लगा । उसने दो तीन बार कहना चाहा कि बच्चे को ज़रा बाहर लावें । पर कहा नहीं ।

बच्चा फिर रोने लगा । घूरन फिर घबड़ाने लगा । इस तरह रोयेगा तो उसकी कहीं साँस ही बन्द न हो जाय । उसने फिर पुकार कर कहा, "इस तरह मत रुलाओ ।"

भीतर से जवाब आया, "नहला रही हूँ ।" वह खजनी की आवाज़ थी । थोड़ी देर में दरवाज़ा खोलकर धाई बच्चे को बाहर लाई ।

काँपते-काँपते पैर चलाने वाले उस बच्चे को देख कर घूरन को अपने स्वप्नों के साक्षात्कार का अनुभव हुआ । उसके हृदय और उसकी आँखें, दोनों को एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हुआ ।

धायी बच्चे को उसे देने लगी । लेकिन उसका हाथ बच्चे को गोद में लेने के लिये आगे बढ़ा नहीं । कमरे से आई हुई एक बुढ़िया ने कहा, "दस पैसा देकर ही बच्चे को लेना चाहिये जी !"

घूरन दो रुपया ले आया । लेकिन बच्चे को लेने में उसे एक हिचकिचाहट हुई । पैखाना साफ करने के हाथ से उसे कैसे ले ? लेकिन लेना जरूरी भी था । हाथ फैला कर उसने बच्चे को ले लिया । परन्तु उसी समय वापस भी दे दिया । भंगी के काम से उसको जितनी घृणा उस दिन हुई उतनी इसके पहले कभी नहीं हुई थी । उस बच्चे को भी घृणा होगी । वह अब दुर्गन्ध पहचान सकता है ? भंगी का शरीर स्नान करने पर भी दुर्गन्धित रहता है । उसके छूने से बच्चे को कुछ खराबी तो नहीं पहुँचेगी ? उसके बच्चे को भंगी के स्पर्श से बचकर पलना है । फिर भी बच्चे को

लौटा देने पर मन में उसे फिर से लेने की इच्छा हुई।

धायी वायी सब चली गईं। घूरन प्रसूति घर में गया। बच्चे को पास बुला कर खजनी चित्त लेटी थी। उसने जरा मुस्करा दिया। घूरन सोये हुए बच्चे को एकटक देखने लगा।

खजनी—उसको क्यों इस तरह देखते हो ?

"वह सो रहा है।" घूरन एक अपराधी की भाँति बोला। उसको लगा कि वहाँ उसको खड़ा नहीं रहना चाहिये। लेकिन वहाँ से जाने का भी उसका मन नहीं हो रहा था।

खजनी—इसको तुम क्या बनाना चाहते हो ?

वह खुद यह सवाल कितनी ही बार अपने से कर चुका है ? लेकिन निश्चित जवाब उसको अभी तक नहीं मिला है। अपनी जिम्मेवारी से घूरन घबड़ाया। बच्चे को क्या बनाना है इसका निर्णय उसको करना है।

माँ और पुत्र को इस तरह देख कर उसको महसूस हुआ कि वह एक दूसरी दुनिया में है। माँ और पुत्र की इच्छायें एक हैं। माँ और प्यारा पुत्र जो चाहेंगे उसे पूरा करना उसका कर्तव्य है।

हाँ, यह ठीक ही है। उसका सिर्फ देना ही काफी नहीं है। उसका अपना अलग कुछ नहीं है। उसका सिर्फ कर्तव्य ही कर्तव्य है। उन कर्तव्यों का पालन होना चाहिये। उसको उस बच्चे की माँ की आज्ञा का भी पालन करना है।

३

दूसरे दिन जब घूरन काम पर वकील साहब के घर गया, वहाँ पर भी एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। वकील साहब की लड़की भी गर्भवती थी। उसके लड़की हुई।

वकील की पत्नी ने पूछा, "तुम्हारी स्त्री को कल किस समय बच्चा हुआ ?"

घूरन—दोपहर को।

वकील की पत्नी—नक्षत्र का कोई बुरा असर तो नहीं है?

घूरन की समझ में यह बात नहीं आई। उसने कहा, "बच्चा सब तरह से ठीक है।

वकील की पत्नी ने कहा, "कुछ नक्षत्रों का समय के मुताबिक कुछ-कुछ बुरा फल हुआ करता है। कभी वह बाप को होता है, कभी मां को, कभी मामा को। वही जानना चाहती थी।"

यह सुनकर घूरन के दिल में तीर जैसा लगा। किस पर पड़ेगा? क्या असर पड़ेगा? इसका कैसे पता लगाया जा सकता है?"

वकील की पत्नी ने ज्योतिषी के घर जाकर पूछने की राय दी। ज्योतिषी के घर जाकर उसने बच्चे की जन्मपत्री तैयार करने का इन्तज़ाम किया।

उस दिन वह उदास मन ही घर लौटा। कौन जाने, ज्योतिषी बच्चे के जन्म का कैसा फल बतलायेंगे? अगर अच्छा नहीं हुआ तो? भगवान करे ऐसा न हो। दिल से उसने प्रार्थना की।

बच्चे को देखने के लिये कुछ स्त्रियाँ उसके घर आयी थीं। उदास घूरन को यह पसन्द नहीं पड़ा। उसने खजनी से पूछा, "ये सब यहाँ क्यों आई?"

कैसा अर्थहीन सवाल था! खजनी ने जवाब दिया, "यही रीति है।"

घूरन—"यही रीति है? लेकिन यहाँ किसी के आने की जरूरत नहीं।"

खजनी—तब जाकर मुहल्ले भर में कह आना कि यहाँ कोई न आये। अजीब बात है।

खजनी के इस कथन में घूरन ने एक प्रबल अधिकार और शक्ति का अनुभव किया। उसके मन में आया कि खजनी को, वकील साहब की पत्नी ने जो कहा, सुना दे। उसको मालूम था

कि वह सुनेगी तो उसका अधिकारपूर्ण स्वर अपने आप गिर जायेगा। लेकिन अब वह माँ हो गयी है। उसको कैसा लगेगा?

घूरन के गुस्से ने रुख बदला, "मेरे बच्चे को ऐरे-गैरे सब आकर देखें यह मुझे पसन्द नहीं है।" खजनी के चेहरे की मुद्रा बदल गयी। उसने पूछा, "तुम्हारा बच्चा?"

यह एक असाधारण व अर्थपूर्ण सवाल था। उसका अर्थ घूरन की समझ में नहीं आया। भावावेश में उसने पूछा, "हाँ, मेरा बच्चा! क्या मैं उसका बाप नहीं हूँ?"

खजनी—हाँ, ठीक है। तुम उसके बाप हो। लेकिन तुम्हें भगवान का भी ख्याल करना चाहिये। अभी यह पैदा ही हुआ है। यदि मर जाय तो?"

घूरन डर गया। चिल्ला उठा, "महापापी।"

खजनी—क्यों? यह भगवान का है। याद रखो, ऐसा कहना उचित नहीं है।

घूरन चुप हो गया। वह फिर चिन्ता-सागर में डूब गया। क्या खजनी ने भी वकील साहब की पत्नी की बात जान ली? उसने कुछ लोगों को कहते सुना है कि बाल बच्चे नहीं रहें तो कितना अच्छा होता है। घूरन ने मन-ही-मन प्रार्थना की कि बच्चा दीर्घायु होवे। इतना ही काफी नहीं है। उसने दुबारा प्रार्थना की कि बच्चे की माँ भी दीर्घायु होवे। यह भी काफी नहीं है। उसका भी जीना जरूरी है। उसने अपने लिये भी प्रार्थना की। इस तरह कई बातों के लिये कई बार उसने प्रार्थना की। फिर भी बहुत-सी बातें बाकी रह गयीं।

४

घूरन का बच्चा एक सम्पन्न घराने के बच्चे के जैसे पाला

जाता है। और साथ ही उसकी माँ खजनी भी। खजनी का भी जीवनस्तर स्वाभाविक रूप से ऊंचा हो गया। घूरन हमेशा अच्छी अच्छी चीजें खरीद कर लाता था। वह चाहता था कि खजनी खूब खाये और स्वस्थ रहे। बच्चा उसी का तो दूध पीता है। उसकी देखभाल वही करती है। इसलिये वह चाहता था कि वह भी सदा साफ सुथरी रहे। हर रोज़ वह अपने घर में कोई न कोई सुधार लाना चाहता था।

उन दिनों घर-घर पैखाना सफाई के लिये जाते समय वह बच्चों की बातों को ध्यान से समझने की कोशिश करता। उसने चिकित्सा की कुछ दवाएं भी समझ लीं।

उसके बेटे का नामकरण होना चाहिए। अपने वार्ड के सब बच्चों का नाम उसको मालूम है। कौन-सा नाम रखे? नाम के अलावा उसको एक दुलार का नाम भी रखना चाहिए।

घूरन ने बेटे का नाम 'मोहन' रखा। उसको 'ललन' कहकर पुकारने का निश्चय किया। खजनी ने भी अपनी सम्मति दी। उस दिन से उसे 'ललन' कहकर पुकारना तय हुआ।

जब वकील साहब की पत्नी ने सुना कि घूरन के लड़के का नाम मोहन रखा गया है, वह हँस पड़ीं। उनकी हँसी से घूरन का मानों दिल बैठ गया। उस हँसी में दंभ और अवहेलना की कैसी ध्वनि थी। मानों भंगी इस तरह का नाम रखने का अधिकारी नहीं है।

उस घर से बाहर निकलते समय उसका मन विचारों का एक रणक्षेत्र बन गया। क्या उसका बेटा आदमी का बच्चा नहीं माना जायगा? क्या अपने बच्चे का अपनी इच्छानुसार नाम भी नहीं रख सकता? दूसरा कोई भले ही उसे प्यार न करे। क्या वह भी उसे प्यार नहीं कर सकता?

घूरन के दिल के कोने कोने में व्यंग्य की वह हँसी पुन: गूंज उठी। भंगी के लड़के का नाम अच्छा नहीं होना चाहिए! दांतों तले होंठ दबाकर उसने मन में निश्चय किया कि वह अपने लड़के का नाम 'मोहन' ही रखेगा और उसे 'ललन' ही कहकर पुकारेगा। वह सबको यह जता देना चाहता है कि भंगी के लड़के का भी दुलार का एक नाम है।

डाक्टर साहब के घर जाकर उसने कहा, "डाक्टर साहब कल था मेरे लड़के का नाम करण। उसको 'मोहन' नाम दिया है।"

उसने डाक्टर साहब के चेहरे को गौर से भाँपने की कोशिश की। उसको लगा कि डाक्टर का होंठ ज़रा टेढ़ा हो गया। उन्होंने सुकेशिनी और सुलोचना नामवाली कितनी ही गंजे सिरवाली और बदसूरत आँखों वाली औरतों की चिकित्सा की होगी। तो 'मोहन' का वास्तव में मोहन होना क्यों जरूरी होना चाहिये?

घूरन ने साहूकार के घर में भी अपने लड़के का नाम सुनाया। यह भी कहा कि उसको एक दुलार नाम भी दिया है। इस प्रकार सब घरों में उसने कहा। उसको लगा कि लड़के का यह नामकरण वर्तमान सामाजिक स्थिति में एक चुनौती है। और भी कई बातों में उसको चुनौती देनी पड़ेगी—यह भी उसको मालूम हो गया। लेकिन कब देनी पड़ेगी, अभी उसे मालूम नहीं था।

प्रेसिडेण्ट साहब की पत्नी ने कहा, "तब उसको ललन भंगी कहकर पुकारना होगा, क्यों?" और हँस पड़ीं।

घूरन कहना चाहता था कि वह भंगी नहीं होगा। लेकिन उसने अपने को रोक लिया। मन में सोचा कि यह बात आगे चलकर लोग आप समझ जायेंगे।

उस दिन भी बहुत उदास होकर वह घर लौटा। उसने निश्चय

किया कि वह बच्चे को "ललन" नाम से अवश्य पुकारेगा।

उसका बच्चा एक दिन ओसारे पर पेटके बल लेटकर खेल रहा था। नजदीक आया तो उसने देखा कि बच्चा पेशाब और पखाना करके उसमें हाथ मार मार कर खेल रहा है।

घूरन को गुस्सा आया। उसने पुकारा, "खजनी, खजनी।" यह असाधारण बुलाहट सुनकर खजनी चौके से बाहर आयी। पति को झुंझलाया खड़ा हुआ पाया। वह कारण ताड़ गई।

घूरन—अजी, वह क्या है ?

खजनी बच्चे को उठा ले गई। घूरन का गुस्सा और बढ़ गया। बच्चा उस तरह पड़ा रहा तो भी खजनी को अखरा नहीं। घूरन उसे लगा डाँटने। खजनी को भी गुस्सा आया। उसने कहा, "बच्चे कभी कभी ऐसा ही किया करते हैं।"

घूरन—मगर मेरे घर में ऐसा नहीं होना चाहिये।

खजनी—अभी तुम्हीं क्या करके आ रहे हो ? तुम्हारा ही बच्चा है न ?

घूरन—इसलिये उसको भी ऐसा ही करना चाहिये ?

खजनी ने कोई जवाब नहीं दिया। घूरन को लगा कि उसका गुस्सा करना निरर्थक था।

५

बच्चे ने पहले पहले मुँह से "माँ" आवाज निकाली। तब खजनी ने जवाब दिया, "क्यों बेटा ?" ऐसा कहने का उसको हक था। लेकिन जब उसने "बापू" शब्द का उच्चारण किया तब जवाब देने में घूरन को एक तरह का डर लगा। वह भंगी था। लेकिन बच्चा ? बच्चा कौन है ? खजनी ने शिकायत की, "वाह, बच्चा पुकारता है, लेकिन जवाब तक नहीं मिलता।"

यह बात नहीं कि घूरन जवाब देना नहीं चाहता था। बच्चे का पिता होने से उसकी पिता का हक पाने की तीव्र इच्छा तो थी। लेकिन एक डर था। उसका बचा यह न जान पाये कि बाप भंगी है। उसके मन में ऐसा घृणित विचार नहीं आना चाहिये। लेकिन खजनी यह नहीं समझती।

खजनी ने कहा, "वह कितना भी बड़ा हो जाय उसका बाप ही उसका बाप रहेगा।" तब बच्चे से उसने कहा, "क्यों, ठीक है न बेटा ?"

बच्चे ने मुस्कुरा दिया, मानो समर्थन कर रहा हो।

घूरन—खजनी, उसके पालन पोषण का सारा भार उठाऊँगा। उसे बड़ा बनाऊँगा। इतना काफी है। बाकी बातें उसे क्यों मालूम होने दी जायँ ?

खजनी—वाह, उसको मालूम नहीं होना चाहिए ? यह कैसी पागलपन की बात कहते हो ?"

थोड़ी देर विचारमग्न रहकर घूरन ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि मोहन यह न जानने पाय कि वह भंगी का लड़का है।"

खजनी—यह कैसे संभव है ?

घूरन—वह जानेगा तो यह उसके अपमान का कारण होगा।

खजनी—इसमें अपमान क्या है ? फिर वह किसे अपना बाप कहेगा ?

यह भी एक सवाल था। "वह किसे अपना बाप कहेगा ?" भंगी का लड़का होनेमात्र से क्या क्या तकलीफें उसको झेलनी पड़ेंगी, घूरन सोचने लगा। आदमी कितना भी बड़ा होजाय, भंगी के लड़के की असुविधायें और तकलीफें तो रहेंगी ही।

घूरन—उसको हमारा बचा होकर जन्म ही नहीं लेना चाहिये था।

खजनी—हमारा बच्चा होकर जन्म ही नहीं लेना चाहिए था ? इसका क्या मतलब ? मैं समझी नहीं।

घूरन ने बच्चे के नामकरण की घटनाओं का वर्णन उसको सुनाया। "मैं अपने बच्चे के बारे में दूसरे भंगियों से जब बातें करता हूँ, तो वे भी हँस देते हैं। मानो भंगी के अच्छा बच्चा नहीं होना चाहिये। उसे दुलार का नाम नहीं देना चाहिये। वह अपने बच्चे को दुलारे भी नहीं। तब जिस बच्चे को बड़ा बनना है, वह क्यों भंगी का लड़का होकर जन्म ले ?

घूरन का तर्क खजनी की समझ में नहीं आया। वह घूरन की भाँति भावना जगत् में नहीं विचरती। और न आकाश कुसुम ही तोड़ना चाहती। उसकी एकमात्र अभिलाषा थी कि उसके बच्चे का भविष्य अच्छा हो, वह दीर्घायु और स्वस्थ रहे। बच्चे का बढ़ना, उसकी चंचलता, उसकी हरेक बात घूरन को अनेक तरह के भावों से पुलकित करती रही। लेकिन इस आनन्दानुभूति में एक भारी पीड़ा भी छिपी थी। पितृ सुख भोगने में स्वनियंत्रित बाधा जो थी। बच्चा उलट कर जब रोने लगता है तब उसको उठाने के बदले वह बेचैन ही देखता रहता। उसे "बेटा" कहकर पुकारने की तीव्र इच्छा होती, लेकिन निश्चय किया था कि "बेटा" कहकर नहीं पुकारेगा। उसे डर था कि यदि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करे तो उससे मोहन के जीवन में बाधायें उपस्थित होंगी। वह अपने को रोकेगा, ज़रूर रोकेगा। उसपर अपनी छाया तक नहीं पड़ने देगा।

बच्चे को बढ़ते देखकर घूरन खुश होता। बेटे को "बेटा" बिना कहे, उसको बिना छुये स्वाभाविक पैतृक आनन्द से उसने अपने को वंचित रखा। अपनी असम्भव अभिलाषाओं का शिकार बन अपनी स्थिति से घृणा करने का यही फल हुआ।

मोहन की कमर में सोने की करधनी और हाथ में सोने का कड़ा है। घूरन दूसरे बच्चों के साथ अपने मोहन का मिलान करके देखता तो उसका बच्चा सुन्दर और होशियार मालूम पड़ता था। उसे इच्छा होती थी कि वह मोहन को दूसरों को दिखलावे और चकित कर दे।

एक शाम को बच्चे को गहना पहना कर पति पत्नी उसे लेकर पार्क में गये। बच्चा खजनी की गोद में था। सभ्य समाज के अनेक लोग भी वायु सेवन के लिये वहाँ आये थे। उनके बच्चे "लान" में लोट पोटकर खेल रहे थे। घूरन देखता था कि कोई उसके बच्चे को ध्यान से देखता है कि नहीं।

मोहन ने भी बच्चों को खेलते देख कर नीचे जाना चाहा। खजनी की गोद में वह छटपटाने लगा। पास ही में बैठी एक स्त्री ने उसे देखा और पति से कहा, "देखिये, वह लड़का अपनी मां की गोद में कैसे छटपटा रहा है। वह बड़ा होनहार मालूम होता है।"

पति ने राय प्रकट की, "देखने में तो वह उसका बच्चा नहीं लगता।"

स्त्री—हाँ, लड़का कुलीन दीखता है।

पति ने ध्यान से देख कर कहा, "वह स्त्री एक भंगी की स्त्री है। बच्चा उसका नहीं होगा।"

घूरन ने यह बातचीत पूरी-पूरी सुन ली। उसका दिल अभिमान से भर गया। उस का बच्चा देखने में कुलीन लगता है! यही उसको गर्वित करने वाली बात थी।

६

बच्चा माँ को "माँ माँ" कहे—इसी से माता की तृप्ति नहीं

होती। वह यह भी चाहती है कि बच्चा अपने पिता को "बापू" कहे। जब पिता घर नहीं रहता तब भी वह बच्चे को बापू कहना सिखलाती रहती है। घूरन के रोकने पर भी वह रुकता नहीं। मां बच्चे को उसके बाप की ओर इशारा करती और उसे "बापू" कह कर पुकारना सिखलाती। जहां बाप बच्चे को अपनी जान से बढ़ कर प्यार करता है और जहाँ पति-पत्नी का बन्धन प्रेम पूर्ण है, वहाँ पर बच्चा अपने बाप को बिना पहचाने कैसे बढ़ सकता है?

मोहन भी अपने बाप को पहचानने लगा। उसे देखकर खिल-खिलाता। उसकी प्रतीक्षा में खड़ा रहता और उसे "बापू-बापू" कह कर पुकारता था। लेकिन घूरन उसे न गोद में लेता, न चूमता था। यह सुख मोहन को नहीं मिला।

कैसा अद्भुत है घूरन का त्याग! जिस आनन्द के लिये प्राणि-मात्र तरसता है उससे वह अपने को वंचित रखता है।

मोहन की एक इच्छा हुई। कैसे हुई कौन जाने? शायद बच्चों को जन्म से ही होती हो। और उसे कोई रोक नहीं सकता।

मां की गोद में पड़े-पड़े मां से कहने लगा, "माई आज मैं बापू के साथ ही खाना खाऊँगा।" खजनी पुलकित हो उठी। उसने कहा, "हाँ बेटा, खा लेना।"

तब फिर हुआ एक मुश्किल सवाल, "माई, बापू मुझे गोद में क्यों नहीं लेते?"

खजनी बेचारी इसका क्या जवाब देती! मोहन ने आगे कहा, "मैं बापू से गोद में लेने के लिये कहूँगा।"

खजनी ने कई बार उसे खिलाने की कोशिश की। लेकिन मोहन ने नहीं खाया। बापू के साथ खाना खाने के लिये वह प्रतीक्षा में बैठा रहा। खजनी को डर था कि कहीं उसकी इच्छा

इच्छा ही न रह जाय। उसने पति से उसका अर्थहीन हठ छुड़ाने का निश्चय किया। इस तरह कब तक काम चलेगा? बच्चा अपना हक ही तो चाहता है? अभी माँगने लगा है। आगे वह लेकर ही रहेगा।

काम पर से घूरन को लौट आते दूर से ही मोहन ने देख लिया। वह दौड़कर भीतर गया। मां से कहा, "माई, बापू के ही साथ मैं खाना खाऊँगा।"

खजनी—बेटा, बापू से कहो।

मोहन ने मुँह फुलाया। कहा, "न, तुम ही कहो।" वह आँखें मलते हुए सिसकने लग गया। घूरन भीतर आया तो मोहन को सिसकते पाया। पूछा, "बच्चा क्यों रोता है"

खजनी ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया, "वह अपने बाप के साथ बैठ कर खाना-खाना चाहता है।"

यह सुनकर घूरन हक्काबक्का रह गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि बच्चा इस तरह मचल उठेगा। पैखाना साफ करने वाले अपने हाथों से वह कैसे भात सानकर उसे खिलायेगा? और उसे निराश भी कैसे करें? घूरन को सालों के अपने काम की दुर्गन्ध का, जो नाक में घुसी बैठी थी, घृणास्पद अनुभव हुआ। धोते और साफ करते समय मैले पानी आदि का छींटा भी उसके शरीर पर पड़ा है। क्या वह भी आदमी है? उसके भी दिल और दिमाग है? क्या उसने भंगियों की संख्या बढ़ाने के लिये ही बच्चा उत्पन्न किया? उसका बेटा कभी बड़ा आदमी बन सकेगा? नहीं। घूरन को लगा कि उसकी सारी योजना व्यर्थ जायगी। उसको भी चाहिये था कि सबेरे काम पर जाते समय एक हांडी भी साथ लेकर घरों से जो कुछ बासी बचा खुचा मिले सब उस में इकट्ठा करके अपनी गाड़ी पर रखकर घर लाता और वही खिल-

कर बच्चे को पालता। भंगी अपने लड़के को इस गन्दगी से कैसे बचा सकता है ? उसको बिस्कुट से ज्यादा ये गन्दी चीजें ही रुचिकर मालूम होंगी ? नहीं भी दें तब भी वह वही चीजें मांगेगा। क्योंकि ऐसी ही उस की परम्परा की रुचि होती है।

फिर भी घूरन ने निश्चय किया कि वह इस बात की कोशिश करेगा कि उसका लड़का इस गन्दगी से अलग रहे; अपने बाप के भंगी होने की बात बिना जाने ही बड़ा हो जाय; उसमें भंगियों की दुर्गन्ध घुसने न पावे और भंगी जीवन से वह घृणा करे। इस-लिये जरूरी है कि वह अपने बाप से जरा अलग रहे। उसे अपना बाप ही न समझे। और बाबू कहकर न बुलावे। घूरन अपने लिये और कुछ नहीं चाहता। उसकी एकमात्र इच्छा थी कि उसका बच्चा बड़ा आदमी बने। उसके लिये वह पूरी कोशिश करेगा। उसी में उसका सारा सुख है।

फल यह हुआ कि उस दिन घूरन ने खाना नहीं खाया।

भाग ७.

१

मोहन के कोई साथी नहीं था। उसके घर के आसपास साहू-कारों के घर थे। उन लोगों के घरों के बाद कुछ गरीबों के घर थे। सब घरों में बच्चे थे। लेकिन मोहन किसी बच्चे के साथ नहीं खेलता था।

वह अपने घर के ओसारे में खड़ा-खड़ा पड़ोस के एक सेठ जी के अहाते में बच्चों का खेल देखा करता था। उस अहाते के दुमंजिले के बरामदे से एक छोटी सुन्दर लड़की खड़ी-खड़ी मोहन को देखा करती थी। दोनों कभी-कभी आपस में इशारे से बातें भी करते थे। लेकिन दोनों के बीच एक ऊँची अभेद्य दीवार खड़ी थी।

सामने सड़क पर लोगों की भीड़ और बच्चों की दौड़धूप भी मोहन देखा करता था। एक लड़का भागता तो उसे पकड़ने के लिये दूसरा पीछा करता। मोहन सोचा करता, "ये कहाँ तक दौड़ते होंगे? आह! कितना मजा आता होगा।" उसको उन बच्चों की दौड़ादौड़ी देख कर बड़ा आनन्द आता था। कई बार उनके साथ-साथ वह भी ठठाकर हँसता था। पानी के दिनों में गढ़ों में इकट्ठे हुए पानी में कागज की नाव डालकर वे बच्चे खेलते। गरमी में दोपहर को वे पास के नाले में कूद-कूद कर पानी में देर तक खेलते। उन गरीब बच्चों की आजादी देखकर मोहन चकित होता। उनमें कुछ बच्चों ने उसे अपने साथ खेलने के लिये बुलाया। कुछ ने मुक्का भी दिखलाया। फिर भी उसे उनके साथ खेलने के लिये

बाहर जाने की इच्छा होती थी। पर उसे जाने की मनाही थी।

एक दिन मोहन फाटक पर रोटी का टुकड़ा लिये खा रहा था। कोई एक लड़का उसके पास आया। उस लड़के ने उस में से एक टुकड़ा माँगा। मोहन ने दे दिया। दोनों में आपस में बातें होने लगीं।

लड़का—आते हो खेलने ?

मोहन—माँ नाराज़ होगी।

लड़का अपने साथियों के पास चला गया। इधर मोहन को नहलाने के लिये उसकी माँ ने बुला लिया।

मोहन को एक साथी मिल गया। वह बाहर की खबरें लाकर मोहन को सुनाता। एक कार के नीचे एक कुत्ता दबकर मर गया। किसी होटल वाले ने एक लड़के पर गरम पानी फेंका। पुलिस वाले ने कैसे उनमें से चार लड़कों को बहुत दौड़ाकर तंग किया। ऐसी बहुत दिलचस्प कहानियाँ मोहन को सुनने को मिलने लगीं। वह सोचता, आज़ादी से घूमकर देखना कितना मज़ेदार होता होगा।

मोहन अपनी माँ की आँख बचा कर रोटी केला आदि लेकर अपने दोस्त को देने लगा। एक बार दो दिन लगातार उसका दोस्त नहीं आया। मोहन बहुत चिन्तित रहा। तीसरे दिन आया। उसने कहा, "नगर में एक बड़े व्यापारी के घर में शादी थी। दो दिन वह वहीं था। बड़ा भारी भोज था। वह और उसके बाकी साथी सबों ने जी भरकर खाया। कितना मज़ा आया! क्या-क्या खाने को मिला, उसने मोहन को कह सुनाया। वह फिर कहीं जाने की जल्दी में था। उसने कहा कि एक जमींदार के घर में बड़ा भारी उत्सव है। पाँच हाथियों को सजाकर ठाकुर जी का जुलूस निकाला जाने वाला है। आतिशबाजी भी होगी। वह वहीं जा रहा है।

मोहन आश्चर्य से उस भिखमंगे बच्चे की तरफ ताकता रहा। उसने कहा, "तुम भी आओ न ?"

मोहन—नहीं, मां आने नहीं देगी।

लड़का—तो मैं जाता हूँ।

मोहन—तुम्हारी मां तुम्हें घर से बाहर जाने से रोकती नहीं ?

लड़का—मेरी न मां है न घर। अच्छा, मैं जाता हूँ। जुलूस निकलने का समय हो गया है।

वह लड़का कुछ गाता हुआ चल पड़ा। मोहन उसको देखता थोड़ी देर खड़ा रहा। दोनों की मैत्री इस तरह दिन-दिन बढ़ती गई। एक दिन सजनी ने देखा तो उस तरह के बच्चों से मिलने जुलने से मना किया। परन्तु वह मैत्री दृढ़ होती गई। माँ की आँखें बचाकर मोहन फाटक पर आकर उससे मिल लिया करता था। मोहन के लिये लड़का तो एक अद्‌भुत वस्तु जैसा था। उसके मां न बाप हैं, न घर। बिलकुल आजाद होकर वह कैसे घूमता है !

२

इस भिखमंगे बच्चे से मोहन कई बातें जान गया। वह मोहन के बाप को रोज चन्दनवन के होटल के पास देखता था। मोहन का बाप भंगी है।

इस प्रकार मोहन को अपने एक सवाल का जवाब मिला, जो वह हमेशा अपनी मां से पूछा करता था। जब वह मां से पूछता, "बापू कहाँ जाते हैं ?" वह कहती, "काम पर।" मोहन पूछता, "कैसा काम", तो वह कहती कि घर में खाने पीने की चीजें खरीद कर लाने के लिये कुछ पैसा कमाने का काम। "अब मोहन को मालूम हो गया कि उसका बाप भंगी का काम करने चन्दनवन जाता है।"

उस लड़के ने यह भी कहा कि उसके भी एक बाप था, वह भी भंगी था। उसका नाम था महावीर। लेकिन उसको अपना नाम नहीं मालूम है।

उस दिन मां से मोहन को एक और सवाल करना था।

मोहन—भंगी का क्या माने है माई ?

जवाब देने में सकुचाती हुई खजनी ने बच्चे को डाँटा, "क्या फ़िज़ूल बातें पूछता रहता है ?"

मोहन को डर लगा कि कहीं गुस्से में पीट न दे।

उस रात को खजनी ने घूरन से मोहन का प्रश्न कह सुनाया। घूरन सुनकर घबड़ा गया। थोड़ी देर के बाद उसने एक लम्बी साँस खींचते हुए कहा, "हाँ, मुझे डर था कि वह जान जायगा। लेकिन अभी यह नहीं होना चाहिये था।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने फिर कहा, "खजनी, शायद तुम्हारा कहना ही ठीक निकले। हमारा बच्चा उतना बड़ा आदमी नहीं बन सकेगा। मैं हमेशा यही सोचता रहता हूँ।"

पति के ये वचन सुनकर खजनी के दिल में निराशा की दारुण ज्वाला भभक उठी।

पति की महत्वाकांक्षा का वह खण्डन किया करती थी ज़रूर। लेकिन वह भी दिल में अपने बच्चे को एक बड़े आदमी के रूप में देखना चाहती थी।

घूरन ने आगे कहा, "मैं सोचता था, मोहन का यह जानना कि वह भंगी का लड़का है, और लोगों का भी यह कहना कि वह भंगी का लड़का है, ये दोनों बातें गड़बड़ी पैदा करने वाली साबित होंगी।"

खजनी—मैं भी सोचती थी कि उसके अज्ञान में रहने से भी क्या फायदा ? ज़रा सोचो तो, उसको कहाँ से लड़की मिलेगी?

भंगी की लड़की के सिवा और कौन मिल सकती है ?

घूरन—यह ठीक है। लेकिन मैं उसे भंगी का लड़का मानकर नहीं पाल सकता। मैं भले ही भंगी हूँ। पर मेरा लड़का कम से कम भंगी न कहलाये।

खजनी—हाँ, कहलायेगा भंगी के लड़के का लड़का।

घूरन—ऐसा ही सही।

खजनी—भंगी को किसने बनाया ?

घूरन—यह तुम भी सोचा करती हो ?

खजनी—हाँ, कभी कभी सोचती हूँ। पहले मुझे इस तरह का ख्याल नहीं होता था। लेकिन अब मैं भी सोचने लगी हूँ।

घूरन—भंगी होने से तुमको भी घृणा होती है ?

खजनी—कैसा सवाल है ? मैं क्या जवाब दूँ ? मैं घृणा कैसे कर सकती हूँ ?

घूरन को लगा कि उसकी पत्नी भी उसकी तरह सोचती है। खजनी ने पूछा—क्या कभी समय आयेगा जब कि समाज में भंगी ही नहीं रहेगा ?

घूरन—कौन जाने ?

खजनी—नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। जहाँ पैखाना है वहाँ भंगी भी जरूर रहेगा।

घूरन की चिन्ता इस बात की नहीं थी। वह खुद भङ्गी बने रहने को तैयार था। लेकिन मोहन जो समझ गया कि उसका बाप भङ्गी है। अपना अपमान वह कैसे बरदाश्त करेगा ? उस वजह से किन किन कठिनाइयों और बाधाओं का उसे सामना करना पड़ेगा ?

खजनी ने पूछा, "यह काम छोड़ क्यों नहीं दिया जाय ?"

घूरन—तब मकान और जमीन कैसे बनायेंगे ? ५००) और

जमा करना है उसके लिये। वह रकम जमा करने के बाद यह काम छोड़ दूँगा। आजकल पहले की तरह बचा भी नहीं पा रहा हूँ।

खजनी के मन में यह भी एक चिन्ता बढ़ी। "कुल कितना जमा किया है? कोई ठीक हिसाब है? जो दिया है उसके लिये कोई प्रमाण है? प्रेसिडेण्ट साहब यदि धोखा दें तो?"

घूरन ने उसे हिसाब समझाया और कहा कि प्रेसिडेण्ट साहब धोखा देने वाले आदमी नहीं हैं।

खजनी—भगवान ही मालिक है।

३

वकील साहब के यहाँ उनकी लड़की की बच्ची का विद्यारम्भ हो गया। घर पर एक अध्यापक ने आकर उसको पढ़ाना शुरू किया। घूरन के सामने अब मोहन को स्कूल में भर्ती कराने का सवाल उठा।

घूरन के घर के पास ही एक अध्यापक कुछ बच्चों का अक्षरारंभ करा कर पढ़ाते थे। वहाँ कुछ दिन भेज कर अक्षर ज्ञान कराने के बाद किसी स्कूल में भर्ती करना ठीक होगा—इस विचार से घूरन एक दिन उस अध्यापक के पास गया।

उनसे घूरन ने बातें कीं। अध्यापक ने पूछा, "तू उस सेठ के बाजू में रहने वाला भङ्गी है न?"

घूरन—जी।

अध्यापक—तुझे अपने लड़के को यहाँ दाखिल कराने की बात करने की कैसे हिम्मत हुई?

घूरन—नजदीक होने से।

अध्यापक—यहाँ नहीं हो सकता। यहाँ तेरा लड़का इन बच्चों के साथ कैसे बैठेगा? हिम्मत की भी कोई सीमा होती है।

घूरन ने वहाँ के सब बच्चों को देखा। बहुतों को वह पहचानने भी लगा था। वहाँ जितने बच्चे थे, हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण और अब्राह्मण सबों से उसके मोहन के चेहरे पर ज्यादा तेज और कुलीनता की झलक थी। लेकिन यह सब वह किससे कहे ?

घूरन ने फिर एक सरकारी स्कूल में मोहन का नाम लिखाने की कोशिश की। वह प्रधानाध्यापक से उनके घर जाकर मिला। दूसरे दिन जवाब देने का वचन देकर उन्होंने उसे भेज दिया। दूसरे दिन गया तो उन्होंने कहा कि नियमानुसार जितने विद्यार्थियों को भर्ती करना चाहिये था उतने से लड़कों की संख्या कुछ अधिक ही हो गई है। इसलिये उसके लड़के को वे नहीं ले सकते।

एक दूसरे स्कूल में गया तो भर्ती के लिये असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर की स्वीकृति जरूरी बतायी गई। कहीं और कोई दूसरा बहाना था। इस तरह घूरन परेशान हो गया। वह जानता था कि भङ्गी का लड़का होने से ही उसको भर्ती कराने में इतनी दिक्कत हो रही है।

एक दिन मोहन को अच्छे कपड़े पहना कर वह साथ लेकर स्कूल गया। सोचा कि प्रधान अध्यापक को दिखलाकर तो देखूँ। प्रधानाध्यापक को बच्चा पसन्द आया। देखने में वह एक अच्छे घराने के बच्चे जैसा ही दीखता था। फिर भी वह था एक भङ्गी का लड़का। किसी भङ्गी का लड़का कभी उधर भर्ती नहीं किया गया था। इस अलिखित नियम को कैसे तोड़ा जाय ?

घूरन ने सोचा कि शायद थोड़ा घूस देने से प्रधानाध्यापक सहमत हो जायँ। बच्चे को ज़रूर पढ़ाना है। इसलिये घूरन ओवरसियर साहब के पास गया। उन्होंने कहा कि २०) खर्च करो तो काम बन जायगा।

घूरन ने २०) देना मंजूर किया। एक हफ्ते के बाद ओवर-सियर ने घूरन को बताया कि प्रधानाध्यापक ने मोहन को इस शर्त पर भर्ती करना स्वीकार कर लिया है कि किसी दूसरे का नाम बच्चे के अभिभावक के नाम के तौर पर देना चाहिये। और प्रति-मास फीस के साथ उनको कम से कम २) नजराना मिलना चाहिये।

घूरन ने दोनों बातें मंजूर कर लीं। प्रेसिडेण्ट साहब के गाड़ी वाले के भानजे के तौर पर मोहन की भर्ती हुई। घूरन और खजनी के लिये वह एक विशेष आनन्द का दिन था। उस दिन से प्राण्ट स्कूल के उस गरीब प्रधानाध्यापक की आमदनी भी बढ़ गई।

स्कूल में मोहन के जैसा साफ सुथरा कोई दूसरा लड़का नहीं था। उसे कोई भङ्गी का लड़का नहीं कह सकता था। बेटे की पढ़ाई मां बाप के जीवन की एक मुख्य अभिलाषा थी। उसे स्कूल में भर्ती कराकर दोनों बहुत खुश हुए। लेकिन खजनी के दिल में साथ साथ डर भी पैदा हुआ कि यह पढ़ाई बीच में ही बन्द न हो जाय। धीरे धीरे घूरन के मन में भी इस डर ने घर कर लिया।

पति पत्नी दोनों ने आपस में चर्चा की। खजनी ने कहा कि "हम लोगों की सब इच्छाएँ पूर्ण होने की नहीं।" घूरन ने कहा, "तुम्हें मालूम है कि लोग क्यों हमारे बच्चे को भर्ती करने में हिचकते हैं ? इस डर से कि भङ्गी लिख पढ़कर निकलेगा तो भंगी का काम कौन करेगा ?"

खजनी ने कहा, "हाँ, भङ्गी और भिखमंगे पढ़ लिख नहीं सकते।"

४

वह भिखमंगा लड़का रोज मोहन की प्रतीक्षा में रास्ते पर खड़ा रहता। और उसके साथ स्कूल तक जाता। खजनी रोज़ बेटे

को दो पैसा दिया करती। उससे मूंगफली या चना खरीद कर दोनों खाते थे। वह लड़का शाम तक इधर उधर घूमकर जूठा, रूखा-सूखा खाकर पेट भरता और शाम को फिर स्कूल के फाटक पर पहुँच जाता और मोहन के साथ उसके घर तक आता। इस तरह मोहन के मां बाप के जाने बिना दोनों बच्चों में मैत्री बढ़ती गयी।

स्कूल से लौटने पर मोहन के दिमाग में मां को सुनाने के लिये बहुत-सी बातें होती थीं। उसके अध्यापक की धोती फटी पुरानी है, वे बहुत गुस्सालू हैं, सबों से रोज पूछते हैं कि हरेक ने क्या-क्या खाया? एक दिन एक लड़के ने उनसे भी पूछा, 'आपने क्या खाया है?' जवाब मिला कि उन्होंने कुछ नहीं खाया। मोहन ने मां से पूछा, "मां, गुरूजी ने क्यों खाना नहीं खाया?" खजनी क्या उत्तर देती?

मोहन के क्लास में दोपहर को भोजन के लिये घर नहीं जाने वाले बच्चे बहुत हैं। घर में कुछ नहीं मिलता। इसलिये वे नहीं जाते। सबेरे कुछ खाये बिना आनेवाले भी हैं। खुजलीवाले और फटे पुराने और गन्दे कपड़े पहनने वाले बच्चे भी हैं। इस तरह की बातें सुनाते सुनाते मोहन को एकाएक एक बात याद आ गयी। उसने कहा, "माई, मेरे पास बैठने वाला राम है न? उसकी देह से बड़ी दुर्गन्ध आती है। ओफ़, कैसी दुर्गन्ध! कल से मैं उसके पास नहीं बैठूंगा।"

खजनी ने पूछा, "अच्छा बेटा, आज तुमने क्या क्या सीखा है?"

मोहन—दो तीन अक्षर सीखे। दस तक गिनती सीखी। गुरूजी ठीक तरह कुछ सिखलाते नहीं। बहुत कमजोर हैं। बार बार ठण्डा पानी पीते हैं। बस, यही उनका काम है।

मोहन ने जो अक्षर सीखे थे लिखकर दिखलाये।

एक दिन की बात है। सबेरे मोहन ने स्कूल जाते समय खजनी को बहुत तंग किया। उसने सुगन्धित साबुन से नहलाने के लिये जिद्द की। और पिछले दिन पहना हुआ कुर्ता और पैंट पहनने से इन्कार कर दिया। गुस्से में आकर खजनी ने पूछा, "कल के कपड़े को क्या हो गया है?"

मोहन—सब बच्चे कहते हैं कि दुर्गन्ध आती है। नाक पकड़ कर सब मुझसे दूर भागते हैं।

खजनी समझ गयी कि वह शरारती बच्चों की करतूत है। गुरूजी ने इससे पहले एक दिन क्लास में कहा था कि मोहन की तरह सबों को साफ सुथरा होकर क्लास में आना चाहिये। इसी का वह बदला था।

खजनी ने बच्चे की इच्छानुसार किया। लेकिन उसको मालूम था कि बच्चों की शरारत इससे बन्द नहीं होगी। सजल आँखों से अपने बच्चे को उसने चूम लिया। और मन में कहा, "आह मेरे अभागे बेटे, यह लांछन तुम पर जन्म भर रहेगा।"

खजनी ने अपनी व्यथा पति से कह सुनायी। घूरन का भी दिल टूट गया। इस तरह न जाने कितने दुखद प्रसंग और सहने होंगे। खजनी ने निश्चित भाव से कहा, "भंगी का यह काम ही छोड़ दो न।"

घूरन—तब मकान और जमीन?

खजनी—उसके लिये कोई दूसरा काम कर सकते हैं।

घूरन—दूसरा काम? हां, कोई दूसरा काम कर सकते हैं।

खजनी—यहाँ से हम कहीं और चले जाँय जिससे हमारे बच्चे का इस तरह अपमान आगे न हो।

घूरन के मन में भी यह विचार कई बार आया था। प्रेसिडेण्ट

ने मकान और जमीन खरीदने के लिये एक अच्छी रकम सहायता के तौर पर देने का वचन दिया था। उसी विश्वास पर घूरन वहाँ काम करता आया। उसका विश्वास था कि वह रकम अब जल्दी ही मिल जायगी।

खजनी ने कहा, "हमें भंगी का काम छोड़ देना चाहिये। सहायता की रकम वे दें चाहे न दें। हमने जो जमा किया है वही लौटा दें तो काफी है।" घूरन कुछ नहीं बोला। सोचता रहा।

उस रात को घूरन को नींद नहीं आयी। अपने पिछले जीवन की बातें याद करते पड़ा रहा। वात्सल्यमूर्ति उसके पिता की मृत्यु और बाद की घटनायें याद करके उसकी आँखों से आँसू बरबस बहने लगे। जब कुत्तों ने गढ़े से उसका मृतशरीर बाहर निकाला था तब उसकी मदद के लिये सिर्फ महावीर था। आह! महावीर ने कितने दिन उसको खिलाया था। उन दिनों वह हमेशा हर बात में उसका ही पक्ष लेता था। आज वह और उसके बच्चे जिन्दा हैं या नहीं? ओह, एक परिवार का सत्यानाश हो गया। घूरन का कलेजा फटने लगा। कण्ठ सूख गया।............फिर दुखी के परिवार का दृश्य सामने आया। उसकी पत्नी का दीन-भाव से रोना-चिल्लाना, अस्पताल ले जाने के लिये उठाते समय बच्चों का रोना आदि सब बातें सिनेमा के चित्रों की भांति उसकी आँखों के सामने स्पष्ट दीखने लगीं। दो दो परिवार का उसी के कारण सर्वनाश हो गया। इन बातों की याद से घूरन मानों पश्चात्ताप की ज्वाला में तड़पने लगा।

घूरन को आश्चर्य हुआ कि उसने यह सब कैसे किया? कौन-सा भूत उस पर सवार था? उसको रोकने की खजनी ने चेष्टा की थी। जब वह दुखी की पत्नी को अस्पताल भेजने का इन्तजाम कर रहा था, और दया, सहानुभूति आदि गुणों से पैसे

को ही अधिक महत्व दे रहा था, तब खजनी ने उसे धिक्कारा था। मगर खजनी को उसने नासमझ और नादान समझ रखा था। लेकिन उसका कहा सब ठीक निकला। "मोहन भंगी का लड़का है।" हां, उसका कहना बिलकुल ठीक था। मोहन भंगी का लड़का है और हमेशा भंगी का लड़का ही रहेगा।

घूरन ने उठकर दिया जलाया। उस टिमटिमाती रोशनी में उसने देखा—मोहन सुख से सो रहा था। भंगी का लड़का मोहन!! वकील साहब की पत्नी का व्यंग उसके कानों में गूंज उठा। "हाँ,शायद मोहन नाम भंगी के लड़के के लायक नहीं है" उसने मन में कहा।

घूरन को अपने बाप के बीमार पड़ने का वह दिन याद आ गया। उसी दिन से बाल्टी और कुदाली हाथ में उठा ली और तभी से उसका भंगी का जीवन भी शुरू हुआ। यदि उसको यह काम करना नहीं पड़ता तो शायद आज मोहन को कोई भंगी का लड़का नहीं कहता। फिर भंगी का काम शुरू करने के बाद भी, ऊपर उठने की उसने जो कोशिश की, यह उसकी दूसरी भूल थी।

"अब आगे काम छोड़ देने पर बैठकर पिछले दिनों की कमाई खाने के सिवा और दूसरा चारा ही क्या है? लेकिन क्या प्रेसि-डेण्ट साहब उसको छोड़ेंगे? अपने साथियों का दमन करने के लिये यह उनका एक माध्यम जो है। हाँ, अपने साथियों का ··· ·········। खजनी ने ठीक ही कहा—तुम भी भंगी हो। दूसरे किसी भंगी के लड़के की ही तरह मोहन भी एक भंगी का लड़का है। मेरा यह सोचना कि वह दूसरों से ऊँचा है, अपने को धोखा देना है।"

तो भी वह आगे ही बढ़ने की कोशिश करेगा। उसका लड़का अमीर हो जायगा तो उसे कोई भंगी का लड़का नहीं कहेगा। वह कोशिश करके देखेगा कि उसके लड़के को भंगी की लड़की छोड़कर कोई दूसरी लड़की मिले।

५

उस दिन मोहन रोता हुआ घर आया। गुरुजी ने स्कूल में उसे पीटा था। गुरु जी बड़े गुस्सालू थे। वह फिर उनके क्लास में जाना नहीं चाहता।

जब उसका कपड़ा उतारा तो खजनी ने देखा कि उसकी पीठ पर छड़ी के तीन निशान थे। उसे बहुत दुख हुआ। घबड़ाकर उसने पूछा, "बेटा, तुझे क्यों मारा गुरुजी ने ?"

मोहन–'भंगी का लड़का जो ठहरा। इसकी समझ में कुछ नहीं आता' कहकर पीटा। गुरुजी पढ़ाते हैं तो सब समझ नहीं में आता।

ओह, कहीं ऐसा भी हो सकता है ? भंगी का लड़का ठीक तरह सिखाने से सीख क्यों नहीं सकता ? खजनी का विश्वास था कि उसका लड़का होशियार है। वह जो सीखता, रोज उसको सुनाता। शायद वह काफी नहीं हो। क्या करे ? भंगी के लड़के को यह सब सुनना पड़ेगा और मार भी खानी पड़ेगी।

मोहन ने आगे कहा, "मां, बापू से कहो न वह भंगी का काम न करें। कल से जाने से मना कर दो।

आह, मोहन भी भंगी के अपमान का अनुभव करने लगा।

मोहन—क्यों मां, कहोगी न ?

खजनी ने "हाँ" कर दिया।

मोहन—तब बापू साथ में खिलायेंगे और स्कूल में भी कोई मेरी हँसी नहीं उड़ायेगा।"

फिर थोड़ी देर में उसने पूछा, "भंगी का काम क्या होता है मां ?"

खजनी असमंजस में पड़ गयी। उत्तर दिया, "तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा बेटा।"

मोहन—तुम भी गुरुजी की तरह कहती हो मां !

खजनी को लगा कि लड़का बात किसी न किसी तरह जान ही लेगा। तब इसको घर में ही समझा देना अच्छा होगा। फिर भी उसको बतलाने में खजनी को एक तरह का डर-सा लगा। उसने लड़के को गले लगाकर माथा चूमते हुए कहा, "हम गरीब हैं बेटा, गरीब।"

मोहन—तो भंगी के माने गरीब होता है ?

खजनी ने "हाँ" कर दिया। उस दिन पति से उसने बेटे की सारी बातें सुनायीं।

खजनी—अब यह काम छोड़ ही देना चाहिये।

घूरन कुछ आशाजनक जवाब नहीं दे सका। उसने प्रेसिडेण्ट साहब से बातें की थीं। मकान और जमीन के बारे में भी कहा था। उन्होंने सब इन्तजाम कर देने का वचन दुहराया। जब घूरन ने कहा कि मुझे अपना पैसा मिल जाय तो काफी है। तब प्रेसिडेण्ट साहब ने उसे डांट बतायी।

खजनी ने कहा, शायद हमें अपने पैसे से हाथ धोना पड़ेगा।

घूरन—न, ऐसा नहीं होगा। अपना पैसा जरूर मिल जायगा।

खजनी—तब मांगने पर डाँट क्यों बतायी ?

घूरन—मैंने जरा जल्दबाजी की। इसीलिये झुंझला गये।

लेकिन खजनी को विश्वास नहीं हुआ कि पैसा मिल जायगा। उसके मन में डर बढ़ गया कि पैसा नहीं मिलेगा। उसने कहा, "जैसे भी हो, अब यह काम छोड़ देने की बात सोचनी होगी।"

घूरन—काम छोड़ देने पर प्रेसिडेण्ट साहब से पैसा वापिस पाना मुश्किल हो जायगा।

खजनी—तो क्या वे पैसा नहीं लौटायेंगे ?

घूरन ने गुस्से में आकर कहा—इसका यही मतलब है ?

घूरन ने एक दूसरा रास्ता सोचा। म्युनिसिपल आफिस की तरफ़ से श्मशान घाट में एक पहरेदार नियुक्त करने की बात उठी थी। कोशिश करने पर वह काम उसको मिल सकता है। खजनी ने कहा कि वह भी मिले तो काफी है।

दूसरे दिन मोहन यह शिकायत लेकर घर लौटा कि माँ ने उससे झूठ कहा। "क्यों माँ, कल तुमने कहा था न कि भंगी का माने गरीब है ? आज दोपहर को मैं जा रहा था तो गाड़ी ठेलता हुआ एक आदमी हमारे पास से गुजरा। दुर्गन्ध थी। नाक पकड़कर मैं भागा। तब एक लड़के ने मुझे बताया कि वह भंगी है। तो क्या बाबू जी इसी तरह गाड़ी ठेलते जाते हैं ?"

खजनी ने उसके सवाल के जवाब में निर्विकार भाव से कहा, "हाँ, बापू उसी तरह गाड़ी ठेलते जाते हैं।" खजनी को डर था कि लड़का बात समझेगा तो मुसीबत हो जायगी। लेकन मोहन ने भंगी का माने साफ समझ जाने पर भी कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दिखायी। उसने सिर्फ इतना ही कहा, "बेचारे बापू धूप में पसीना पसीना हो जाते होंगे।"

भाग ८

१

एक दिन सबेरे मुसाफिरखाने के पास एक चाय की दुकान के सामने सड़क के किनारे किसी भिखमंगे का मृत शरीर पड़ा पाया गया। उसमें हैजे के लक्षण थे। मृत शरीर पर मक्खियों की भरमार थी। दूकान वाले के लिये यह एक अत्यन्त अप्रिय बात थी।

उसने उसको वहाँ से हटवाने की सोची। लेकिन पान की दूकानवाले ने कहा, "उसको छुओ नहीं, नहीं तो उसकी मृत्यु की जवाबदेही तुम्हीं पर पड़ेगी। थाने में या म्युनिसिपल आफिस में जाकर खबर कर दो।"

पड़ोस के एक किरानी ने कहा कि "ऐसा करने से नुक्सान ही नुक्सान है। पुलिसवाले तो बिना तंग किये छोड़ेंगे ही नहीं। और म्युनिसिपैलिटी के ओवरसियर तो ऐसे मौकों पर अपनी मुट्ठी गरम करना हक ही समझते हैं। मुझे लगता है कि हमें इस में नहीं पड़ना चाहिये। लोग खुद आकर हटायेंगे।"

यह सुझाव सबों को पसन्द आया। चायवाले की दुकान में बिक्री बन्द नहीं हुई। उल्टे उसकी आय मुर्दे की वजह से उस दिन रोज से कुछ ज्यादा ही रही।

शाम को किरानी ने दुकानदार को समझा दिया, "सोहन, ख्याल रहे, कोई कुत्ता या सियार उसे काटे नोचे नहीं। शव पर यदि कोई घाव दिखाई पड़ेगा तो जोखिम की बात होगी।

बेचारा सोहन बत्ती जलाकर रात भर कुत्तों को भगाता रहा

मध्य रात्रि के समय पानी आया। सोहन जाकर दुकान के भीतर बैठ गया। मगर उसको डर लग रहा था। पानी पड़ने लगा तो उसे थोड़ी शान्ति मिली। सबेरे तक शव गल कर सड़ने लगा। लेकिन पानी पड़ने से उसके आसपास का मैला और उल्टी की गन्दगी सब धुल गई थी। सोहन की दुकान के सामने का हिस्सा साफ हो गया था। लेकिन मुर्दे की दुर्गन्ध बढ़ती ही गई और दोपहर तक असह्य हो गई।

अड़ोस-पड़ोस के लोग मिलकर उससे बचने के लिये कई तरह के उपाय सोचने लगे। उस दिन भी किसी अधिकारी के आने की कोई आशा नहीं दिखाई पड़ी। इधर दुर्गन्ध बढ़ती गई। किरानी से लोगों ने राय माँगी। उसने कहा कि आसपास रहने-वाले सब मिलकर अधिकारियों के पास एक दरखास्त भेजें।

किरानी दरखास्त का मजमून लिखने बैठा ही था कि इतने में सोहन की दुकान के लड़के ने आकर कहा कि म्युनिस्पैलिटी का आदमी आया है और सोहन को बुला रहा है।

तीन चार भंगी एक ठेला गाड़ी लेकर खड़े थे। साथ में ओवरसियर मियाँ हुसैनअली थे। वे बैठे बैठे कुछ लिख रहे थे। सोहन ने ओवरसियर साहब को झुक कर सलाम किया।

ओवरसियर—यह मरा आदमी कौन है?

सोहन ने घबड़ाकर जवाब दिया—"हुजूर, मुझे मालूम नहीं।"

ओवरसियर—यह कब मरा?

सोहन—कल सबेरे यहाँ मरा पड़ा देखा गया।

ओवरसियर—इस मुर्दे के यहाँ रहते कल चाय की दुकान तुमने कैसे चलाई?

इस सवाल का सोहन के पास कोई जवाब नहीं था। ओवर-

सियर ने डांटकर पूछा, "क्यों जी, बोलते क्यों नहीं?"

सोहन—हुजूर, माफ़ कीजिये। गलती हो गयी।

ओवरसियर ने सोहन को गौर से देखा। फिर कुछ लिखने लगा। तब तक किरानी उधर पहुँच गया। ओवरसियर के पास जाकर उनको अलग ले जाकर थोड़ी देर उनसे बातें कीं। सोहन ने भी पानवाले और दूसरे लोगों से कुछ विचार विनिमय किया।

किरानी ने कुछ नोट धीरे से ओवरसियर की जेब में डाल दिये। ओवसियर ने चायवाले से किरानी की ओर इशारा करके कहा, "इस बार इन्हीं की वजह से तुमको छोड़े देता हूँ।"

सोहन ने सलाम करके अपनी कृतज्ञता प्रकट की। भंगियों ने मुर्दा उठाकर ठेले पर रख दिया। ओवरसियर ने उन भंगियों को मुर्दा उठाने के उपलक्ष्य में कुछ देने की सलाह दी। सोहन ने मान लिया।

२

गोपालपुर में हैजे के कारण मरनेवालों की संख्या अनगिनत थी। खासकर भिखमंगों और गरीबों के बीच हैजे की महामारी अपना आतंक फैला रही थी। कौन, कब और कहाँ इसका शिकार बना, इसका कोई पता नहीं चलता था। नगर भर में मृत्यु और निराशा के काले बादल छा गये। सब लोग भयभीत हो त्राहि त्राहि करने लगे।

कोई भी सुरक्षित नहीं था। किसी को भी बचाव का मार्ग नहीं मालूम होता था। एक बार लोग फिर जाति और धर्म का भेद भुलाकर देवी देवताओं के मंदिर, मस्जिद और गिरजों में मनौतियाँ मनाने लगे।

लेकिन चाय पानी की आम दुकानें पहले की तरह निर्विघ्न

चलती रहीं, और सार्वजनिक पोखरे तालाब वगैरह का इस्तेमाल भी जारी रहा। फर्क इतना ही था कि आज जिन व्यक्तियों को स्वस्थ देखा वे दूसरे दिन देखने को नहीं मिले।

श्मशानघाट में शवों का ढेर लग गया। जब देखो जलती चिता का दृश्य और गाड़ने दफनाने की भीड़। कुछ दिन के बाद कुत्तों ने गाड़ा हुआ शव उखाड़ उखाड़ कर खाना भी शुरू कर दिया। रोज आठ दस मुर्दे इस तरह निकलने लगे। खबर फैली कि इनमें कुछ धनीमानी लोगों के भी शव थे। तब जाकर म्युनिसिपल अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। और श्मशान घाट के लिये एक पहरेदार को नियुक्त करने की जरूरत महसूस की। यह जरूरी हो गया कि मुर्दा गाड़ने के लिये गढ़े काफी गहरे खोदे जायँ और शव ठीक तरह गाड़े जायँ।

यह निश्चय घूरन के लिये फायदेमन्द सिद्ध हुआ। पहला पहरेदार यही नियुक्त किया गया। उसको एक खास पोशाक, काला कुर्ता और काला पैण्ट दिया गया और हाथ में एक लाठी दी गयी। श्मशानघाट के फाटक पर एक लंबे टीले पर उसके खड़े रहने की जगह निश्चित हुई। लाठी पर निशान लगे हुए थे जिस से गढ़े की गहराई नापी जा सके।

घूरन नये काम पर लग गया। उसने अपने बाप का, बड़े आग्रह से दिलाया काम छोड़ दिया। अब वह भंगी नहीं रहा। उसने सोचा कि उसका लड़का भी भंगी का लड़का नहीं कहलायेगा।

उस काली पोशाक में हाथ में लाठी लिये एक पहरेदार के फाटक पर खड़े होने से श्मशानघाट की भयंकरता मानों तीव्रतर हो उठी। इस नये काम पर वह अपना पूरा अधिकार समझने लगा। किसी को भी उधर मुर्दा गाड़ना या जलाना होता तो

उसकी इच्छा और निर्णय के मुताबिक ही वह वैसा कर सकता था। वही जगह बतलाता, वही गढ़ा नापता, तभी मुर्दा गाड़ा जा सकता था। मिट्टी पूरी पड़ी कि नहीं यह भी वह देखता था। जिनको मुर्दा जलाना होता, उनकी लकड़ी काफी है कि नहीं, यह निश्चय भी वही करता था। लकड़ी कम है—कहकर वह जलाना रोक भी सकता था।

लेकिन घूरन ने स्थिर चित्त से यह काम करने में अपने को असमर्थ पाया। बच्चे, युवक, बूढ़े, सब तरह के लोगों का दाह-कर्म उसने देखा। देखते देखते उसके मन में कितने ही तरह के विचार उत्पन्न होने लगे। ये नन्हें नन्हें बच्चे इतनी जल्दी मर जानेवाले थे तो इनका जन्म ही क्यों हुआ? युवक अपनी कितनी ही उमंगें अपूर्ण छोड़कर चल बसते हैं। और बूढ़े इतने बूढ़े होने तक क्यों जिन्दा रहते हैं? आदमी को कितने साल तक जिन्दा रहना चाहिये? चालीस, पचास या साठ साल तक? यदि पचास मान लिया जाय तो मेरे लिये कितने साल बाकी हैं? खजनी और मोहन कितने......।" इस तरह वह हिसाब लगाता रहता था।

कभी कभी रात के समय जब कोई नहीं रहता और जलती चिताओं की रोशनी फैलती तब घूरन के दिल में एक तरह का डर समा जाता। लेकिन हैजे के कारण रात को भी मुर्दे पहुँचाये जाते थे।

३

एक रात को बुद्धन का शव आया। दूसरे दिन सुखाड़ी और उसके दोनों बच्चों के। इस तरह भंगियों में मृत्यु की संख्या बढ़ती गयी। एक हफ्ते के अन्दर घूरन के परिचित कई लोगों

की लाशें वहाँ जलीं। नये घाससे जो भयावह अनुभव हो रहा था उससे घूरन का मन अधीर हो उठा। जीवन की अस्थिरता के विचार में वह सदा डूबा रहता। इस अनिश्चित व नश्वर जीवनधारा में उसकी खजनी और मोहन और वह खुद कब बह जायेंगे, कौन कह सकता है ? इस तरह की बातें सोचते घूरन को डर लगने लगा। मगर दूसरा उपाय ही क्या था ? उसे हर क्षण यही चिन्ता रहती कि न जाने घर में क्या बीतता होगा। प्रति क्षण कोई अवांछनीय खबर पाने की उसे आशंका बनी रहती।

उसने खजनी को अपना विचार सुनाया, "हम यहाँ इस भयंकर बीमारी से निकल कर कहीं भाग चलें। मकान और जमीन, सब का ख्याल छोड़ दें। खजनी, अब यह जगह रहने लायक नहीं है। हमारे जैसे लोग करीब सब खत्म हो गये।"

घूरन की घबड़ाहट ने खजनी को और व्याकुल बना दिया। इसके पहले ऐसी महामारी के अवसर पर घूरन बिलकुल निश्चिन्त और दृढ़ रहता था। लेकिन इस बार मानों उसको निश्चय हो चुका था कि उसका अन्त नजदीक है। खजनी घूरन की इस घबराहट का कारण नहीं समझ पायी। उसने घूरन को सान्त्वना देने की कोशिश की। कहा, "यह सब भाग्य का फल है। जो होना है, होकर ही रहेगा। भगवान की इच्छा के विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकता। डरने से कैसे काम चलेगा ?"

कहने को तो खजनी ने कह दिया। लेकिन उसका भी दिल धड़क रहा था। उसने आगे कहा, "हमारे लिये सिवाय भगवान का नाम लेने के और चारा ही क्या है ? आजकल प्रार्थना भी तो नहीं करते ?"

घूरन—मन नहीं लगता।

खजनी—भगवान का नाम श्मशान में भी लिया जा सकता है। प्रार्थना के लिये निश्चित स्थान की आवश्यकता नहीं है।

घूरन ने आगे ऐसा ही करने का निश्चय किया। अब तक वह अकेला ही चिन्ता में घुल रहा था। अब वह खजनी को भी समभागी बनाकर दिल का बोझ हल्का करना चाहता था। उसने कहा, "खजनी, हमें तो भगवान का ही भरोसा है। मगर मुझे डर लगता है कि कहीं...... ... .. ।" घूरन का गला रुंध गया। वह आगे बोल नहीं सका।

"खजनी, यदि मैं मर जाऊँ तो तुम दोनों का क्या होगा?"

खजनी ने अपने हाथ से पति का मुंह बन्द करते हुए कहा, "कैसी पागलपन की बात कर रहे हो? भगवान के लिये ऐसा न कहो।"

घूरन ने खजनी का हाथ हटाते हुए कहा, "पागलपन नहीं है। मेरी खजनी, सारे मुर्दे वहीं पहुँचते हैं। वे भूत प्रेत.......।" कहते कहते घूरन काँपने लगा। खजनी पति के कंधे पर हाथ रख कर मूकभाव से पति का मुँह निहारने लगी।

घूरन ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "मेरी अच्छी खजनी, कितने प्रेम से तुमने अब तक मेरी देखभाल की। आगे मोहन की देखभाल करती रहना।" मानो घूरन को विश्वास हो गया कि वह भी इस महामारी में चल बसेगा।

खजनी ने सिसकियाँ भरते हुए कहा—, "ऐसा नहीं होगा। भगवान को यह मंजूर नहीं होगा। पहले मैं मरूँगी। बेटे को ठीक तरह से पालना। मैं मर जाऊँ तो भी वह पलेगा। लेकिन बाप मर गया तो उसका क्या होगा?" घूरन का विचार दूसरी ओर गया। "हम दोनों मर गये तो बच्चे की देखभाल कौन करेगा?" उसकी आँखों के सामने नगर के अनाथ बच्चों की दयनीय दशा

का चित्र खिंच गया जिनमें दुःखी के बच्चे भी शामिल थे।

खजनी—भगवान को यह मंजूर नहीं हो सकता।

घूरन खजनी को छाती से लगाते हुए पागल की तरह कहने लगा, "हम जायेंगे खजनी, यहाँ से चले जायेंगे। अपना पैसा भी लेकर जायेंगे।"

लेकिन तुरन्त घूरन को याद आ गया कि उसने प्रेसिडेण्ट से अपना पैसा माँगा था, मगर जवाब मिला—"पैसा अभी पास में नहीं है।" "हमें पैसा भी नहीं चाहिए खजनी। चलो हम भाग जायँ यहाँ से। लेकिन जाने से फायदा? हम कैसे जीयेंगे? क्या करेंगे?"

पति की बातें सुनकर बेचारी खजनी का दिल टूक टूक हो रहा था।

४

खजनी ने बेटे को नहलाकर अच्छे कपड़े पहनाये। भगवान का ध्यान किया और उसे चूमकर स्कूल भेजा। आँख से ओझल होने तक फाटक पर खड़ी उसे देखती रही।

मोहन का साथी दौड़कर उससे आ मिला। मोहन के पास दो पैसे थे। उसका मित्र तीन पैसा कमाकर लाया था। दस पैसा वह और कमाना चाहता था। उसने कहा, "उस जमीनदार के यहाँ आज उत्सव का आखिरी दिन है। भोज, जुलूस, सब आज बड़ी धूमधाम से मनाया जायगा। आतिशबाजी भी खूब होगी। मैं अभी वहीं से आ रहा हूँ।" और उसने वहाँ की सजावट आदि के बारे में सुनाया। मोहन ने पूछा, "मुझे भी जरा दिखाओ न भई?"

ललित—हाँ हाँ, चलो, अभी दिखा देता हूँ।

मोहन—लेकिन मुझे तो स्कूल जाना है।

ललित—अरे स्कूल! न जाओ आज के लिये। तुम्हारी मां से कौन बताने जाता है? चलो, चलकर देखें तमाशा।

मोहन का मन चंचल हो उठा। वह स्कूल में आज तक गैर-हाजिर नहीं रहा था। लड़के ने फिर पूछा, "स्कूल में मास्टर पीटते हैं?"

मोहन—पीटते हैं। रोज पीटते हैं। वह मास्टर ऐसा ही है।

मोहन को तब याद आया कि गुरूजी ने घर पर लिखने का जो काम दिया था, उसे उसने किया ही नहीं। मोहन ने पूछा, "तब यह स्लेट और किताब कहाँ रखूँगा।"

मोहन के मित्र ने कहा, "उसका इन्तजाम मैं कर दूँगा।" दोनों साथ साथ चल पड़े। नये नये दृश्य देखते हुये मोहन उस लड़के के साथ जमीन्दार के घर पहुँचा। मोहन के लिये वह एक नयी दुनिया थी। दस हाथी एक साथ उसने पहले पहल देखे। वहाँ की सजावट और तैयारियाँ सब चित्ताकर्षक थीं। गुड़ियों का खेल, संगीत सभा, नाच, जादू का तमाशा, आदि मनोरंजन की अनेक चीजें उसको देखने को मिलीं। दोनों एक एक पैसा देकर झूले पर दो दो बार झूले। हाथ का सारा पैसा तमाशा देखने में खर्च हो गया। दोपहर हो गया। कुछ खाने के लिये क्या किया जाय? वह लड़का मोहन को एक पेड़ के नीचे बिठाकर पैसे का इन्तजाम करने गया। मोहन से कहा कि वहाँ से कहीं नहीं जाना। नहीं तो भीड़ में पता लगाना मुश्किल हो जायेगा।

मोहन को अकेले डर लगने लगा। कोई परिचित आदमी नहीं दिखायी पड़ता था। अपने मां बाप की याद आते ही वह रोने लगा। भूख भी बहुत लग रही थी। थोड़ी देर में थक कर वहीं सो गया।

उस लड़के ने मोहन को आकर जगाया और पूछा, "कुछ खाओगे न ?"

मोहन—हाँ ।

ललित—तब आओ । मैंने भोजन कर लिया है ।

उसने मोहन को एक होटल में ले जाकर खिलाया । मोहन को भोजन खूब पसन्द आया । उस लड़के ने होटलवाले को भोजन का पैसा अपने बटुए से निकाल कर दे दिया । उसके पास और भी पैसा था । उसको कहाँ से इतने पैसे मिले ? मोहन की समझ में नहीं आया । उसने मन में कहा—"मुझे भी इतने पैसे मिल जाते ।"

दोनों फिर तमाशा देखने और मूंगफली आदि खरीद कर खाने में मस्त हो गये । समय बीतता गया । मोहन अपने साथी के साथ सब कुछ भूलकर तमाशा देखने में तल्लीन हो गया ।

संध्या होते ही चारों ओर रोशनी की शोभा कितनी मनोहारी हो गयी ! आतिशबाजी शुरू हो गयी—मोहन चकित होकर सब देखने लगा ।

रात को फिर होटल में जाकर दोनों ने भोजन किया । चाय की दूकान में मिठाइयाँ खाकर चाय पी ली । लड़के ने मोहन को एक बलून और सीटी खरीद कर दी । घूमते घूमते जब थक गये तब दोनों एक जगह पर बैठकर बातों में लग गये और बातें करते करते वहीं पर सो गये ।

सवेरे मोहन जग गया । वह कहाँ सोया था ? और उसके मां बाप कहाँ हैं ?

कपड़े सारे गन्दे होने से डरते डरते मोहन ने घर के फाटक पर पहुँच कर भीतर झांका । उसका साथी थोड़ी दूर पर खड़े खड़े देखता रहा, यह जानने के लिये कि मोहन की मां उसे पीटती है या क्या करती है ? मोहन फाटक पर थोड़ी देर तक खड़ा रहा ।

बाहर कोई नहीं था। उसने सोचा कि मां रसोई घर में होगी। धड़कते दिल से लड़का थोड़ी देर खड़ा रहा। सामने एक बकरी घुसकर उसकी मां की पूजा का तुलसी का पौधा चर रही थी। मोहन ने बकरी को भगाया।

उसको लगा कि भीतर से किसी के खुर्राटे की आवाज़ आ रही है। उसकी माँ कल शायद उसको सब जगह घूम-घूम कर खोजती हुई देर से लौटी होगी। इसीलिये अब तक सो रही है। मोहन ने धीरे से रसोई घर में झाँककर देखा। वहां पर हाँडी बर्तन सब ऐसे ही पड़े थे। साफ तक नहीं किये गये थे। चूल्हे में कल आग भी नहीं जलायी गयी। मोहन ने घर में झांका। उसकी माँ उल्टी और पैखाने में चित्त पड़ी थी। उसका अन्तिम श्वास लेना मोहन को खुर्राटा जैसा सुनाई पड़ा था। दरवाजे पर एक मिनट खड़ा रहने के बाद वह भीतर घुसकर माँ को बुलाने लगा। माँ ने जवाब नहीं दिया। मोहन को उसके पास जाने में डर लगा। खजनी का शरीर सिकुड़ गया था। आँखें निकल आयी थीं। मोहन घबड़ा गया। उसको शक हुआ कि वह उसकी मां नहीं है। कोई भूत या प्रेत है।

मोहन का साथी भी वहाँ आ गया। उसने भी देखा। मोहन को खींचकर वह बाहर दौड़ गया। वह सब कुछ समझ गया। दोनों लड़के श्मशान की ओर दौड़े। वहाँ किसी नये आदमी को गढ्ढे की गहराई नापते देखा गढ़े के पास एक शव गाड़ने के लिये लपेट कर रखा था। उसका सिर और पैर बाहर दिखायी पड़ते थे। मोहन को मालूम हो गया कि वही उसका बाप है।

घूरन को भी श्मशान में कल ही हैजा शुरू हो गया था। सवेरे वह वहीं मरा पड़ा पाया गया।

❀ ❀ ❀

सड़क के किनारे या कहीं इधर उधर एक दूसरे से लिपट कर दोनों लड़के सोया करते हैं......।

कभी-कभी दूसरे लड़कों से मोहन झगड़ पड़ता था । लेकिन उसे दूसरों को मारना नहीं आता था। इसलिये हमेशा वही ज्यादा पिटता था। मोहन का जीवन इस तरह भिखमंगे बच्चों के साथ बीतने लगा। क्या उसके वात्सल्यमय माँ बाप की आत्मा उसके चारों ओर नहीं मंडराती होगी और उसको नीचे गिरते देखकर चीत्कार नहीं करती होगी !

उनकी आशायें कहाँ गयीं ? उसके लिये दोनों के जीवन भर के त्याग का क्या फल हुआ ? घर और जमीन खरीदने की उनकी अभिलाषा का क्या फल निकला ? धूरन ने मोहन के लिये प्रेसिडेण्ट साहब के पास जो रुपये जमा किये थे उनका क्या हुआ ?

महावीर और दुखी के भिखमंगे बच्चों के बीच मोहन ने इस छोटी अवस्था में ही प्रवेश किया और होटलों के सामने जूठन के डब्बों से अपना पेट भरना भी शुरू किया।

भाग ६

१

खजनी और घूरन का संघर्ष, समाज के साथ भंगी समूह का संघर्ष था। इनके पहले भी कितने ही भंगियों का जीवन सामाजिक अन्याय और निष्ठुरता की आग में आहुति बन चुका था।

घूरन ने चाहा कि उसका लड़का भंगी न बने। उसको नाम भी दिया दूसरे वर्ग का। भंगी कौन है, उसका काम क्या है, यह बिना जाने ही उसका लड़का पला। एक बार बच्चा पैखाना करके उसमें थोड़ी देर पड़ा था। इसके लिये घूरन पत्नी पर नाराज हो गया था। लेकिन आज वही मोहन नगर का भंगी है। जब अधिकारियों को यह मालूम हुआ कि उसका नाम मोहन है तो वे भौंह चढ़ाकर कहने लगे, "हूँ, भंगी भी ऐसे नाम रखने लगे हैं।" महावीर का लड़का और दुखी का लड़का दोनों मोहन के साथी भंगी थे। तीनों एक साथ मैत्री भाव से काम करते थे। उन्होंने अपने पिताओं की तरह वही काम करना शुरू किया। फरक इतना ही था कि आज भंगी को अपने वेतन का ज्ञान है। हिसाब करके कौड़ी २ का हिसाब लेना वह सीख गया है। तनख्वाह बढ़ाने के लिये मांग पेश करने का साहस भी उसमें पैदा हो गया है।

अब भंगियों का एक सुसंगठित संघ है। इस संघ ने काफी काम किया। लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

मोहन की शादी नहीं हुई है। उसके मित्रों ने भी शादी नहीं की है। शादी के सम्बन्ध में इन लोगों ने सोचा ही नहीं, सो बात नहीं। वे भी अनेक बार शादी के बारे में चर्चा कर चुके हैं।

मोहन को यह डर नहीं है कि उसके बच्चे होंगे तो भंगी हो जायेंगे। वह समझ गया है कि भंगियों को बनाने वाले भंगी नहीं होते। भंगी तो समाज में हमेशा रहेंगे ही। पिता के न चाहने पर भी उसका लड़का भंगी बन सकता है।

साधारण रूप से भंगियों के बारे में शिकायत उठी कि भंगी ढीठ बन गये हैं। यदि कोई भंगी किसी से किसी बात का प्रमाण मांगे तो ढिठाई मानी जाती थी।

अब भंगी समय पर अपना काम करते हैं, ठीक तरह से करते हैं, लेकिन शाम को उनको देखते ही बनता है। सब अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर बीड़ी-सिगरेट पीते हुये पार्क में घूमने जाते हैं। अब उनमें वह दब्बूपन न रहा।

भंगी आज कुछ सीख गया है। वह यह समझने लगा है कि वह भी आदमी है। उसमें भी सोचने और समझने की शक्ति है।

"श्रमजीवीसंघ" ने म्युनिस्पल आफिस और सरकार के पास नगर पालिका संविधान का ढाँचा बनाकर भेजा जिसमें संघ की तरफ से अनेक सुधार प्रस्तावित किये गये थे।

सरकार ने म्युनिस्पैलिटी द्वारा संघ को चेतावनी दी कि संघ को इस विषय में कुछ कहने का कोई अधिकार नहीं है। यह एक राष्ट्रीय सवाल है और संघ का काम सिर्फ कर्मचारियों की भलाई की बातें करना है।

उस दिन मोहन ने अपने मित्रों से कहा, "हमको म्युनिस्पैलिटी से नहीं लड़ना है। वास्तव में श्रमजीवियों के शत्रु पूंजीपति नहीं, पर पूंजीपतियों की सरकार है। इसलिये हमें लड़ना होगा सरकार से।"

२

धनी मानी लोगों के बच्चों की भाँति भंगी का लड़का भी आप बीती याद रख सकता है। शायद बड़े लोगों के बच्चों को केवल मां बाप का लाड़ प्यार ही याद रहता है क्योंकि उनके पालन-पोषण में ज्यादातर दाइयों का हाथ होता है। लेकिन उसमें, जिस के लिये उसके मां बाप ने अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर दिया हो, अपने मां बाप की लुप्त वेदनाओं और अपूर्ण अभिलाषाओं की जबर्दस्त प्रतिक्रिया होती है। और जब उस प्रकार की असंख्य प्रतिक्रियाओं का सम्मिश्रण होता है, तब वे समाज की कुव्यवस्था को उलट देने वाली क्रांति का रूप धारण कर लेती हैं।

महावीर के लड़के को, जिस दिन से उसने भंगी का काम करना शुरू किया, एक नाम दिया गया। उसको अपना कोई नाम तो याद था नहीं। दुखी के लड़के को अपनी बीमार मां का वह आर्तनाद और अपने परिवार का वह करुण दृश्य अच्छी तरह याद है। उसके भाई बहन थे। लेकिन एक दिन सवेरे उसने देखा कि वह अकेला रह गया है। भाई बहन सब कहाँ गये ? उसको पता नहीं चला।

मोहन भी बाल्य काल की बहुत-सी बातें अक्सर याद करता था। वे स्मृतियाँ उस को उत्तेजित किया करतीं थीं। उसके मां बाप उस नगर के पाप के भार के नीचे दब कर मर गये, यह उसको मालूम था। उसको यह भी याद था कि वे उसे कुछ बनाना चाहते थे ? उन्होंने उसे स्कूल भी भेजा। भले ही उसके बाप ने उसे गोद में नहीं उठाया या चुम्बन नहीं किया, लेकिन उसके अन्तर में जो अतिशय प्यार भरा था उनके बारे में मोहन को ज़रा भी संदेह न था। बाप और मां दोनों ने उसके लिये कितना

त्याग किया, कैसे भगवान से उसके लिये प्रार्थनायें कीं, ये सब बातें उसको याद थीं। दोनों को अपने पैसे का हिसाब जोड़ते उसने सुना था। उसके बाप का रुपया आज भी प्रेसिडेण्ट साहब के पास है।

प्रेसिडेण्ट आज एक करोड़पति माने जाते हैं। नगर की प्रधान कोठियां उन्हीं की हैं। मोहन महसूस करने लगा कि इस सम्पत्ति में उसका भी हक है। उसके बाप की गाढ़ी कमाई उसमें मिली हुई है।

कभी-कभी वह प्रेसिडेण्ट साहब को मोटर में जाते देखा करता है। कई बार उसके मन में आया कि जाकर उनसे अपने बाप का जमा किया हुआ रुपया मांगे। मगर उन्हें क्या अब घूरन की याद भी होगी! कितने घूरनों को उन्होंने मार डाला है और कितने हाय, हाय करके मर गये।

मोहन की चिन्ता धीरे-धीरे एक आकार धारण करने लगी। उसके मन में आसमान तक लपटें फैलाने वाली अग्निज्वाला और रक्त की धारा की कल्पना उठती। लेकिन वह कल्पना क्यों उठ रही थी, समझने में वह अशक्त था।

प्रेसिडेण्ट साहब की एक नई कोठी बनकर तैयार हो गयी है। इतना बड़ा मकान नगर में और कोई दूसरा नहीं है। मोहन ने अपने साथियों के साथ बाहर खड़े खड़े उसे देखा।

उस दिन आधी रात तक मोहन को बहुत देर तक नींद नहीं आई। उसने स्वप्न में देखा कि उस नयी कोठी में आग लग गयी है और लपटें आकाश को चूम रही हैं।

❀ ❀ ❀

उसको लगने लगा कि कोई शक्ति उसे प्रेरित कर रही है कि उस कोठी को जला कर खाक कर दो। वह कोठी अन्याय और

पाप का प्रतीक है।

मोहन के मित्रों को जब उसकी प्रतिक्रिया मालूम हुई तो वे घबड़ाये। उन्होंने उसे समझाने की कोशिश की कि उसका विचार गलत है। इस तरह के काम से दलितोद्धार का उनका आन्दोलन नष्ट हो जायगा। मोहन ने उनकी बातें सुनकर कहा, "मेरे बाप ने म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट के पास कितना रुपया जमा किया था। यह मैं जानता हूँ। मगर मेरे बाप का पैसा उनसे हजम नहीं हो सकता।"

महावीर के लड़के ने कहा, "उन्होंने सिर्फ तुम्हारे बाप का ही पैसा हजम नहीं किया है। कितने हो भंगियों का धन उन पर स्वाह हो चुका है। आज उन भंगियो की संतान मिल कर हिसाब मांग रही है।"

मोहन—नहीं, मेरे जीते जी प्रेसिडेण्ट साहब उस कोठी का सुख नहीं भोग सकते। उसे नष्ट कर देना ही सब तरह से योग्य है।

महावीर का लड़का—मेरे भाई, तुम्हें तो इससे भी महान काम करना है। तुमने ही तो उस दिन कहा था कि पूंजीपतियों से क्या लड़ना है। वास्तव में हमारा शत्रु तो पूँजीपतियों की सरकार है। प्रेसिडेण्ट साहब से बदला लेने के आवेश में आज आपने असली काम को क्यों भुला रहे हो?"

मोहन—मेरे स्वप्न का अवश्य साक्षात्कार होना चाहिये। जब मैं उस कोठी से अग्नि की गगन चुम्बी ज्वाला को उठते देखूंगा तभी मुझे शान्ति मिलेगी। मेरे बाप और मेरे वर्ग के साथ किये गये अन्याय का मैं अवश्य बदला लूँगा।

महावीर का लड़का—मोहन, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो। तुमने दलित वर्ग के उद्धार का बीड़ा उठाया

है। म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट की कोठी को जलाकर खाक कर देने से वह पूरा नहीं होगा। बदला तो लेना ही है। लेकिन कायरों की तरह बदला लेने का विचार छोड़ दो। आवेश में आकर ऐन मौके पर अपने समाज को धोखा न दो। मेरे प्यारे भाई, अपने कर्तव्य को समझो और हमारा नेतृत्व करो।

३

सारे नगर में अन्धकार छा गया। क्या होने वाला है किसी को कुछ पता नहीं है। ज्वालामुखी पर्वत अपने भीतर ही भीतर अपने ढंग से सुलगता रहता है। कब उसका विस्फोट होगा, कौन कह सकता है?

चारों ओर जो गरीबी और भुखमरी है उससे कोई डरता है? ये अधमरे आदमी समाज के विरुद्ध क्या कर सकते हैं? क्या खेतों में, धूप और पानी में खड़े-खड़े काम करने वाले गरीबों ने आज तक समाज के विरुद्ध लड़ाई की है?...फिर भी आज डरने का समय आ गया है। उन व्यक्तियों से नहीं, लेकिन उनके विचार समूह से जो दिन प्रतिदिन प्रबल होते जा रहे हैं।

क्या डर का कोई कारण नहीं है? इन अभागों के प्रति की गयी अनीतियों का ख्याल उनके हृदय की गहराई में विस्फोट पैदा नहीं करेगा?

जहाँ देखो, वहीं श्रमजीवियों की हड़ताल की चर्चा छिड़ी हुई है। शान्ति के लिये नगर में सेना का शासन शुरू हो गया है। सारा नगर आंतकित रहता है। सड़कें निर्जीव-सी दीखती हैं।

❀ ❀ ❀

इस सन्नाटे में एक दिन बीता। निःशब्दता के भीतर एक

तूफान का बीज पड़ा रहा। दूसरे दिन खबर फैली कि श्रमजीवियों की तरफ से भुखमरी के खिलाफ एक बड़ा प्रदर्शन होने वाला है। सिर्फ नगर में ही नहीं, आस पास के गांवों में भी।

कोई भी प्रदर्शन नगर की शाँति के विरुद्ध है, और उसे रोका जायगा—यह सूचना नगर के अधिकारियों की तरफ से लोगों को दी गयी। लेकिन इस सूचना ने आग में घी डालने का काम किया। श्रमजीवियों की शक्ति को उससे उत्तेजना मिली।

जिसकी आशंका थी, वही हुआ। हजारों की संख्या में लोगों ने इधर उधर जुलूस निकाले। लेकिन ये प्रदर्शन हिंसात्मक नहीं थे। जिन्दगी भर दुख ही दुख झेलते आये हुए अर्धनग्न और अधमरे जनों की जागृति से सिर्फ उसी शहर में नहीं, सारे देश में घबराहट पैदा हो गई। प्रदर्शन में सिर्फ श्रमजीवी ही नहीं, वरन् भिखमंगे, कोढ़ी और रोगी—सब शामिल थे। इतनी बड़ी संख्या में हक मांगने वालों का प्रदर्शन एक विशेष घटना थी। सुख सम्पत्ति में डूबे रहने वाले समाज ने अभी तक इन अभागों की दयनीय स्थिति पर कभी सोचा ही नहीं था। लेकिन आज जब ये इकट्ठे होकर अपना हक मांगते हुए सामने खड़े हैं तब इन अधमरों का चेहरा देखने से भी एक प्रकार का भय सबों के मन को डांवांडोल कर रहा है। असन्तोष और प्रतीकार की ऐसी ताकत इनमें न मालूम कहाँ छिपी बैठी थी?

पुलिस ने जुलूस को रोकना चाहा। लेकिन लाठियों और बन्दूक की गोलियों का प्रहार जुलूस वालों की पंक्ति का भंग नहीं कर सका।

❀ ❀ ❀

इस तरह जुलूस का प्रदर्शन और गोली चलाने का कार्यक्रम तीन दिन तक लगातार चलता रहा। जुलूस की तरफ से कहीं कुछ
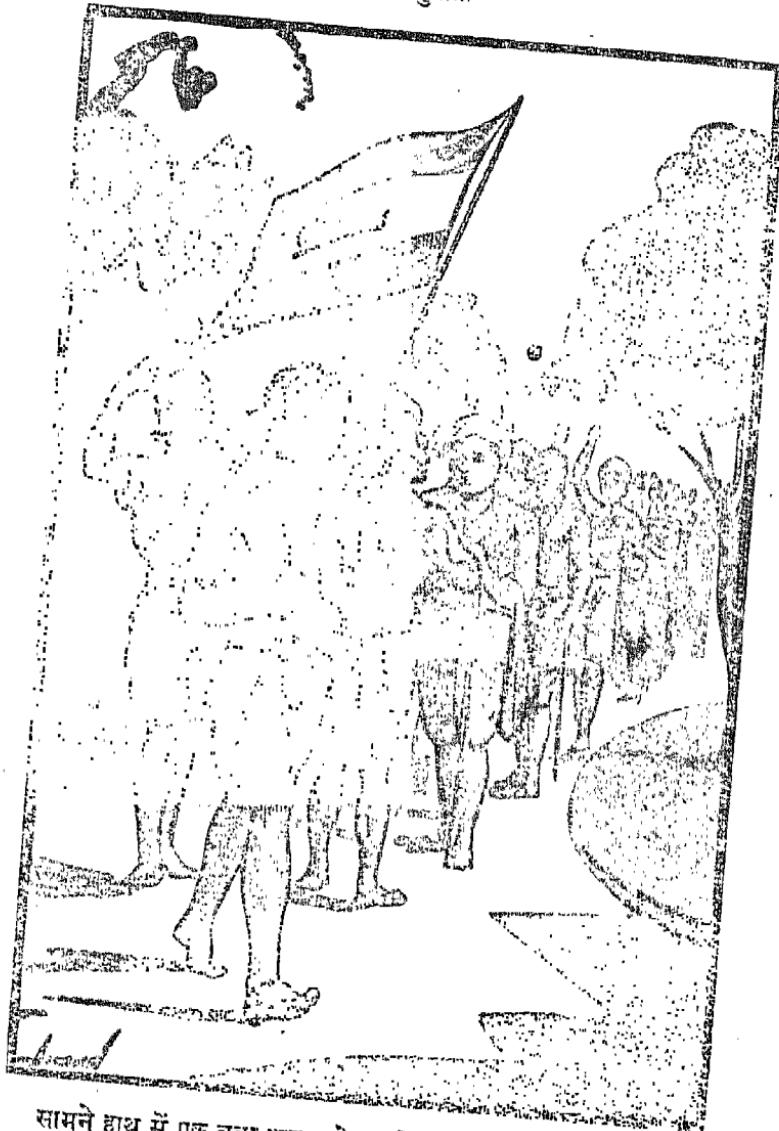
सामने हाथ में एक बड़ा झण्डा लेकर मोहन खड़ा है। पृष्ठ १३५

हिंसात्मक घटना तो नहीं घटी । लेकिन दलितों की उठी हुई आवाज बुलन्द होती गयी और सब जगह एक तरह का आतंक छा गया ।

तीसरे दिन के जुलूस का नेता मोहन था । दो कतार में लोग जुलूस में जमा हो गये थे । सामने हाथ में एक बड़ा झंडा लेकर मोहन खड़ा है ।

"इन्किलाब जिन्दाबाद" के नारे का गगन भेदी स्वर गूंजने लगा । महावीर और दुखी के लड़के—दोनों ने एक लाल माला मोहन को पहनायी । जिन्दाबाद का नारा तीन बार दुहराने के बाद कायदे से वह जुलूस आगे बढ़ा ।

मोहन का झण्डा ऊँचा फहराता रहा । यह निःशस्त्र सेना अपने आत्मबल के आधार पर एक भंगी के लड़के के नेतृत्व में आगे बढ़ती गयी । मोहन का चेहरा एक गांभीर्य और दृढ़ संकल्प से दमक रहा था ।

नगर के दूसरे हिस्से में पहुँचते पहुँचते जुलूसवालों की संख्या घट कर एक चौथाई रह गयी । उनके साथी तीन जगह पर गोली के शिकार होकर गिर पड़े । फिर भी जुलूस नहीं रुका । आगे बढ़ता ही गया जब तक कि अपने लक्ष्य-स्थान तक नहीं पहुँचा ।

नगर से दूर एक मैदान में मिट्टी का ढेर दिखाई पड़ता था । दिन प्रतिदिन वह नीचे बैठता जाता था । कुछ साल के बाद सब मिट्टी जब ढह गयी तो नीचे अगणित मुर्दों के अस्थिपंजर दिखायी पड़े । एक अस्थिपंजर के गले में कोई धागा भी नजर आया ।

कहा जाता है कि उस मैदान में आज भी प्रेतों का नाच